'जायसवाल जागृति'

संरक्षक

स्व० हरिश्चन्द्र जायसवाल, दिल्ली
श्री जवाहर लाल जायसवाल, पूर्व सांसद
श्री अजय कुमार जायसवाल, नयी दिल्ली
श्री पी. जायसवाल, नई दिल्ली
श्री रामप्यारे गुप्त, नई दिल्ली
श्री दयाशंकर जायसवाल, नई दिल्ली
श्री लोटन प्रसाद जायसवाल, नई दिल्ली
श्री हरिश्चन्द जायसवाल, बाली नगर, दिल्ली
श्री ओम प्रकाश आर्य, नई दिल्ली
स्व. एस.पी गुप्त, नई दिल्ली
श्री त्रियुगी नारायण गुप्त, नोएडा
श्री जगराम जायसवाल, दिल्ली
स्व. रामेश्वर दयाल कर्णवाल, नजीबाबाद
श्री भोला प्रसाद जायसवाल, नई दिल्ली
श्री पन्नालाल जायसवाल, अहमदाबाद
श्री सुधीर कुमार 'मनहर' जायसवाल, दिल्ली
श्री जयनारायण चौकसे, श्यामला हिल्स, भोपाल
स्व. बी.डी. दखने, उद्योगपति, नागपुर
श्री आनन्द कुमार भमोरे, अमरावती (महाराष्ट्र)
श्री सत्यनारायण जायसवाल (सरपंच), नवाबगंज
श्री छोटेलाल गुप्त जायसवाल, दिल्ली
श्री शंकरलाल जायसवाल, दिल्ली
डा. सत्यप्रकाश जायसवाल, दिल्ली
श्री विजय वालिया, (फरीदाबाद)
स्व. कुंदनलाल जायसवाल, गोरखपुर
श्री ललित जायसवाल, गाजियाबाद
श्री प्रकाश चौधरी, बड़ी सादड़ी, (चित्तोड़गढ़)
श्री राधेश्याम जायसवाल, गाजियाबाद
स्व. गोवर्धनलाल जायसवाल, शामगढ़ (म.प्र.)
श्री रमेश जायसवाल, दिल्ली
श्री मेघराज प्रसाद, दिल्ली
श्री माखन चौधरी, (नोएडा)
श्री सुरेन्द्र कुमार किशनलाल जायसवाल (नांदेड़)
श्री संजीव कुमार चौधरी, दिल्ली
श्री स्वामीनाथ जायसवाल (छत्तीसगढ़)
श्री राजीव कुमार जायसवाल (कटिहार, बिहार)
स्व. बद्रीप्रसाद जायसवाल, (गोरखपुर)
श्री अनिल कुमार जायसवाल (गुड़गांव)
श्री प्रदीप कुमार जायसवाल (द्वारिका, दिल्ली)
श्री मुकेश रंजन जायसवाल (साहिबाबाद)
श्री किशोर जायसवाल (दिल्ली)
डॉ. अरुण कुमार गुप्ता (बंगलौर)
NRI श्रीमती आभा गुप्ता एवं श्री नितिन जी (अमेरिका)
श्री अशोक चौधरी, संचालक, जनकल्याण एवं President, INTUC
श्री विश्वमोहन प्रसाद (GM, NTPC, नोएडा)
श्री मदन भाई जायसवाल (अहमदाबाद)
श्री संजय जायसवाल (अहमदाबाद)

(शेष पृष्ठ 4 पर)

मूल्य 5 रु० प्रति

'जायसवाल जागृति'

(अखिल भारतीय संस्था के रूप में पंजीकृत सामाजिक संस्था 'जायसवाल जागृति', का सर्वाधिक लोकप्रिय त्रैमासिक मुख-पत्र)

वर्ष : 28 बैशाख श्रावण 2079 अप्रैल-जून, 2022 **अंक: 2**

अनुक्रमणिका

1. प्रधान सम्पादक की लेखनी से जय बाबा श्री काशी विश्वनाथ जी -नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल 4-5
2. विश्वेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग और उनकी महिमा के प्रसङ्ग में पञ्चक्रोशी की महत्ता का प्रतिपादन 6
3. वाराणसी तथा विश्वेश्वर माहात्म्य 7-8
4. अपने समाज की वर्तमान स्थिति पर एक विहंगम दृष्टि सत्येदव 8
5. भगवान् शिव को संतुष्ट करनेवाले व्रतों का वर्णन, शिवरात्रि-व्रत की विधि एवं महिमा का कथन 9-11
6. शिवरात्रि-व्रत के उद्यापन की विधि 12-15
7. पौराणिक मान्यताएं 16-17
8. मां गंगा देख रही है बाबा विश्वनाथ का वैभव 17-19
9. काशी विश्वनाथ धाम की भव्यता से हर कोई निहाल सुरेश गांधी 20-22
10. समाज की तरक्की के लिए सभी वर्ग आगे आएं- उपमुख्यमंत्री तारकेश्वर प्रसाद 22-23
11. डॉ. अशोक चौधरी, अध्यक्ष, जायसवाल जागृति, परिचय 23
12. आँचल में दूधवाली की आँखों में पानी रोकने का प्रयास करें मीनू गुप्ता जायसवाल 24
13. मोहनलाल गुप्त उर्फ भैयाजी हास्य रस को लोकप्रिय बनाने में बनारसी का योगदान पूरन चन्द्र झरीवाल 25-28
14. नव संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा- प्रकृति के उल्लास का पर्व 28
15. Symbols in Hinduism 29-30
16. कलचुरि वंश की पौराणिक पृष्ठभूमि – अध्याय एक 31-33
17. संत हरिदास वृंदावन 34-38
18. जायसवाल जागृति की नव निर्वाचित कार्यकारिणी 39
19. जायसवाल जागृति, आजीवन सदस्यता आवेदन पत्र 40
20. कुर्यात् सदा मंगलम् (वैवाहिकी) 41-49
21. (1) व्यवस्था मंडल (2) महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ 50

सम्पादक-मंडल

मार्गदर्शन व आशीर्वाद: पन्नालाल जायसवाल
प्रधान सम्पादक: नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल
कार्यकारी संपादक: मीनू गुप्ता जायसवाल
सम्पादक मण्डल: के.के. भगत, वैवाहिकी प्रभारी,
बृजमोहन जायसवाल, पत्रिका प्रेषण विज्ञापन व समन्वय प्रभारी
राधेश्याम बन्धु साहित्य प्रभारी
जुगल किशोर गुप्ता, समन्वय सहप्रभारी

पंजिकृत कार्यालय
19-C, MIG, DDA FLATS, GULABI BAGH
NEW DELHI-110007 दूरभाष 011-41687467
(M 9818426123)

पत्रिका में प्रकाशित किसी लेख/रचना का उत्तरदायित्व स्वयं लेखक/रचनाकार का है, सम्पादक-मंडल अथवा प्रकाशक का नहीं।

श्री कमल नारायण - सरलादेवी जायसवाल (इंदौर)
Dr. A.K. Jaiswal (AIIMS, Delhi)
श्री दीपक जायसवाल (नागपुर-महाराष्ट्र)
श्री हुकुमचंद गिरधारीलाल जायसवाल (इंदौर)
श्री ब्रजेश कुमार (एडवोकेट, दिल्ली)
श्री अनिल कुमार जायसवाल (वरिष्ठ एडवोकेट, पटना)
श्री राजीव रंजन राजेश (एडवोकेट, दिल्ली)
श्रीमती सरला गुप्ता अ.भा.जा. सर्व. महिला अध्यक्ष
श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता (अध्यक्ष, नेपाल कलवार कल्याण महासंघ)
श्री सुरेश प्रसाद चौधरी (गाजियाबाद)
श्रीमती सुनीता अखिलेश सुवालका (उदयपुर)
श्री नवीन प्रकाश जायसवाल (अलवर)
श्री सुनील कुमार जायसवाल (सांवेर रोड, इन्दौर)
श्री राकेश रमन जायसवाल (फरीदाबाद)
श्री विजय कुमार जायसवाल (इलाहाबाद)
डा. एन. शिवासुबहनण्यन (तमिलनाडु)
श्रीमती रीता जायसवाल (वाराणसी)
न्यायाधीश डॉ. संतोष कुमार जायसवाल (मुंबई)
डॉ. अनिल कुमार जायसवाल (फरीदाबाद)
श्री विजयपाल सिंह अहलूवालिया (सफीदों-हरियाणा)
श्री राजकुमार गुप्त (लखनऊ)
श्री मोहन सिंह अहलूवालिया (ग्वाला गद्दी, खेड़ी, रायपुररानी, पंचकुला)
श्री रमेश कुमार अहलूवालिया (रिवजराबाद, यमुनानगर, हरियाणा)
श्री अमृत गुप्ता पुत्र श्रीमती मंजू गुप्ता (दिल्ली)
श्री सत्य देव गुप्त,(जायसवाल) पटना
श्री के.डी. चौधरी (दिल्ली)
श्री नन्द लाल गुप्ता (दिल्ली)
श्री पन्नालाल जायसवाल, दिल्ली
स्व. राजाराम जायसवाल, दिल्ली
श्री शिवकशोर जायसवाल, दिल्ली
श्री मनोज कुमार शाह, फरीदाबाद
श्री अशोक जायसवाल, कौशांबी
श्री कृष्ण कुमार भगत, वैशाली

अधिष्ठाता

स्व श्री मोतीलाल जायसवाल, नई दिल्ली
श्री विक्रमजीत सिंह, अहलूवालिया, नई दिल्ली
सरदार अजीत सिंह, अहलूवालिया
स्व. रमाकांत जायसवाल, मुम्बई
स्व.हंसराज जायसवाल, दिल्ली
श्रीमती कविता जायसवाल, नोएडा
श्री गुलाब सिंह एवं श्री अरुण कुमार जायसवाल, दिल्ली
श्री शिवनाथ गुप्ता, दिल्ली
श्री दीपनारायण जायसवाल, लखनऊ
स्व. जवाहर लाल जायसवाल, नई दिल्ली
(स्वामी हरिहरानंद) श्री हरिश्चंद्र धनेटवाल

संपादकीय

॥ श्री काशी विश्वनाथो विजयते ॥

गंगा तरंग-रमणीय-जटाकलापं गौरीनिरन्तर-विभूषित वामभागम्।
नारायण-प्रियमनंग-मदापहारं वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥
वाचामगोचरमनेकगुणस्वरूपं वागीशविष्णु-सुरसेवित-पादपीठम्।
वामेनविग्रहवरेण कलत्रवन्तं वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥

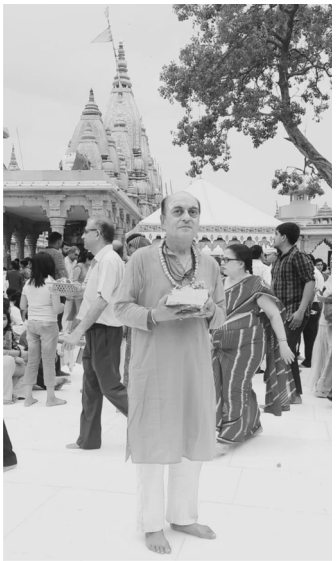

आज कल सबसे अधिक कोई विषय चर्चा में है तो वह है बाबा काशी विश्वनाथ मन्दिर के प्रांगण में अवैधरूप से हमारी संस्कृति एवं सभ्यता को चुनौती देता ज्ञानवापि मस्जिद। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि ज्ञान-वापि दो शब्दो से बना संयुक्त शब्द ज्ञान की नदी (जल) फिर कहां से "मस्जिद" बन गया। यह अत्यन्त चिन्ता व विचारणीय ज्वलन्त विषय है। चलिए इस विषय पर थोड़ा प्रकाश डालते है, विचारों को साझा करते हैं। औरंगजेब मुस्लिम शासक ने वर्ष 1669 में काशी के पवित्र विश्वनाथ मन्दिर को तोड़कर मस्जिद निर्माण करने का फरमान निम्नानुसार जारी किया। राजस्थान के पुरातत्व विभाग के संग्रहालय में उपलब्ध की छाया चित्र से पूर्णतः स्पष्ट है। जैसा कि इतिहास गवाह है कि औरंगजेब एक आक्रान्ता,

काशी विश्वनाथ मंदिर को तोड़कर वहां मस्जिद बनाने का औरंगजेब का फरमान - अगस्त 1669.

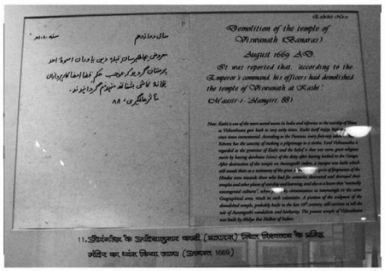
Demolition of the temple of Viswanath (Benaras)
August 1669 AD
(It was reported that, according to the Emperor's command, his officer had demolished the temple of Viswanath at Benaras.)
(Maasir-i-Alamgiri, 88)

संदर्भ - Rajasthan State Archives, Bikaner.

निरकुंश व क्रुर शासक था तथा उसका एक ही उद्देश्य था कि हिन्दुओं का जबरन-धर्म परिवर्तन किया जाये एवं हिन्दुओं के धार्मिक स्थल को तोड़कर मस्जिद बनाई जाये। औरंगजेब ने ज्ञानवापि मस्जिद के निर्माण में तीन दिवारे सामान्य तथा एक दिवार जो कि मन्दिर के देवी-देवताओं की आकृतियों से भरी थी जिसमें श्रृंगार गौरी सम्मिलित हैं को वैसे ही रखा ताकि आगे आने वाली हिन्दु पिढ़ियां देखे व दुखी हों व हिन्दु-धर्म का अपमान होता रहें तथा हिन्दू व्यथित होकर 'इस्लाम' धर्म को अपनाये।

काशी खण्ड में "आदि विश्वेश्वर" का उल्लेख है तत्पश्चात् "विश्वेश्वर" के नाम से भी इस मन्दिर को लोग जानते है तथा आज हम इसे "विश्वनाथ" के नाम से पुकारते व जानते है। यह ऐतिहासिक व धार्मिक तथा पुराणों में वर्णित मन्दिर को कई बार मुस्लिम आक्रान्ताओं, विधर्मी शासकों ने तहस-नहस किया किन्तु भगवान शिव की नगरी में बाबा विश्वनाथ विद्यमान रहें। माता अह्लया बाई होलकर जी ने वर्तमान में स्थित मन्दिर स्थल का जिर्णोधार कराया तथा राजा रणजीत सिंह ने 22 टन सोना से मन्दिर के शिखर को स्वर्णरंजित किया।

वर्ष 2014 में जब श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी वाराणसी से लोकसभा का प्रत्याशी घोषित हुए तो उन्होंने कहा कि "माँ गंगा ने बुलाया है।" लेकिन किसी को यह पता नहीं था कि उन्हें तो बाबा श्री काशी विश्वनाथ जी ने बुलाया था। कहा जाता है कि बाबा श्री काशी विश्वनाथ जी का आशिर्वाद जिसे भी मिल गया वह "प्रधानमंत्री भारत वर्ष का" बन गया, यही चरितार्थ हुआ। आदरणीय मोदी जी प्रधानमंत्री मनोनीत होने के पश्चात् बहुत ही सुविचारित व सुनियोजित ढंग से विश्वनाथ परिसर की बृहद व विशाल कल्पना की एवं उस परिकल्पना को साकार रूप दिया। बाबा श्री काशी विश्वनाथ मन्दिर अब "श्री काशी विश्वनाथ ध ाम" बन गया। आज पूरे वाराणसी व काशी खण्ड की पहचान पुनः बाबा श्री काशी विश्वनाथ जी के कारण पूनर्जिवित हो गयी। मां गंगा के तट से काशी विश्वनाथ मन्दिर के गर्भगृह तक पहुंच कर बाबा का दर्शन सहज एवं सुगम हो गया। परिसर में बारह ज्योतिलिंग्ड की छंठा एवं श्री आदि शंकराचार्य के दर्शन, भारत माता की विशाल प्रतिमा शोभयमान हो रही है। एक अलौकिक विहगंम दृश्य, दिव्यता, भव्यता तथा अनूठी छंठा सभी भक्तों का मन तथा हृदय मोह लेती है, रोक लेती है, कहीं जाने नहीं देती है। सभी के मुंह से एक ही स्वर बार-बार निकलता है "हर-हर महादेव" "बाबा विश्वनाथ की जय"। जय घोष से पूरा वातावरण भक्तिमय हो जाता है तथा पूरा वायु मण्डल शिवमय हो जाता है। आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी, प्रधानमंत्री द्वारा श्री विश्वनाथ धाम के लोकार्पण को टेलीविजन पर देखने के पश्चात् में स्वयं को रोक नहीं सका तथा पिछले महीनें बाबा श्री काशी विश्वनाथ जी के स्वर्ण जणित गर्भगृह का दर्शन कर विधि विधान से रुद्राभिषेक करा व सप्तर्षी आरती में उपस्थित होकर अपने आप को सौभाग्यशाली माना तथा जीवन धन्य हो गया, ऐसा विचार मेरे मन में बार-बार आया। इस समय प्रति दिन लगभग डेढ़ से दो लाख भक्त वाराणसी केवल बाबा श्री विश्वनाथ जी के दर्शन के लिए ही जाते हैं जब कि पूननिर्माण के पूर्व वर्ष 2020-21 तक केवल चालिस से पचास हजार ही दर्शनार्थियों की संख्या थी।

जयसवाल जागृति का यह विशेष संस्करण बाबा श्री काशी विश्वनाथ जी को इस प्रार्थना व याचना के साथ अर्पित व समर्पित है कि बाबा श्री काशी विश्वनाथ जी की असीम कृपा व आशीर्वाद पूरे जायसवाल जागृति परिवार पर हो, सबका कल्याण हो, चतुर्मुखी विकास हो, बाबा के प्रति श्रद्धा व विश्वास की वृद्धि हो। इस विशेष संस्करण में श्री विश्वेश्वर ज्योतिर्लिग्ड और उनकी महिमा के प्रसंग में पंचक्रोशी की महत्ता का प्रतिपादन, वाराणसी तथा विश्वेश्वर माहात्मय, भगवान शिव को संतुष्ट करने वाले व्रतों का वर्णन, शिवरात्रिव्रत की विधि एवं महिमा का कथन, शिवरात्रिव्रत के उद्यापन की विधि, विश्वनाथाष्टकम्, रुद्राष्टकम्, शिवताण्डवस्तोत्रम्, लिग्ंडाष्टकम् तथा शिवपंचाक्षरस्तोत्रम को श्री शिवपुराण से जो कि सबसे विश्वसनीय स्त्रोत है, से उद्धृत किया गया। इसके अतिरिक्त पौराणिक मान्यतायें, मोदी ने रचा इतिहास, माँ गंगा देख रही है बाबा विश्वनाथ का वैभव तथा काशी विश्वनाथ धाम की भव्यता से हर कोई निहाल समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचार तथा श्री मनोज जायसवाल, अध्यक्ष, जायसवाल कलब, वाराणसी के सौजन्य से प्राप्त समाचार से इस पत्रिका में अंकित किया गया है। बाबा श्री काशी विश्वनाथ जी के विषय में इन संकलित महत्त्वपूर्ण तथ्यों को सुधी पठकों से विनम्र निवेदन है कि सुरक्षित तथा एक धार्मिक धरोहर के रूप में रखने की कृपा करें।

यह संस्करण बाबा श्री काशी विश्वनाथ जी के पवित्र श्रावणन मास में आप सभी के कल्याण के लिए एक छोटा सा मेरा प्रयास, हृदय के अन्तः करण की आवाज समर्पित है। प्रेम से बोलिए "जय बाबा श्री काशी विश्वनाथ"।

विश्वेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग और उनकी महिमा के प्रसङ्ग में पञ्चक्रोशी की महत्ता का प्रतिपादन

सूतजी कहते हैं–मुनिवरो! अब मैं काशी के विश्वेश्वर नामक ज्योतिर्लिङ्गका महात्म्य बताऊँगा, जो महापातकों का भी नाश करने वाला है। तुल लोग सुनो, इस भूतल पर जो कोई भी वस्तु दृष्टिगोचर होती है, वह सच्चिदानन्दस्वरूप, निर्विकार एवं सनातन ब्रह्मरूप है। सच्चिदानन्दस्वरूप, निर्विकार एवं सनातन ब्रह्मरूप है। अपने कैवल्य (अद्वैत) भाव में ही रमने वाले उन अद्वितीय परमात्मा में कभी एक से दो हो जाने की इच्छा जाग्रत हुई*। फिर वे ही परमात्मा सगुण रूप में प्रकट हो शिव कहलाये। वे शिव ही पुरुष और स्त्री दो रूपों में प्रकट हो गये। उनमें जो पुरुष था, उसका 'शिव' नाम हुआ और जो स्त्री हुई, उसे 'शक्ति' कहते है। उन चिदानन्द स्वरूप शिव और शक्तिने स्वयं अदृष्ट रहकर स्वभाव से ही दो चेतनों (प्रकृति और पुरुष) की सृष्टि की। मुनिवरो! उन दोनों माता-पिताओं को उस समय सामने न देखकर वे दोनों प्रकृति और पुरुष महान् संशय में पड़ गये। उस समय निर्गुण परमात्मा से आकाशवाणी प्रकट हुई– 'तुम दोनों को तपस्या करनी चाहिये। फिर तुमसे परम उत्तम सृष्टि का विस्तार होगा।'

वे प्रकृति और पुरुष बोले– 'प्रभो! शिव! तपस्या के लिये तो कोई स्थान है ही नहीं। फिर हम दोनों इस समय कहाँ स्थित होकर आपकी आज्ञा के अनुसार तप करें।

तब निर्गुण शिव ने तेज के सारभूत पाँच कोस लंबे-चौड़े शुभ एवं सुन्दर नगर का निर्माण किया, जो उनका अपना ही स्वरूप था। वह सभी आवश्यक उपकरणों से युक्त था। उस नगर का निर्माण करके उन्होंने उसे उन दोनों के लिये भेजा। वह नगर आकाश में पुरुष के समीप आकर स्थित हो गया। तब पुरुष–श्री हरि ने उस नगर में स्थित हो सृष्टि की कामना से शिव का ध्यान करते हुए बहुत वर्षों तक तप किया। उस समय परिश्रम के कारण उनके शरीर से श्वेत जल की अनेक धाराएँ प्रकट हुई, जिनसे सारा शून्य आकाश व्याप्त हो गया। वहाँ दूसरा कुछ भी दिखायी नहीं देता था। उसे देखकर भगवान विष्णु मन-ही-मन बोल उठे–यह कैसी अद्भुत वस्तु दिखायी देती है? उस समय इस आश्चर्य को देखकर उन्होंने अपना सिर हिलाया, जिससे उन प्रभु के सामने ही उनके एक कान से मणि गिर पड़ी। जहाँ वह मणि गिरी, वह स्थान मणिकर्णिका नामक महान् तीर्थ हो गया। जब पूर्वाक्त जल राशि में वह सारी पञ्चक्रोशी डूबने और बहने लगी, तब निर्गुण शिव ने शीघ्र ही उसे अपने त्रिशूल के द्वारा धारण कर लिया। फिर विष्णु अपनी पत्नी प्रकृति के साथ वहीं सोये। तब उनकी नाभि से एक कमल प्रकट हुआ और उस कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए। उनकी उत्पत्ति में भी शंकर का आदेश ही कारण था। तदनन्तर उन्होंने शिव की आज्ञा पाकर अद्भुत सृष्टि आरम्भ की। ब्रह्मा जी ने ब्रह्माण्ड में चौदह भुवन बनाये। ब्रह्माण्ड के भीतर कर्मपाश से बँधे हुए प्राणी मुझे कैसे प्राप्त कर सकेंगे? 'यह सोचकर उन्होंने मुक्तिदायिनी पञ्चक्रोशी को इस जगत् में छोड़ दिया।

''यह पञ्चक्रोशी काशी लोक में कल्याणदायिनी, कर्मबन्ध न का नाश करने वाली, ज्ञानदात्री तथा मोक्ष को प्रकाशित करने वाली मानी गयी है। अतएव मुझे परम प्रिय है। यहाँ स्वयं परमात्म ने 'अविमुक्त' लिङ्ग की स्थापना की है। अतः मेरे अंशभूत हरे! तुम्हें कभी इस क्षेत्र का त्याग नहीं करना चाहिये।'' ऐसा कहकर भगवान् हरने काशीपुरी को स्वयं अपने त्रिशूल से उतर कर मर्त्यलोक के जगत् में छोड़ दिया। ब्रह्मा जी का एक दिन पूरा होने पर जब सारे जगत् का प्रलय हो जाता है, तब भी निश्चय ही इस काशीपुरी का नाश नहीं होता। उस समय भगवान् शिव इसे त्रिशूल पर धारण कर लेते हैं और जब ब्रह्मा द्वारा पुनः नयी सृष्टि की जाती है, तब इसे फिर से इस भूतल पर स्थापित कर देते है। कर्मों का कर्षण करने से ही इस पुरी को 'काशी' कहते है। काशी में अविमुक्तेश्वरलिङ्ग सदा विराजमान रहता है। वह महपात की पुरुषों को भी मोक्ष प्रदान करने वाला है। मुनीश्वरो! अन्य मोक्षदायक धामों में सारूप्य आदि मुक्ति प्राप्त होती है। केवल इस काशी में ही

जीवों को सायुज्य नामक सर्वोत्तम मुक्ति सुलभ होती है। जिनकी कहीं भी गति नहीं है, उनके लिये वाराणसी पुरी ही गति है। महापुण्यमयी पञ्चक्रोशी करोड़ों हत्याओं का विनश करने वाली है। यहाँ समस्त अमरगण भी मरण की इच्छा करते हैं। फिर दूसरों की तो बात ही क्या है। यह शंकर की प्रिय नगरी काशी सदा भोग और मोक्ष प्रदान करने वाली है।

कैलास के पति, जो भीतर से सत्त्व गुणी और बाहर से तमोगुणी कहे गये है, कालाग्नि रुद्र के नाम से विख्यात है। वे निर्गुण होते हुए भी सगुण रूप में प्रकट हुए शिव हैं। उन्होंने बारंबार प्रणाम करके निर्गुण शिव से इस प्रकार कहा।

रुद्र बोले–विश्वनाथ! महेश्वर! मैं आपका ही हूँ, इसमें संशय नहीं है। साम्ब महादेव! मुझ आत्मज पर कृपा कीजिए। जगत्पते! लोकहित की कामना से आपको सदा यहीं रहना चाहिए।जगन्नाथ! मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ। आप यहाँ रहकर जीवों का उद्धार करें।

सूतजी कहते हैं–तदनन्तर मन और इन्द्रियों को वश में रखने वाले अविमुक्त ने शंकर से बारंबार प्रार्थना करके नेत्रों से आँसू बहाते हुए ही प्रसन्नतापूर्वक उनसे कहा।

अविमुक्त बोले–कालरूपी रोग के सुन्दर औषध देवाधि देव महादेव! आप वास्तव में तीनों लोको कि स्वामी तथा ब्रह्मा और विष्णु आदि के द्वारा भी सेवनीय है। देव! काशीपुरी को आप अपनी राजधानी स्वीकार करें। मैं अचिन्त्य सुख की प्राप्ति के लिये यहाँ सदा आपका ध्यान लगाये स्थिर भाव से बैठा रहूँगा। आप ही मुक्ति देने वाले तथा सम्पूर्ण कामनाओं के एक पूरक है, दूसरा कोई नहीं। अतः आप परोपकार के लिये उमा सहित सदा यहाँ विराजमान रहें। सदाशिव! आप समस्त जीवों को संसार सागर से पार करें। हर! मैं बारंबार प्रार्थना करता हूँ कि आप अपने भक्तों का कार्य सिद्ध करें।

सूतजी कहते हैं–ब्राह्मणो! जब विश्वनाथ ने भगवान् शंकर से इस प्रकार प्रार्थना की, तब सर्वेश्वर शिव समस्त लोकों का उपकार करने के लिये वहाँ विराजमान हो गये। जिस दिन से भगवान् शिव काशी में आ गये, उसी दिन से काशी सर्वश्रेष्ठ पुरी हो गयी।

वाराणसी तथा विश्वेश्वर माहात्म्य

सूतजी कहते हैं–मुनिश्वरो! मैं संक्षेप से ही वाराणसी तथा विश्वेश्वर के परम सुन्दर माहात्म्य का वर्णन करत हूँ, सुनो। एक समय की बात है कि पार्वती देवी ने लोक-हित की कामना से बड़ी प्रसन्ता के साथ भगवान शिव से अविमुक्त क्षेत्र और अविमुक्त लिङ्ग का माहात्म्य पूछा।

तब परमेश्वर शिव ने कहा–यह वाराणसी पुरी सदा के लिये मेरा गुह्यतम क्षेत्र है और सभी जीवों की मुक्ति का सर्वथा हेतु है। इस क्षेत्र में सिद्धगण सद मेरे व्रत का आश्रय ले नाना प्रकार के वेष धारण किये मेरे लोक को पाने की इच्छा रखकर जितात्मा और जितेन्द्रिय हो नित्य महायोग का अभ्यास करते हैं। उस उत्तम महायोग का नाम है पाशुपत योग। उसका श्रुतियों द्वारा प्रतिपादन हुआ है। वह भोग और मोक्षरूप फल प्रदान करने वाला है। महेश्वरि! वाराणसी पुरी में निवास करना मुझे सदा ही अच्छा लगता है। जिस कारण से मैं सब कुछ छोड़कर काशी में रहता हूँ, उसे बताता हूँ, सुनो। जो मेरा भक्त तथा मेरे तत्त्व का ज्ञानी है, वे दोनों अवश्य ही मोक्ष के भागी होते हैं। उनके लिये तीर्थ की अपेक्षा नहीं है। विहित और अविहित दोनों प्रकार के कर्म उनके लिये समान हैं। उन्हें जीवमुक्त ही समझना चाहिए। वे दोनों कही भी मरे, तुरंत ही मोक्ष प्राप्त लेते हैं। यह मैंने निश्चित बात कही है। सर्वोत्तम शक्ति देवी उमे! इस परम उत्तम अविमुक्त तीर्थ में जो विशेष बात है, उसे तुम मन लगाकर सुनो। सभी वर्ण और समस्त आश्रमों के लोग चाहे वे बालक, जवान या बूढ़े, कोई भी क्यों न हों–यदि इस पुरी में मर जाये तो मुक्त हो ही जाते हैं, इसमें संशय नहीं है। स्त्री अपवित्र हो या पवित्र, कुमारी हो या विवाहिता, विधवा हो या बन्ध्या, रजस्वला, प्रसूता, संस्कारहीना अथवा जैसी-तैसी–कैसी ही क्यों न हो, यदि इ क्षेत्र में मरी हो तो अवश्य मोक्ष की भागिनी होती है–इसमें संदेह नहीं है। स्वेदज, अण्डज, उद्भिज्ज अथवा जरायुज प्राणी जैसे यहाँ मरने पर मोक्ष पाता है, वैसे और कहीं नहीं पाता। देवि! यहाँ मरने वाले के लिये न ज्ञान की अपेक्षा है न भक्ति की; न कर्म की आवश्यकता है न दान की; न कभी संस्कृति की अपेक्षा है और न धर्म की ही; यहाँ नामकीर्तन, पूजन तथा उत्तम जाति की भी अपेक्षा नहीं होती। जो मनुष्य मेरे इस मोक्षदायक क्षेत्र में निवास करता है, वह चाहे जैसे मरे, उसके लिये मोक्ष की प्राप्ति सुनिश्चित है। प्रिये! मेरा यह दिव्य पुर गुह्य से भी गुह्यतर है। ब्रह्मा आदि देवता भी इसके माहात्म्य को नहीं जानते। इसलिये यह महान क्षेत्र अविमुक्त नाम से प्रसिद्ध है; क्योंकि नैमिष आदि सभी तीर्थो से यह श्रेष्ठ है। यह मरने पर अवश्य मोक्ष देने वाला है। धर्म का सार सत्य है, मोक्ष का सार समता है तथा समस्त क्षेत्रों एवं तीर्थो का सार यह 'अविमुक्त' तीर्थ (काशी) है–ऐसी

विद्वानों की मान्यता है। इच्छानुसार भोजन, शयन, क्रीड़ा तथ विविध कर्मो का अनुष्ठान करता हुआ भी मनुष्य यदि इस अविमुक्त तीर्थ में प्राणों का परित्याग करता है तो उसे मोक्ष मिल जता है। जिसका चित्त विषयों में आसक्त है और जिसने धर्म की रुचि त्याग दी है, वह भी यदि इस क्षेत्र में मृत्यु को प्राप्त होता है तो पुनः संसार बन्धन में नहीं पड़ता। फिर जो ममता से रहित, धीर, सत्त्वगुणी, दम्भहीन, कर्मकुशल और कर्तापन के अभिमान से रहित होने के कारण किसी भी कर्म का आरम्भ न करने वाले है, उनकी तो बात ही क्या है। वे सब मुझमें ही स्थित है।

इस काशीपुरी में शिव भक्तों द्वारा अनेक शिवलिङ्ग स्थापित किये गये हैं। पार्वति! वे सम्पूर्ण अभीष्टों को देने वाले मोक्षदायक हैं। चारों दिशाओं में पाँच-पाँच कोस फैला हुआ यह क्षेत्र 'अविमुक्त' कहा गया है, वह ब ओर से मोक्षदायक है। जीव को मृत्युकाल में यह क्षेत्र उपलब्ध हो जाये तो उसे अवश्य मोक्ष की प्राप्ति होती है। यदि निष्पाप मनुष्य काशी में मरे तो उसका तत्काल मोक्ष हो जाता है और जो पापी मनुष्य मरता है, वह कायव्यूहों को प्राप्त होता है। उसे पहले यातना का अनुभव करके ही पीछे मोक्ष की प्राप्ति होती है। सुन्दरि! जो इस अविमुक्त क्षेत्र में पातक करता है, यह हजारों वर्षो तक भैरवी यातना पाकर पाप का फल भोगने के पश्चात् ही मोक्ष पाता है। शतकोटि कल्पों में भी अपने किये हुए कर्म का क्षय नहीं होता। जीव को अपने द्वारा किये गये शुभाशुभ कर्म का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। केवल अशुभ कर्म नरक देने वाला होता है, केवल शुभ कर्म स्वर्ग की प्राप्ति कराने वाला होता है तथा शुभ और अशुभ दोनों कर्म की कमी और शुभ कर्म की अधिकता होने पर यहाँ अधम जन्म की प्राप्ति होती है। पार्वति! जब शुभ और अशुभ दोनों ही कर्मो का क्षय हो जाता है, तभी जीव को सच्चा मोक्ष प्रप्त होता है। यदि किसी ने पूर्व जनम में आदरपूर्वक काशी का दर्शन किया है, तभी उसे इस जन्म में काशी में पहुंचकर मृत्यु की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य काशी जाकर गङ्गा में स्नान करता हैद्व उसके क्रियमाण और संचित कर्म का नाश हो जाता है। परंतु प्रारब्ध कर्म भोगे बिना नष्ट नहीं होता, यह निश्चित बात है। जिसकी काशी में मुक्ति हो जाती है, उसके प्रारब्ध कर्म भी क्षय हो जाता है। प्रिये! जिसने एक ब्राह्मण को भी काशीवास करवाया है, वह स्वयं भी काशीवास का अवसर पाकर मोक्ष लाभ करता है।

सूतजी कहते हैं–मुनिवरो! इस तरह काशी का तथा विश्वेश्वर लिङ्ग का प्रचुर माहात्म्य बताया गया है, जो सत्यपुरुषों को भोग और मोक्ष प्रदान करने वाला है। इसके बाद में त्र्यम्बक नामक ज्योतिर्लिङ्ग का माहात्म्य बताऊँगा, जिसे सुनकर मनुष्य क्षणभर में समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।

अपने समाज की वर्तमान स्थिति पर एक विहंगम दृष्टि

मैं वर्षों से अपने अखिल भारतीय जायसवाल सर्ववर्गीय महासभा के सम्मेलनों में प्रायः उपस्थित रहा हूँ। **अनुभवों के आधार पर सच्चाई को सामने रख रहा हूँ।** इन बैठकों में समाज के भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों से प्रतिनिधि उपस्थित होते हैं। सबसे बड़ी उपलब्धि यह हो जाती है कि एक दूसरे से परिचित हो जाते हैं या पुनः मिलन हो जाता है। बैठक में अपने अपने क्षेत्र में की गई कार्यवाही और भविष्य की योजना पर प्रतिवदेन प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक पर विचार विमर्श, सुझाव, Discussion और Instruction दिया जाता है कि धीमी प्रगति पर ध्यान देते हुए और सुधार लाया जाये। अन्त में **meeting, sitting और eating वाली कोटा पूरा करके बैठक समाप्त की जाती है।**

अब मैं सही मानों में हुई प्रगति अथवा अवनति को पाठकों के सामने रख रहा हूँ।

जहाँ तक समाज में एकता और संगठन की बात है तो यही कहना पड़ेगा कि नाममात्र की ही प्रगति कही जाएगी, क्योंकि सभी बन्धुओं से जो देश के कोने कोने से आए रहते है एक सुनहरा अवसर मिलता है कि हमारे बन्धु कहां कहां फैले हुए हैं तथा किन किन उपनामों से जाने जाते हैं। उनकी संख्या तथा पेशा की भी जानकारी मिल जाती है। आज स्थिति यह है कि संगठन और एकता की बात दूर, समाज में विखराव हो रहा है कभी अखिल भारतीय स्तर पर एक मंच और एक झंडा था। मुझे अच्छी तरह याद है कि अखिल भारतीय स्तर पर मात्र एक संगठन एक मंच और एक झंडा था। आज चार से अधिक टुकड़े हो गए हैं। कारण अहम और मुद्दे की लड़ाई।

कोई अपने आपको दूसरे से कम नहीं समझता है। Leg pulling अपने से दूसरे समाज की अपेक्षा अधिक होना। उदाहरण स्वरूप बिहार में यादवों का बोलवाला है। अखिल भारतीय स्तर पर इनकी संख्या जायसवालों की अपेक्षा कम है। लेकिन ये संगठित हैं। हमारे समाज में बड़े-बड़े उद्योगपति, सेठ, कर्णधार विद्यमान हैं। इस लोगों का भी सामाजिक उत्थान में किसी न किसी प्रकार का सहयोग मिलता रहता है भले ही आंशिक रूप से। और अपेक्षा की जाती है। विद्वता क्षेत्र में की हमारा समाज अखिल भारतीय स्तर पर ही नहीं विश्व स्तर पर समाज का नाम रोशन किया है- इनमें प्रमुखः डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल बार एट ला, डॉ. गोरख प्रसाद, रायबहादुर डॉ. हीरा लाल और पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी।

मैं उस दिन की प्रतीक्षा में हूँ जब अखिल भारतीय स्तर पर हमारा समाज एक हो जाएगा। एक झंडा, एक मंच।

शुभ कामनाओं के साथ

सत्येदव, पटना, 9308741023

भगवान् शिव को संतुष्ट करनेवाले व्रतों का वर्णन, शिवरात्रि-व्रत की विधि एवं महिमा का कथन

तदनन्तर ऋषियों के पूछने पर सूत जी ने शिव जी की आराधना के द्वारा उत्तम एवं मनोवाञ्छित फल प्राप्त करने वाले बहुत-से महान् स्त्री-पुरुषों के नाम बताये। इसके बाद ऋषियों ने फिर पूछा– 'व्यास शिष्य! किस व्रत से संतुष्ट होकर भगवान् शिव उत्तम सुख प्रदान करते हैं? जिस व्रत के अनुष्ठान से भक्तजनों को भोग और मोक्ष की प्राप्ति हो सके, उसका आप विशेष रूप से वर्णन कीजिए।'

सूत जी ने कहा– महर्षियो! तुमने जो कुछ पूछा है, वही बात किसी समय ब्रह्मा, विष्णु तथा पार्वती जी ने भगवान् शिव से पूछी थी। इसके उत्तर में शिव जी ने जो कुछ कहा, वह मैं तुम लोगों को बता रहा हूँ।

भगवान् शिव बोले– मेरे बहुत-से व्रत हैं, जो भोग और मोक्ष प्रदान करनेवाले हैं। उनमें मुख्य दस व्रत हैं, जिन्हें जाबालश्रुति के विद्वान् 'दश शैव व्रत' कहते हैं। द्विजों को सदा तन्त्रपूर्वक इन व्रतों का पालन करना चाहिए। हरे! प्रत्येक अष्टमी के केवल रात में ही भोजन करे।

विशेषतः कृष्ण पक्ष की अष्टमी के भोजन का सर्वथा त्याग कर दे। शुक्ल पक्ष की एकादशी को भी भोजन छोड़ दे। किंतु कृष्ण पक्ष की एकादशी को रात में मेरा पूजन करने के पश्चात् भोजन किया जा सकता है। शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को तो रात में भोजन करना चाहिये; परंतु कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिव व्रतधारी पुरुषों के लिये भोजन का सर्वथा निषेध है। दोनों पक्षों में प्रत्येक सोमवार को प्रयन्तपूर्वक केवल रात में ही भोजन करन चाहिये। शिव के व्रत में तत्पर रहने वाले लोगों के लिये यह अनिवार्य नियम है। इन सभी व्रतों में व्रत की पूर्ति के लिये अपनी शक्ति के अनुसार शिवभक्त ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। द्विजों को इन सब व्रतों का नियमपूर्वक पालन करना चाहिये। जो द्विज इनका त्याग करते हैं, वे चोर होते हैं। मुक्ति मार्ग में प्रवीण पुरुषों को मोक्ष की प्राप्ति कराने वाले चार व्रतों का नियमपूर्वक पालन करना चाहिये। वे चार व्रत इस प्रकार हैं– भगवान् शिव की पूजा, रूद्र मन्त्रों का जप, शिव मन्दिर में उपवास तथा काशी में मरण। ये मोक्ष के सनातन मार्ग हैं। सोमवारी की अष्टमी और कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी– इन दो तिथियों को उपासवपूर्वक व्रत रखा जाय तो वह भगवान् शिव को संतुष्ट करने वाला होता है, इसमें अन्यथा विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

हरे! इन चारों में भी शिव रात्रि का व्रत ही सबसे अधिक बलवान् है। इसलिये भोग और मोक्षरूपी फल की इच्छा रखने वाले लोगों को मुख्यतः उसी का पालन करना चाहिये। इस व्रत को छोड़कर दूसरा कोई मनुष्यों के लिये हितकारक व्रत नहीं है। यह व्रत सबके लिये धर्म का उत्तम साधन है। निष्काम अथवा सकाम भाव रखनेवाले सभी मनुष्यों, वर्णों, आश्रमों, स्त्रियों, बालकों, दासों, दासियों तथा देवता आदि सभी देहधारियों के लिये यह श्रेष्ठ व्रत हितकारक बताया गया है।

माघ मास के कृष्ण पक्ष में शिवरात्रि तिथि का विशेष माहात्म्य बताया गया है। जिस दिन आधी रात के समय तक वह तिथि विद्यमान हो, उसी दिन उसे व्रत के लिये ग्रहण करना चाहिये। शिवरात्रि करोड़ों हत्याओं के पाप का नाश करनेवाली है। केशव! उस दिन सबेरे से लेकर जो कार्य करना आवश्यक है, उसे प्रसन्नतापूर्वक तुम्हें बता रहा हूँ; तुम ध्यान देकर सुनो। बुद्धिमान् पुरुष सबेरे उठकर बड़े आनन्द के साथ स्नान आदि नित्य कर्म करे। आलस्य को पास न आने दे। फिर शिवालय में जाकर शिवलिङ्गका विधिवत् पूजन करके मुझ शिव को नमस्कार करने के पश्चात् उत्तम रीति से संकल्प करे–

संकल्प

देव देव महादेव नीलकण्ठ नमोऽस्तु ते।
कर्तुमिच्छाम्यहं देव शिवरात्रिव्रतं तव॥
तव प्रभावाद्देवेश निर्विघ्नेन भवेदिति।
कामाद्याः शत्रवो मां वै पीडां कुर्वन्तु नैव हि॥

'देवदेव! महादेव! नीलकण्ठ! आपको नमस्कार है। देव! मैं आपके शिवरात्रि-व्रत का अनुष्ठान करना चाहता हूँ। देवेश्वर! आपके प्रभाव से यह व्रत बिना किसी विघ्न-बाधा के पूर्ण हो और काम आदि शत्रु मुझे पीड़ा न दें।'

ऐसे संकल्प करके पूजन-सामग्री का संग्रह करे और उत्तम स्थान में जो शास्त्र प्रसिद्ध शिवलिङ्ग हो, उसके पास रात में जाकर स्वयं उत्तम विधि-विधान का सम्पादन करे; फिर शिव के दक्षिण या पश्चिम भाग में सुन्दर स्थान पर उनके निकट ही पूजा के लिये संचित सामग्री को रखे। तदनन्तर श्रेष्ठ पुरुष वहाँ फिर स्नान करे। स्नान के बाद सुन्दर वस्त्र और उपवस्त्र धारण करके तीन बार आचमन करने के पश्चात् पूजन आरम्भ करे। जिस मन्त्र के लिये जो द्रव्य नियत हो, उस मन्त्र को महादेवी जी की पूजा नहीं करनी चाहिये। गीत वाद्य, नृत्य आदि के साथ भक्ति भाव से सम्पन्न हो रात्रि के प्रामि पहर में पूजन करके विद्वान् पुरुष मन्त्र का जप करे। यदि मन्त्रज्ञ पुरुष उस समय श्रेष्ठ पार्थिव लिङ्ग का निर्माण करे तो नित्यकर्म करने के पश्चात् पार्थिव लिङ्ग का ही पूजन करे। पहले पार्थिव बनाकर पीछे उसकी विधिवत् स्थापना करे। फिर पूजन के पश्चात् नाना प्रकार के स्तोत्रों द्वारा भगवान् वृषभ ध्वज को संतुष्ट करे। बुद्धिमान् पुरुष को चाहिये कि उस समय शिवरात्रि-व्रत के महात्म्य का पाठ करे। श्रेष्ठ भक्त अपने व्रत की पूर्ति के लिये उस माहत्म्य को श्रद्धापूर्वक सुने। रात्रि के चारों पहरों में चार पार्थिव लिङ्गों का निर्माण करके आवाहन से लेकर विसर्जन तक क्रमशः उनकी पूजा करे और बड़े उत्सव के साथ प्रसन्नतापूर्वक जागरण करे। प्रातःकाल स्नान करके पुनः वहाँ पार्थिव शिव का स्थापन और पूजन करे। इस तरह व्रत को पूरा करके हाथ जोड़ मस्तक झुकाकर बारंबार नमस्कारपूर्वक भगवान् शम्भु से इस प्रकार प्रार्थना करे।

प्रार्थना एवं विसर्जन

नियमो यो महादेव कृतश्चैव त्वदाज्ञया।
विसृज्यते मया स्वामिन् व्रतं जातमनुत्तमम्॥
व्रतेनानेन देवेश यथाशक्तिकृतेन च।
संतुष्टो भव शर्वाद्य कृपां कुरु ममोपरि॥

'महादेव! आपकी आज्ञा से मैंने जो व्रत ग्रहण किया था, स्वामिन्! वह परम उत्तर व्रत पूर्ण हो गया। अतः अब उसका विसर्जन करता हूँ। देवेश्वर शर्व! यथाशक्ति किये गये इस व्रत से आप आज मुझ पर कृपा करके संतुष्ट हो।'

तत्पश्चात् शिव को पुष्पाञ्जलि समर्पित करके विधि पूर्वक दान दे। फिर शिव को नमस्कार करके व्रत सम्बन्धी नियम का विसर्जन कर दे। अपनी शक्ति के अनुसार शिव भक्त ब्राह्मणों, विशेषतः सन्यासियों को भोजन करा कर पूर्णयता संतुष्ट करके स्वयं भी भोजन करे।

हरे! शिवरात्रि को प्रत्येक प्रहर में श्रेष्ठ शिव भक्तों को जिस प्रकार विशेष पूजा करनी चाहिये, उसे मैं बताता हूँ; सुनो! प्रथम प्रहर में पार्थिव लिङ्ग की स्थापना करके अनेक सुन्दर उपचारों द्वारा उत्तम भक्ति भाव से पूजा करे। पहले गन्ध, पुष्प आदि पाँच द्रव्यों द्वारा सदा महादेव जी की पूजा करनी चाहिये। उस-उस द्रव्य से सम्बन्ध रखने वाले मन्त्र का उच्चारण करके पृथक्-पृथक् वह द्रव्य समर्पित करे। इस प्रकार द्रव्य समर्पण के पश्चात् भगवान् शिव को जलधारा अर्पित करे। विद्वान् पुरुष पढ़े हुए द्रव्यों को जल धारा से ही उतारे। जल धारा के साथ-साथ एक सौ आठ मन्त्र का जाप करके वहाँ निर्गुण-सगुण रूप शिव का पूजन करे। गुरु से प्राप्त हुए मन्त्र द्वारा भगवान् शिव की पूजा करे। अन्यथा नाम मन्त्र द्वारा सदा शिव का पूजन करना चाहिये। विचित्र चन्दन, अखण्ड चावल और काले तिलों से परमात्मा शिव की पूजा करनी चाहिये। कमल और कनेर के फूल चढ़ाने चाहिये। आठ नाम मन्त्रों द्वारा शंकर जी को पुष्प समर्पित करे। वे आठ नाम इस प्रकार हैं– भव, शर्व, रूद्र, पशुपति, उग्र, महान्, भीम और ईशान। इनके आरम्भ में श्री और अन्त में चतुर्थी विभक्ति जोड़कर 'श्री भवाय नमः' इत्यादि नाम मन्त्रों द्वारा शिव का पूजन करे। पुष्प-समर्पण के पश्चात् धूप, दीप और नैवेद्य निवेदन करे। पहले प्रहर में विद्वान् पुरुष नैवेद्य के लिये पकवान बनवा ले। फिर श्रीफल युक्त विशेषार्घ्य देकर ताम्बूल समर्पित करे। तदनन्तर नमस्कार और ध्यान करके गुरु के दिये हुए मन्त्र का जप करे। गुरुदत्त मन्त्र न हो तो पञ्चाक्षर (नमः शिवाय) मन्त्र के जप से भगवान् शंकर को संतुष्ट करे, धेनुम्रद्रा[४] दिखाकर उत्तम जल से तर्पण करे। पश्चात् अपनी शक्ति के अनुसार पाँच ब्राह्मणों को भोजन कराने का संकल्प करे। फिर जब तक पहला प्रहर पूरा न हो जाय, तब तक महान् उत्सव करता रहे।

दूसरा प्रहर आरम्भ होने पर पुनः पूजन के लिये संकल्प करे। अथवा एक ही समय चारों प्रहरों के लिये संकल्प करके पहले प्रहर की भाँति पूजा करता रहे। पहले पूर्वोक्त

द्रव्यों से पूजन करके फिर जलधारा समर्पित करे। प्रथम प्रहर की अपेक्षा दुगुने मन्त्रों का जप करके शिव की पूजा करे। पूर्वोक्त तिल, जौ तथा कमल-पुष्पों से शिव की अर्चना करे। विशेषतः बिल्वपत्रों से परमेश्वर शिव का पूजन करना चाहिये। दूसरे प्रहर में बिजौरा नीबू के साथ अर्घ्य देकर खीर का नैवेद्य निवेदन करे। जनार्दन! इसमें पहले की अपेक्षा मन्त्रों की दुगुनी आवृत्ति करनी चाहिये। फिर ब्राह्मणों को भोजन कराने का संकल्प करे। शेष सब बातें पहले की ही भाँति तब तक करता रहे, जब तक दूसरा प्रहर पूरा न हो जाय। तीसरे प्रहर के आने पर पूजन तो पहले के समान ही करे; किंतु जौ के स्थान में गेहूँ का उपयोग करे और आक के फूल चढ़ाये। उसके बाद नाना प्रकार के धूप एवं दीप देकर पूए का नैवेद्य भोग लगाये। उसके साथ भाँति-भाँति के शाक भी अर्पित करे। इस प्रकार पूजन करके कपूर से आरती उतारे। अनार के फल के साथ अर्घ्य दे और दूसरे प्रहर की अपेक्षा दुगुना मन्त्र-जाप करे। तदनन्तर दक्षिणा सहित ब्राह्मण-भोजन का संकल्प करे और तीसरे प्रकर के पूरे होने तक पूर्व वत् उत्सव करता रहे। चौथा प्रहर आने पर तीसरे प्रहर की पूजा का विसर्जन कर दे। पुनः आवाहन आदि करके विधिवत् पूजा करे। उड़द, कँगनी, मूँग, सप्तधान्य, शङ्खी पुष्प तथा बिल्व पत्रों से परमेश्वर शंकर का पूजन करे। उस प्रहर में भाँति-भाँति की मिठाइयों का नैवेद्य लगाये अथवा उड़द के बड़े आदि बनाकर उनके द्वारा सदाशिवको संतुष्ट करे। केले के फल के साथ अथवा अन्य विविध फलों के साथ शिव को अर्घ्य दे। तीसरे प्रहर की अपेक्षा दूना मन्त्र-जप करे और यथाशक्ति ब्राह्मण-भोजन का संकल्प करे। गीत, वाद्य तथा नृत्य से शिव की आराधनापूर्वक समय बिताये। भक्तजनों को तब तक महान् उत्सव करते रहना चाहिये, जब तक अरुणोदय न हो जाय। अरुणोदय होने पर पुनः स्नान करके भाँति-भाँति के पूजनोपचारों और उपहारों द्वारा शिव की अचर्ना करे। तत्पश्चात् अपना अभिषेक कराये, नाना प्रकार के दान दे और प्रहर की संख्या के अनुसार ब्राह्मणों तथा संन्यासियों को अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थों का भोजन कराये। फिर शंकर को नमस्कार करके पुष्पाञ्जलि दे और बुद्धिमान् पुरुष उत्तर स्तुति करके निम्नङ्कित मन्त्रों से प्रार्थना करे–

तावकस्त्वद्गतप्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदा मृड।
कृपानिधे इति ज्ञात्वा तथा योग्यं तथा कुरू॥
अज्ञानाद्यदि वा ज्ञानाज्जपपूजादिकं मया
कृपानिधित्वाज्ज्ञात्वैव भूतनाथ प्रसीद मे॥
अनेनैवोपवासेन यज्जातं फलमेव च।
तेनैव प्रीयतां देवः शंकरः सुखदायकः॥
कुले मम महादेव भजनं तेऽस्तु सर्वदा।
माभूत्स्य कुले जन्म यत्र त्वं नहि देवता।

'सुखदायक कृपानिधान शिव! मैं आपका हूँ। मेरे प्राण आप में ही लगे हैं और मेरा चित्त सदा आपका ही चिन्तन करता है। यह जानकर आप जैसा उचित समझें, वैसा करें। भूतनाथ! मैंने जानकर या अनजान में जो जप और पूजन आदि किया है, उसे समझकर दयासागर होने के नाते ही आप मुझ पर प्रसन्न हों। उस उपवास-व्रत से जो फल हुआ हो, उसी से सुखदायक भगवान् शंकर मुझ पर प्रसन्न हों। महादेव! मेरे कुल में सदा आपका भजन होता रहे। जहाँ के आप इष्ट देवता न हों, उस कुल में मेरा कभी जन्म न हो।'

इस प्रकार प्रार्थना करने के पश्चात् शिव को पुष्पाञ्जलि समर्पित करके ब्राह्मणों से तिलक और आशीर्वाद ग्रहण करे। तदनन्तर शम्भु का विसर्जन करे। जिसने इस प्रकार व्रत किया हो, उससे मैं दूर नहीं रहता। इस व्रत के फल का वर्णन नहीं किया जा सकता। मेरे पास ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जिसे शिवरात्रि-व्रत करने वाले के लिये मैं दे न डालूँ। जिसके द्वारा अनायास ही इस व्रत का पालन हो गया, उसके लिये भी अवश्य ही मुक्ति का बीज बो दिया गया। मनुष्यों को प्रतिमास भक्तिपूर्वक शिवरात्रि-व्रत करना चाहिये। तत्पश्चात् इसका उद्यापन करके मनुष्य साङ्गोपाङ्ग फल लाभ करता है। इस व्रत का पालन करने में मैं शिव निश्चय की उपासक के समस्त दुःखों का नाश कर देता हूँ और उसे भोग-मोक्ष आदि सम्पूर्ण मनोवाञ्छित फल प्रदान करता हूँ।

सूतजी कहते हैं– महर्षियो! भगवान् शिव का यह अत्यन्त हितकारक और अद्भुत वचन सुनकर श्रीविष्णु अपने धाम को लौट आये। उसके बाद इस उत्तम व्रत का अपना हित चाहने वाले लोगों में प्रचार हुआ। किसी समय केशव ने नारदजी से भोग और मोक्ष देने वाले इस दिव्य शिवरात्रि-व्रत का वर्णन किया था।

शिवरात्रि-व्रत्त के उद्यापन की विधि

ऋषि बोले– सूतजी! अब हमें शिवरात्रि-व्रत के उद्यापन की विधि बताइए, जिसका अनुष्ठान करने से साक्षात् भगवान् शंकर निश्चय ही प्रसन्न होते हैं।

सूतजीने कहा– ऋषियो! तुम लोग भक्ति भाव से आदरपूर्वक शिवरात्रि के उद्यापन की विधि सुनो, जिसका अनुष्ठान करने से वह व्रत अवश्य ही पूर्ण फल देनेवाला होता है। लगातार चौदह वर्षों तक शिवरात्रि के शुभ व्रत का पालन करना चाहिये। त्रयोदशी को एक समय भोजन करके चतुर्दशी को पूरा उपवास करना चाहिये। शिवरात्रि के दिन नित्यकर्म सम्पन्न करके शिवालय में जाकर विधि पूर्वक शिव का पूजन करे। तत्पश्चात् वहाँ यन्त्रपूर्वक एक दिव्य मण्डल बनवाये, जो तीनों लोकों में गौरी तिलक नाम से प्रसिद्ध है। उसके माध्य भाग में दिव्य लिङ्गतोभद्र मण्डल की रचना करे अथवा मण्डप के भीतर सर्वतोभद्र मण्डल का निर्माण करे। वहाँ प्राजापत्य नामक कलशों की स्थपना करनी चाहिये। वे शुभ कलश वस्त्र, फल और दक्षिणा के साथ होने चाहिये। उन सबको मण्डप के पार्श्व भाग में यन्त्रपूर्वक स्थापित करे। मण्डप के मध्य भाग में एक सोने का अथवा दूसरी धातु ताँबे आदि का बना हुआ कलश स्थापित करे। व्रती पुरुष उस कलश पर पार्वती सहित शिव की सुवर्णमयी प्रतिमा बनाकर रखे। वह प्रतिमा एक पल (तोले) अथवा आधे पल सोने की होनी चाहिये या जैसी अपनी शक्ति हो, उसके अनुसार प्रतिमा बनवा ले। वाम भाग में पार्वती की और दक्षिण भाग में प्रतिमा स्थापित करके रात्रि में उनका पूजन करे। आलस्य छोड़कर पूजन का काम करना चाहिये। उस कार्य में चार ऋत्विजों के साथ एक पवित्र आचार्य का वरण करे और उन सबकी आज्ञा लेकर भक्तिपूर्वक शिव की पूजा करे। रात को प्रत्येक प्रहर में पृथक्-पृथक् पूजा करते हुए जागरण करे। व्रती पुरुष भगवत्सम्बन्धी कीर्तन, गीत एवं नृत्य आदि के द्वारा सारी रात बिताये। इस प्रकार विधिवत् पूजनपूर्वक भगवान् शिव को संतुष्ट करके प्रातःकाल पुनः पूजन करने के पश्चात् सविधि होम करे। फिर यथाशक्ति प्राजापत्य विधान करे। फिर ब्राह्मणों को भक्तिपूर्वक कराये और यथाशक्ति दान दे।

इसके बाद वस्त्र, अलंकार तथा आभूषणों द्वारा पत्नी सहित ऋत्विजों को अलंकृत करके उन्हें विधिपूर्वक पृथक-पृथक् दान दे। फिर आवश्यक सामग्रियों से युक्त बछड़े सहित गौ का आचार्य को यह कहकर विधिपूर्वक दान दे कि इस दान से भगवान् शिव मुझ पर प्रसन्न हों। तत्पश्चात् कलशसहित उस मूर्ति को वस्त्र के साथ वृषभ की पीठ पर रखकर सम्पूर्ण अलंकारों सहित उसे आचार्य को अर्पित कर दे। इसके बाद हाथ जोड़ मस्तक झुका बड़े प्रेम से गद्गद वाणी में महाप्रभु महेश्वर देव से प्रार्थना करे।

प्रार्थना

देव देव महादेव शरणागतवत्सल।
व्रतेनानेन देवेश कृपां कुरु ममोपरि॥
मया भक्त्यनुसारेणा व्रतमेतत् कृतं शिव।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु प्रसादात्तव शंकर॥
अज्ञानाद्यदि वा ज्ञानाज्जपपूजादिकं मया।
कृतं तदस्तु कृपया सफलं तव शंकर॥

'देव देव! महादेव! शरणागतवत्सल! देवेश्वर! इस व्रत से संतुष्ट हो आप मेरे ऊपर कृपा कीजिये। शिव-शंकर! मैंने भक्ति भाव से इस व्रत का पालन किया है। इसमें जो कमी रह गयी हो, वह आपके प्रसाद से पूरी हो जाय। शंकर! मैंने अनजाने में या जान-बूझकर जो, जप-पूजन आदि किया है, वह आपकी कृपा से सफल हो।'

इस तरह परमात्मा शिव को पुष्पाञ्जलि अर्पण करके फिन नमस्कार एवं प्रार्थना करे। जिसने इस प्रकार व्रत पूरा कर लिया, उसके उस व्रत में कोई न्यूनता नहीं रहती। उससे वह मनोवाञ्छित सिद्धि प्राप्त कर लेता है, इसमें संशय नहीं है।

विश्वनाथाष्टकम्

मन्दारतरङ्ग - रमणीय - जटाकलापं
गौरीनिरन्तर-विभूषित-वामभागम्।
नारायणप्रियमनङ्गमदापहारं
वाराणसीपुरपति भज विश्वानाथम्।।१।।
वाचामगोचरमनेक-गुणस्वरूपं
वागीश-विष्णु-सुरसेवितपादपीठम्।
वामेन विग्रहवरेण कलत्रवन्तं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।२।।
भूताधिपं भुजग-भूषण-भूषिताङ्गं
व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम्।
पाशाङ्कुशाभय-वरप्रद-शूलपाणिं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।३।।
शीतांशु-शोभित-किरीट-विराजमानं
भालेक्षणानल-विशोषित-पञ्चबाणम्।
नागाधिपा-रचित-भासुरकर्णपूरं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।४।।
पन्चाननं दुरितमत-मतङ्गजानां
नागान्तकं दनुजपुङव - पन्नगानाम्।
दावानलं मरण-शोक-जाटवीनां
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।५।।
तेजोमयं सगुण-निर्गुणमद्वितीय-
मानन्दकन्दमपराजितमप्रमेयम्।
नागात्मकं सकल-निष्कलमात्मरूपं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।६।।
रागादिदोषरहितं स्वजनानुरागं
वैराग्यशान्तिनिलयं गिरिजासहायम्।
माधुर्य-धैर्य-सुभगं गरलाभिरामं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।७।।
आशां विहाय परिहृत्य परस्य निन्दां
पापे रतिं च सुनिवार्य मनः समाधौ।
आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।८।।
वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य
व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः।
विद्यां श्रियं विपुल-सौख्यमनन्तकीर्ति
सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम्।।९।।
विश्वनाथाष्टकमिदं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।१०।।
इति श्रीमहर्षिव्यासप्रणीतं श्रीविश्वनाथष्टकं सम्पूर्णम्

रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान - निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्।
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिद काशमाकाशवासं भजेऽहम्।।१।।
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं
गिराज्ञानगोती-तमीशं गिरीशम्।
करालं महाकालकालं कृपालं
गुणागार-संसारपारं नतोऽहम्।।२।।
तुषाराद्रि-सङ्काश-गौरं गभीरं
मनोभूत-कोटि-प्रभासी-शरीरम्।
स्फुरन्मौलि-कल्लोलिनी चारुगङ्ग
लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्ग।।३।।
चलत् कुण्डलं शुभनेत्रं विशालं
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्।
मृगाधीश-चर्माम्बरं गुण्डलमालं
प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि।।४।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेश-
मखण्डमजं भानुकोटि-प्रकाशम्।
त्रयीशूल-निर्मूलनं शूलपाणिं
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्।।५।।
कलातीत-कल्याण-कल्पान्तकारी
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारिः।
चिदानन्द-सन्दोह-मोहापहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो! मन्मथारी।।६।।
न तावत् सुखं शान्ति-सन्तापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्।।७।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्।
जरा-जन्म-दुःखौघ-तातप्यमानं
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो।।८।।
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।९।।
इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं रुद्राष्टकं सम्पूर्णम।।

शिवताण्डवस्तोत्रम्

जटाटवी-गलज्जल-प्रवाह-पावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्ग-मालिकाम्।
डमड्-डमड्-डमड्-डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥१॥

जटाकटाह-सम्भ्रमभ्रमन्निलिम्प-निर्झरी-
विलोलवीचि-वल्लरी-विराजमान-मूर्द्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाट-पट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम॥२॥

धराधरेन्द्रनन्दिनी-विलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्तसन्तति-प्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्ध-दुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनोविनोदमेतु वस्तुनि॥३॥

जटाभुजङ्गपिङ्गल-स्फुरत्फणामणिञ्जभा-
कदम्ब-कुङ्कुम-द्रव-प्रलिप्तदिग्बधूमुखे।
मदान्ध-सिन्धुरस्फुरत्त्वगुतरीय-मेदुरे
मनोविनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि॥४॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेष-लेख-शेखर-
प्रसूनधूलिधोरणी-विधूसराङ्घ्रि-पीठभूः।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः॥५॥

ललाट-चत्वरज्वलद्धनञ्ज्य-स्फुलिङ्गभा-
पुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः॥६॥

कराल-भाल-पट्टिका-धगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्ज्याहुतीकृत-प्रचण्डपञ्चसायके।
धराधरेन्द्रनन्दिनी कुचाग्र-चित्रपत्रक-
प्रकल्प-नैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम॥७॥

नवीनमेघमण्डली-निरुद्धदुर्धर-स्फुरत्-
कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः।
निलिम्प-निर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः॥८॥

प्रफुल्ल-नीलपङ्कज प्रपञ्चकालिमप्रभा-
वलम्बिकण्ठकन्दली रुचिप्रबद्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे॥९॥

अगर्व-सर्व-मङ्गला कला-कदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरी-विजृम्भणा-मधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे॥१०॥

जयत्वदभ्रविभ्रमत्रमद्भुजङ्ग-मस्फुरद्-
धगद्धगद्धद्विनिर्गमत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रम-प्रवर्तित-प्रचण्डताण्डवः शिव॥११॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्ग-मौक्तिकस्त्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामही-महेन्द्रयोः
समं प्रवर्तयन् मनः कदा सदाशिवं भजे॥१२॥

कदा निलिम्प-निर्झरी-निकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलि वहन्।
विलोल-लोललोचनो ललामभाल-लग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्॥१३॥

इमं हि नित्यमेवमुक्त-मुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन् स्मरन् ब्रुवन्नरो विशुद्धमेति सन्ततम्।
हरे गुरौ स भक्तिमाशु याति नाऽन्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां तु शङ्करस्य चिन्तनम्॥१४॥

पूजाऽवसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथ-गजेन्द्र-तुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मी सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः॥१५॥

इति रावणकृतं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै नकाराय नमः शिवाय॥१॥
मन्दाकिनी-सलिल-चन्दन-चर्चिताय
नन्दीश्वर-प्रमथनाथ-महेश्वराय।
मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय
तस्मै मकाराय नमः शिवा॥२॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्याय दक्षाध्वर-नाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै शिकाराय नमः शिवाय॥३॥
वसिष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमार्य-
मुनीन्द्र-देवार्चित-शेखराय।
चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय
तस्मै वकाराय नमः शिवाय॥४॥
यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै यकाराय नमः शिवाय॥५॥
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥६॥
इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं
शिवपञ्चाक्षरस्तोत्र सम्पूर्णम्।

लिङ्गाष्टकम्

ब्रह्ममुरारिसुरर्चितलिङ्गं
निर्मल-भासित-शोभितलिङ्गम्।
जमजदुःखविनाशकलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥१॥
देव-मुनिप्रवरार्चितलिङ्ग
कामदहं करुणाकरलिङ्गम्।
रावण-दर्पविनाशन-लिङ्ग
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥२॥
सर्वसुगन्धि-सुलेपित-लिङ्ग
बुद्धि-विवर्धन-कारणलिङ्गम्।
सिद्धसुराऽसुरवन्दितलिङ्ग
फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम्।
दक्षसुयज्ञ-विनाशकलिङ्ग
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥४॥
कुङ्कुम-चन्दन-लेपितलिङ्गं
पङ्कजहार-सुशोभित-लिङ्गम्।
सञ्चित-पाप-विनाशनलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥५॥
देवगणार्चित-सेवितलिङ्गं
भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम्।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥६॥
अष्टदलोपरि वेष्टितलिङ्गं
सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम्।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥७॥
सुरगुरुरवर-पूजितलिङ्ग
सुरवनपुष्प-सदार्चित-लिङ्गम्।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥८॥
लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥९॥
इति लिङ्गाष्टकस्तोत्रं समपूर्णम्।

द्वादशज्योतिर्लिंगानि

सौराष्ट्रे सोमानाथं च श्रीशेले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम्।
परल्या वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्।
सेतुबंधे तु रामेशं नागेशं दारूकाबने॥
वाराणश्यां तु विश्वेशं त्रयम्बकं गातमीतटे।
हिमालये तु केदारं धुश्मेशं च शिवालये।
एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायंप्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥

पौराणिक मान्यताएं

द्वादश ज्योतिर्लिंगों में प्रमुख काशी–विश्वनाथ मंदिर अनादिकाल से काशी में है। वर्तमान के विशेश्वर गंज में दिव्य ज्योति साक्षात बाबा विश्वनाथ के रूप में दिखाई पड़ती थी। इसीलिए आदिलिंग के रूप में अविमुक्तेश्वर को ही प्रथम लिंग माना गया है। इसका उल्लेख महाभारत और उपनिषद में भी किया गया है। पौराणिक कथाओं के अनुसार माता पार्वती से विवाह करने के बाद भगवान शिव कैलाश में रहते थे। लेकिन माता पार्वती अपने पिता के घर में ही रहती थी। ऐसे में जब माता पार्वती ने अपने साथ ले चलने का आग्रह किया तो उनकी बात मानकर भगवान शिव उन्हें काशी लेकर आ गए, जहां उन्हें विश्वनाथ या विश्ववेश्वर नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ है ब्रह्मांड का शासक। ऐसी मान्यता है कि यहां बाबा विश्वनाथ के दर्शन से पूर्व महादेव के दर्शन से पहले भैरव जी के दर्शन करना जरूरी माना जाता है। इसके पीछे मान्यता है कि भैरव जी के दर्शन किए बगैर विश्वनाथ के दर्शन का लाभ नहीं प्राप्त होता। शास्त्रों में बाबा भैरव नाथ को लेकर एक पौराणिक कथा भी मौजूद है। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार एक बार देवताओं ने ब्रह्मा देव और भगवान विष्णु से पूछा कि ब्रह्मांड में सबसे श्रेष्ठ कौन है? ये सवाल सुनकर भगवान ब्रह्मा और भगवान विष्णु में श्रेष्ठता साबित करने की होड़ लग गई। इसके बाद भगवान ब्रह्म, भगवान विष्णु के साथ सभी देवता कैलाश पर्वत पहुंचे और भगवान भोलेनाथ से पूछा कि ब्रह्मांड में सबसे श्रेष्ठ कौन हैं? देवताओं का ये सवाल सुनते ही तत्क्षण भगवान शिव के शरीर से ज्योति कुंज निकली जो नभ और पाताल की दिशा की ओर बढ़ी। इसके बाद महादेव ने ब्रह्मा और विष्णु जी से कहा कि आप दोनों में जो इस ज्योति की अंतिम छोर पर सबसे पहले पहुंचेगा वही श्रेष्ठ कहलाएगा। भोलेशंकर की बात सुनते ही भगवान ब्रह्मा और भगवान विष्णु जी अनंत ज्योति की छोर पर पहुंचने के लिए निकल पड़े। कुछ समय दोनों वापस आ गए। तब शिव जी ने पूछा कि क्या आप दोनों में से किसी को अंतिम छोर प्राप्त हुआ? भोलेशंकर की बात का जवाब देते हुए भगवान विष्णु ने कहा कि यह ज्योति अनंत है और इसका कोई अंत नहीं। जबकि भगवान ब्रह्मा ने झूठ बोल दिया। भगवान ब्रह्मा ने कहा कि मैं इसके अंतिम छोर तक पहुंच गया था। उनकी बात सुनते ही भगवान शिव ने विष्णु जी को श्रेष्ठ घोषित कर दिया। इससे ब्रह्मा जी क्रोधित हो उठें और भगवान शिव के प्रति अपमान जनक शब्दों का इस्तेमाल करने लगे। उनके अपशब्द सुनते ही भगवान शिव क्रोधित हो उठे और उनके क्रोध से काल भैरव की उत्पत्ति हुई। काल भैरव ने ब्रह्मा जी के चौथे मुख को धड़ से अलग कर दिया। उस समय भगवान ब्रह्मा जी को अपनी भूल का एहसास हुआ और उन्होंने उसी समय भगवान शिव जी से क्षमा प्रार्थना की। इसके बाद कैलाश पर्वत पर काल भैरव देव के जयकारे लगने लगे और यह ज्योति द्वादश ज्योतिर्लिंग काशी विश्वनाथ कहलाया। मान्यता है कि भगवान श्री हरि विष्णु ने भी काशी में ही तपस्या कर भगवान शिव को प्रसन्न किया था। काशी नागरी भगवान भोलेनाथ को इतनी प्रिय है कि ऐसा माना जाता है कि सावन के महीने में भोले बाबा और माता पार्वती काशी भ्रमण पर जरूर आते हैं।

मुगलों ने कई बार तोड़ा

भारत में आने वाली चीनी यात्री ह्वेनसांग, जिसने हमारे देश के इतिहास के बारे में काफी प्रमाणिक जानकारी लिख रखी है, ने खुद काशी विश्वनाथ मंदिर के तोड़े जाने का उल्लेख आपने दस्तावेजों में किया है. अन्य इतिहासकारों के लिखे अनुसार 1194 ई. में मोहम्मद गोरी ने इस मंदिर को लूटने के बाद तोड़ दिया था. इसे बाद में फिर से कुछ प्रयासों से निर्मित किया गया, पर 1447 में जौनपुर के सुल्तान महमूद शाह ने इस पर धावा बोलकर मंदिर को फिर से तोड़ दिया. 138 साल बाद बाबा विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग की फिर से सुध

ली गई और 1585 ईस्वी में अकबर के नवरत्नों में से एक राजा टोडरमल मंदिर ने इसके जीर्णोद्धार में रूचि दिखाई। मंदिर की भव्यता के समक्ष इसके आगे और भी बड़े खतरे पैदा होते रहे. मुगल वंश के एक और बादशाह जहांगीर के बेटे शाहजहां को भी इस मंदिर की प्रसिद्धि रास नहीं आई और सन 1632 में उसने भी इसे तोड़ने का फरमान जारी कर दिया. उसने इसे तोड़ने अपने सिपहसालार सहित सैनिक भी भेज दिए थे. उन्होंने काशी विश्वनाथ के आासपास के 63 मंदिरों को तोड़ दिया. जब बाबा विश्वनाथ के केंद्रीय मंदिर को तोड़ने वह लोग आगे बढ़े तो काशी विश्वनाथ के भक्त उनसे टक्कर लेने आगे खड़े हो गए. इस प्रतिरोध के कारण उन्हें केंद्रीय मंदिर तोड़े बिना ही जाना पड़ा. बाद में शाहजहां के बेटे औरंगजेब ने अपने पिता के कदमों पर चलते हुए इस मंदिर पर सबसे बड़ा प्रहार किया. कट्टरवाद से ग्रस्त इस शासक ने 18 अप्रैल 1669 को काशी विश्वनाथ मंदिर को ढहाने का फरमान जारी किया. उसके फरमान को तामील करते हुए पांच महीनों में ही 2 सितंबर 1669 तक मंदिर को तोड़ दिया और औरंगजेब को उसकी मंशा पूरी होने की जानकारी भेज दी गई. औरंगजेब के इस काले कारनामे का उल्लेख शाकी मुस्तइद खान की लिखी किताब मस्सिरे आलमगिरी में स्पष्ट मिलता है. पुराने आर्काइव को संजोने वाली कोलकाता की एशियाटिक लाइब्रेरी में औरंगजेब का उस समय जारी किया गया फरमान आज भी रखा हुआ है और काशी विश्वनाथ मंदिर पर हुए हमले की याद दिलाता है।

मोदी ने रचा इतिहास

जायसवाल क्लब के अध्यक्ष मनोज जायसवाल ने कहा कि इतिहास के पन्नों से भी पुरानी काशी पुरातनता को सहेजे आधुनिकता के रंग में रंग रही है। नित नए विकास के सोपान को गढ़ रही है। पुरानी ख्याति को स्पर्श कर रही है। सरकार विकास को रतार देने संग धर्म, संस्ति, अध्यात्म व बनारसीपन जिंदा रखने की जुगत में लगी है। 2014 से लेकर अब तक काफी कुछ बदल गया है। शहर की बात करें तो गलियों, चौराहों व घाटों को और भी आकर्षक व सुंदर बनाया जा रहा है। इनदिनों गोदौलिया चौराहा से दशाश्वमेघ घाट मार्ग लोगों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

मां गंगा देख रही है बाबा विश्वनाथ का वैभव

तीन लोक से न्यारी है महादेव के त्रिशूल पर बसी काशी। यह वह नगरी है जिसके अधिपति बाबा विश्वनाथ, पालक माता अन्नपूर्णा तथा रक्षकस्वयं बाबा कालभैरव हैं। जहां श्मशान भी शिव की लीलाभूमि है और मां गंगा का अंतिम स्पर्श मोक्ष का द्वार। मृत्युभय से मुक्त काशी जीवन का शाश्वत उत्सव है और आज तो यह उल्लास जैसे गंगा से उठकर आकाशगंगा को छूना चाहता है। अवसर ही ऐसा अवस्मिरणीय है। प्रतीक्षा की घड़ियां समाप्त हुईं, कल सोमवार 13 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी श्रीकाशी विश्वनाथ धाम का लोकार्पण करेंगे। राम मोहन पाठक का आलेखा.....

चर्चित मुहावरा है – अविश्वसनीय किंतु सत्य! अविनाशी काशी में यह मुहावरा चरितार्थ हुआ है, हो रहा है। श्रीकाशी विश्वनाथ धाम की योजना के मूर्तरूप लेने के साथ ही काशी के मर्मस्थल का भूगोल बदल गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट 'श्रीकाशी विश्वनाथ धाम' संकल्पना के रूपाकार ग्रहण करने के साथ ही विश्वनाथ धाम की वर्तमान छवि इसी क्षेत्र में मेरे जीवन के 70 सालों में अर्जित-अनुभूत एक प्रधानमंत्री के विशेष संकल्प की ऐतिहासिक परिणति है। मेरा जन्म इसी विश्वनाथ धाम की भूमि पर, शिक्षा-दीक्षा विश्वनाथ मंदिर द्वारा संचालित विश्वनाथ सनातन धर्म हायर सेकेंडरी स्कूल में, खेलकूद और 'संघ' की शाखा ज्ञानवापी मैदान में और इसी तरह 'बाबा' के अमोघ पुण्यक्षेत्र से मिली ऊर्जा जीवन का संबल बनी। आज गलियों की भूलभूलैया में सिमटा पूरा क्षेत्र सचमुच एक 'धाम' बन चुका है। एक अदम्य साहस और संकल्प के परिणामस्वरूप श्रीकाशी विश्वनाथ धाम का अस्तित्व 'न भूतो न भविष्यति' की प्रतिध्वनि है।

इसे चमत्कार ही कहेंगे। श्रीकाशी विश्वनाथ धाम के लिए क्षेत्र के 400 से अधिक भवनों का अधिग्रहण और कुछ लोगों द्वारा स्वेच्छा से किया गया सर्म्पण सब कुछ अचंभित करने वाला! बचपन से अब तक विश्वनाथ धाम के प्रस्तावित विस्तार क्षेत्र में स्थित अपने पैतृक आवाश, अपनी मातृ संस्था- विद्यालय, गंगाघाट, बचपन के संगी-साथी, बड़े हनुमान मंदिर के अखाड़े, छोटे-बड़े मंदिरों के क्षेत्र का सम्मोहन सब कुछ पर श्रीकाशी विश्वनाथ धाम की वर्तमान

छटा, विस्तार और नयनाभिराम दृश्य सब पर भारी! केवल सांसद ही नहीं, प्रधानमंत्री चुनने के गर्व से गौरवान्वित काशी में यह बड़ा बदलाव है, जिसके हम साक्षी हैं। कल (13 दिसंबर) जब प्रधानमंत्री मोदी श्रीकाशी विश्वनाथ धाम का लोकार्पण करेंगे और 'अपनी काशी' में इसे बाबा और बाबा के भक्तों को समर्पित करेंगे, तब 'इतिहास से भी प्राचीन' (मार्क ट्वेन) काशी या वाराणसी का इतिहास भी स्वयं नया अध्याय लिखेगा।

ऐतिहासिक स्वरूप का विस्तार

वर्ष 2014 के चुनाव के बाद गंगातट से मां गंगा द्वारा खुद को बुलाए जाने की घोषणा करते हुए सांसद नरेन्द्र मोदी ने जो संकल्प व्यक्त किए थे, श्रीकाशी विश्वनाथ धाम परियोजना उसी का मूर्त रूप है। कई स्तरों पर गहन विचार मंथन के बाद यह परियोजना अस्तित्व में आई और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मीदी ने स्वयं 2018 में इसका शिलान्यास किया। आड़ी-तिरछी भूलभूलैया वाली काशी की गलियों के बीच स्थित प्राचीन विश्वनाथ मंदिर तथा पूरे क्षेत्र को एक नया ऐतिहासिक रूप और विस्तार देने के संकल्प के सार प्रारंभ इस परियोजना के अंतर्गत प्राचीनकाल में इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होलकर द्वारा निर्मित प्राचीन मंदिर के भक्तों के लिए आधुनिक सुविधायुक्त परिसर की भेंट इसकी विशेषता है। पश्चिमी देशों में 'गोल्डन टेंपल' नाम से विख्यात इस मंदिर के दो शिखरों को स्वर्णमंडित करने के लिए पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह ने 1,000 सेर सोना दान दिया था। ये दोनों स्वर्ण शिखर आज भी मंदिर की शोभा और पहचान हैं। श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर अपने अस्तित्व काल से ही मुगलों के निशाने पर रहा। परिणामस्वरूप वर्तमान विश्वनाथ मंदिर के परिसर में ही औरंगजेब की मस्जिद है। इसके बावजूद बाबा विश्वनाथ के प्रति आस्था और विश्वास की अटूट परंपरा सदियों से अक्षुण्ण है।

साकार हुआ महात्मा का स्वप्न

श्रीकाशी विश्वनाथ धाम के रूप में महात्मा गांधी का भी स्वप्न साकार हो रहा है। महात्मा गांधी 11 बार काशी आए थे। वे दो बार 1903 और 1916 में काशी विश्वनाथ मंदिर में 'हिन्दू होने के नाते' दर्शन के लिए आए गए थे। मंदिर में सड़े फूलों की दुर्गंध, धूल, गंदगी, कीचड़ से उनका सामना हुआ तो उन्होंने आत्मकथा में लिखा - 'इस महान मंदिर में कोई भी आए तो हिंदुओं के बारे में उसकी क्या सोच होगी और तब वह हमारी निंदा करेगा, क्या वह उचित होगी? क्या इस मंदिर की दशा हमारे चरित्र का आईना नहीं है? एक हिंदू होने के नाते मैं जो महसूस करता हूं, वही कह रहा हूं। अगर हमारे मंदिरों की दशा आदर्श नहीं है तो फिर स्वशासन के माडल को गलतियों से कैसे बचा सकेंगे? जब बाध्य होकर या मर्जी से अंग्रेज हमारे देश से चले जाएंगे, तब इसकी क्या गारंटी होगी कि एकाएक हमारे मंदिर स्वच्छता, पवित्रता या शांति के प्रतिरूप बन जाएंगे।' 1903 में उन्होंने मंदिर के बारे में कहा- 'जिस स्थान पर लोग ध्यान और शांति के वातावरण की उम्मीद करते हैं, वह यहां बिल्कुल नदारद है।'

गंगाधार के समक्ष मां गंगा

मान्यता है कि काशी में बाबा विश्वनाथ को नमन के लिए गंगा ने अपनी धारा ही बदल दी, किंतु विश्वनाथ मंदिर और गंगाधर के बीच अनेक अवरोधकारी निर्माण थे, जिन्हें श्रीकाशी विश्वनाथ धाम परियोजना के अंतर्गत हटाकर गंगा की धारा और श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर के बीच सीधा और निर्बाध समागम-संबंध स्थापित कर दिया गया है। तब मंदिर से गंगा का सीधा दर्शन वस्तुतः अत्यंत जटिल और दुरूह कार्य था परंतु धाम परियोजना में यह संभव हो सका। लोकार्पण के लिए प्रधानमंत्री गंगा घाट से गंगाजल का पात्र लेकर विश्वनाथ मंदिर तक ढाई-तीन सौ मीटर की दूरी पैदल तय करेंगे, जहां देश की विभिन्न पवित्र नदियों से साधु-संतों द्वारा लाए गए जल से बाबा का अभिषेक होगा। देशभर के साधु-संन्यासियों, महंतों, महामंडलेश्वरों सहित विभिन्न पंथो-संप्रदायों के धर्मगुरुओं की उपस्थिति में धाम का लोकार्पण 'बाबा और बाबा के भक्तों के लिए' होगा।

दरबार में मिलेंगी अभूतपूर्व सुविधाएं

श्रीकाशी विश्वनाथ धाम की आकर्षक संरचना और सुविधाएं अभूतपूर्व हैं। भारत के द्वादश (12) ज्योतिर्लिंगों में एक श्रीकाशी विश्वनाथ के मंदिर तक गंगा घाट से गर्भगृह के पास परिसर तक 50 फीट चौड़ा सीधा नया मार्ग, 18 पंच सितारा स्तर के कमरों का अतिथिगृह, 5,000 लोगों की क्षमता का विस्तृत गर्भगृह परिसर, भक्तों के लिए विश्रामगृह, प्रेक्षागृह तथा अन्य सुविधाएं इस धाम की विशिष्टता प्रदर्शित करते हैं। मंदिर परिसर में प्रतिदिन तीन से पांच हजार दर्शनार्थियों, पर्यटकों के लिए तथा श्रावण मास के सोमवार और शिवरात्रि जैसे महत्त्वपूर्ण पर्वों पर तीन लाख लोगों के लिए समुचित प्रबंध किए गए हैं।

विकास का विराट प्रयास

श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर के प्रायः 400 साल का

इतिहास साक्षी है कि मंदिर के भक्तों, श्रद्धलुओं के लिए इतना बड़ा और महत्त्वपूर्ण बदलाव कभी सोचा भी नहीं गया। अदम्य इच्छाशक्ति के बल पर श्रद्धाभाव के पूरित श्रीकाशी विश्वनाथ धाम प्रकल्प अपने पहले चरण की पूर्णता के बाद ऐतिहासिक उदाहरण बनेगा और अनेक के लिए एक चुनौती भी! धाम को 'वास' या निवास के रूप में परिभाषित करते हुए शंकराचार्य ने राष्ट्रीय एकता, धर्म और अध्यात्म के केंद्र के रूप में चार धाम की कल्पना की थी। ये धाम बद्रीनाथ, द्वारिका, पुरी और रामेश्वरम् में स्थापित किए। ये धाम तीर्थयात्रा के केंद्र थे। 1950 तक 'धाम' यात्रा कठिनाई भरी होती थी पर यात्रा के संसाधनों के बाद यहां पहुंचना सुलभ हो गया। हालांकि ये सभी धाम मोक्ष के केंद्र के रूप में रहे हैं। काशी तो प्रारंभ से ही मोक्ष की भूमि रही है। 'काश्या मरणान् मुक्तिः' अर्थात काशी में मरण से मोक्ष प्राप्त होता है, किंतु मोक्षभूमि काशी, काशीतीर्थ और मृत्यु के समय तारकमंत्र से मुक्ति देने वाले शिव, बाबा विश्वनाथ के तीर्थधाम को नमन करती इस परियोजना में तीर्थ विकास के साथ-साथ मोक्षभूमि काशी को जीने लायन बनाने के सत्प्रयास भी शामिल हैं।

श्रीकाशी विश्वनाथ धाम के अंतर्गत 400 करोड़ रुपए की लागत की विकास-विस्तार योजनाओं को लागू करने के प्रथम चरण में निर्मित परिसर के विनायक, विश्वनाथ, अन्नपूर्णा तथा गंगा नाम से बने प्रवेश द्वारों से सीधे मंदिर तक पहुंचने के सुगम मार्ग की ऐसी संरचना बनाई गई है कि सीध ` व कम से कम समय में दर्शनार्थी मंदिर तक पहुंच सकें। मंदिर क्षेत्र के ऐतिहासिक ज्ञानवापी कूप (कुएं) को मंदिर परिसर में 315 साल बाद समाहित किया जाना भी महत्त्वपूर्ण घटना और इस परियोजना की बड़ी उपलब्धि है। काशी विश्वनाथ मंदिर के प्राचीन स्वरूप और इस क्षेत्र के 50 मंदिरों को संरक्षित करने के साथ ही मंदिर क्षेत्र में अन्नक्षेत्र की व्यवस्था, दर्शनार्थियों के लिए चिकित्सा, आवास, मार्केटिंग आदि की सुचारू व्यवस्था महत्त्वपूर्ण है और आकर्षित भी करती है। धाम परियोजना का एक लक्ष्य वाक्य है- 'यादगार यात्री अनुभव'। इन अनुभवों की प्रतिपुष्टि तो भविष्य का विषय है।

अपने में मगन बाबा के भक्त

श्रीकाशी विश्वनाथ धाम का विकासक्रम मेरी आंखों में रचे-बसे विश्वनाथ गली, कालिका गली, लाहौरी टोला, सरस्वती फाटक, ललिता घाट, मणिकर्णिका घाट आदि के बदलाव का साक्षी है।

कभी स्वामी करपात्री जी, संत छोटे जी, गोस्वामी विंदु जी महाराज, विद्यासागर शास्त्री, गंगाधर शास्त्री, कथाकार निर्गुण जी जैसे विद्वानों का क्षेत्र रहे मंदिर के आस-पास के मोहल्लों में ज्ञान की धारा का प्रवाह था। श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर के मुख्य द्वार के ठीक सामने स्थित विश्वनाथ सनातन धर्म हायर सेकेंडरी स्कूल के मेरे छात्र जीवन की और अन्य अनेक स्मृतियां श्रीकाशी विश्वनाथ धाम के रूपाकार ग्रहण करने पर मस्तिष्क में कौंध रही हैं। काशी को 'प्रकाशिका नगरी' और भोलेनाथ की नगरी, भगवान शिव के त्रिशूल पर बसी नगरी की मान्यता है। हजारों ऐसे नेमी भक्त हैं जो बाबा विश्वनाथ के दर्शन किए बिना अन्न नहीं ग्रहण करते। सात दशक की बाबा विश्वनाथ धाम की भूमि की स्मृतियों के सैलाब में डूबते-उतरते 'बाबा जागा' (बाबा जागिए) की प्रार्थना के साथ की स्मृतियां जीवन की पाथेय हैं। यहां के लोगों का जीवन शांतिपूर्ण और मस्ती से भरा है। अनेक तपस्वी साधकों ने इस क्षेत्र में जीवन की विशेष ऊर्जा प्राप्त की है। इस मान्यता के साथ निर्द्वंद्व जीवन बनारसी जीवन की विशेषता है।

अद्भुत है वह अनुभव

श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर के मेरे प्रारंभिक जीवन की स्मृतियां आज भी जीवंत हैं और प्रेरक भी। सबसे महत्त्वपूर्ण घटना थी, जब मेरी अवस्था कोई सात-आठ साल की रही होगी। शरीर का आकार छोटा ही था। प्रतिदिन बाबा के दर्शन करने के क्रम में एक शाम दर्शन करते समय मैं शिवलिंग के अरघे में गिर पड़ा। पंडित जी ने निकाला और डांटा भी कि 'शिवलिंग छूने की क्या जरूरत थी?' इसके बाद पिछले छह दशक में अनेक बार स्वप्न में बाबा के दर्शन होते हैं और पूरा कमरा विश्वनाथ जी के अरघे में भरू फूल-मालाओं, इत्र, चंदन आदि की मिश्रित सुगंध से भरा हुआ सा लगता है। आंखें खुलती है तो सब सामान्य! यह काशी विश्वनाथ क्षेत्र की ऊर्जा हैं, जो सभी के जीवन में शक्तिपात का स्रोत बनती है। श्रीकाशी विश्वनाथ धाम का स्वरूप तो विलक्षण और सुखद है ही, बाबा के आशीर्वाद से इसका कण-कण अनुप्राणित भी है।

रामोहन पाठक
(लेखक दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा,
चेन्नई एवं नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,
प्रयागराज के पूर्व कुलपति है)

काशी विश्वनाथ धाम की भव्यता से हर कोई निहाल

सुरेश गांधी

'जायसवाल क्लब' बनारस

आधुनिकता और प्राचीनता का संगम है श्री काशी विश्वनाथ धाम। नए कलेवर में इसकी भव्यता देख हर कोई निहाल है। जो भी भक्त मंदिर पहुंच रहा, वो पलक झपाएं बगैर निहारता ही जा रहा है, उसके मुख से सिर्फ यही निकलता है वाह मोदी– वाह मोदी। मंदिर की अद्‌भुत छटा, रंग–बिरंगी लेजर रोशनी में डूबा बाबा धाम, गंगा घाट पर दमकती लाइटे, दुल्हन की तरह सजी नावों में नौका विहार, रेत पर पिकनिक स्पॉट, बृज रमा पैलेस, क्रूज, स्वच्छता सब श्रद्धालुओं को मोहित कर रही है। लोगों को आभास हो रहा है पांच सौ बरस पहले ऐसा ही रहा होगा बाबा विश्वनाथ का दरबार।

महादेव के इस नवनिर्मित धाम की भव्यता उनके भक्तों को खूब भा रही है, अभिभूत कर रही है। भक्त काशी विश्वनाथ धाम को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूचि में शामिल कराने की मांग तक करने लगे है। भला क्यों नहीं, काशी विश्वनाथ मंदिर का पांच सौ बरस पहले वाला भव्य स्वरूप जो लौट आया है। मतलब साफ है कि काशी विश्वनाथ धाम के बहाने काशी में इतिहास की एक ऐसी स्वर्ण मंजूषा निर्मित हुई है जो सालों साल तक अपनी ऊर्जा से धर्म–संस्कृति के इस धाम को रोशन करती रहेगी। आज जिस दिव्य एवं भव्य काशी विश्वनाथ धाम की सृष्टि हुई है, वह प्रधानमंत्री मोदी के मस्तिष्क में पनपा ऐसा विचार था जिसने इतिहास का कायापलट कर दिया। द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक काशी विश्वनाथ मंदिर का पुरातन वैभव इस आधुनिक नवनिर्माण के आलोक में और भी प्रकाशमान व गौरवशाली हो उठा है। काशी विश्वनाथ धाम के जरिये इस महान तीर्थ को उसकी ऐतिहासिक, धार्मिक व सांस्कृतिक आभा के साथ मोक्षदायिनी गंगा से जोड़ने वाले प्रधानमंत्री मोदी ही हैं। यह मोदी जी की ही दृष्टि है कि काशी विश्वनाथ मंदिर का जो परिसर पहले 5 हजार वर्गफीट में भी नहीं था, उस परिसर का दायरा अब बढ़कर 5 लाख 27 हजार 730 वर्ग फीट तक हो गया है। मतलब साफ है काशी पुरातनता को सहेजे आधुनिकता के रंग में रंग रही है। नित नए विकास के सोपान को गढ़ रही है। प्राचीन अंदाज के साथ ही पांरपरकि अंदाज को कायम रखने की ही कवायद चल रही है। श्री काशी विश्वनाथ धाम इसका सबसे बड़ा साक्ष्य है। धाम को विस्तार दिया गया पर इसकी पुरातनता से कहीं छेड़छाड़ नहीं हुई। धाम में मौजूद सभी मंदिरों को उचित स्थान दिया गया। इतना ही नहीं, मंदिर जिस दिशा में थे, उसी दिशा में स्थापित किए गए। तंग गलियों को संवारा गया, प्राचीरों को सहेजा गया पर मूल स्वरूप नहीं बदले गए।

नरेन्द्र मोदी जब से बनारस के सांसद हुए हैं तब से शहर से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में विकास का पहिया तेजी से घूम रहा है। 2014 से लेकर अब तक काफी कुछ बदल गया है। शहर की बात करें तो गलियों चौराहों व घाटों को और भी आकर्षक व सुंदर बनाया जा रहा है। इनदिनों गोदौलिया चौराहा से दशाश्वमेघ घाट मार्ग लोगों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। यहां गुलाबी पत्थर से मार्ग को बना दिया गया है। वहीं सड़क के दोनों तरफ के मकानों व दुकानों को एक रंग यानी गुलाबी में रंग–रोगन कर दिया गया है। जिससे यह और भी आकर्षण का केंद्र बन गया है। साथ ही सड़क के दोनों तरफ लगे हेरिटेज पोल शाम होते ही रोशनी से जगमग हो जाते हैं। इससे क्षेत्र की सुंदरता और भी मनमोहक हो जा रही है। जिंदादिल लोगों से भरा यह जिंदा शहर कभी सोता नहीं, बल्कि अपने जर्रे–जर्रे की खबर लेता रहता है। इसके गली–मोहल्लों,

चट्टी–चौमुहानियों पर ठौर बनाए सतर्क निगहबानों की देख–रेख में बनारस आहिस्ता–आहिस्ता बदल रहा है। बता दें,नरेन्द्र मोदी के बनारस का सांसद और देश का प्रधानमंत्री बनने से पहले तक बनारस में भी दुश्वारियों का पहाड़ था। दूसरे शहरों की तरह यहां भी बदइंतजामी थी, सड़कें जर्जर, बिजली–पानी का संकट, कुंड–तालाब कब्जे में वगैरह–वगैरह। समय ने करवट ली और यह कहना गलत नहीं होगा कि बड़े ही कम समय में भी किसी शहर में बड़ा बदलाव लाए जा सकने की बनारस एक जीती–जागती मिसाल है। सांसद मोदी की चाहत के अनुरूप विकास की ओर बढ़े कदमों ने शहर में लटकते बिजली के तारों और उनके घने जाल को गायब करना शुरू कर दिया है। पीएम ने आइपीडीएस की सौगात दी तो शहर की कई कालोनियों और मोहल्लों में बिजली के तार भूमिगत हो गए, अब पूरे शहर में यह कवायद बढ़ चली है। काशी की प्राचीनता से मेल खाते लैंप पोस्टों (हेरिटेज पोल) से निकलती दूधिया रोशनी की चादर जहा जाइएगा, हमें पाइएगा के लहजे में आपका साथ ही नहीं छोड़ेंगी।

ब्रह्मांड रूप में विराजमान हैं बाबा विश्वनाथ

कहा जाता है कि काशी भगवान शिव के त्रिशूल पर टिकी है। दूर–दूर से लोग यहां बाबा विश्वनाथ के दर्शन के लिए आते हैं। काशी को सबसे पवित्र शहरों में से एक माना जाता है। मान्यता है कि भगवान विश्वनाथ यहां ब्रह्मांड के स्वामी के रूप में निवास करते हैं। काशी विश्वनाथ मंदिर भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंग में से एक है। ये ज्योतिर्लिंग मंदिर गंगा नदी के पश्चिम घाट पर स्थित है। काशी को भगवान शिव और माता पार्वती का सबसे प्रिय स्थान माना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के मुताबिक काशी में बाबा विश्वनाथ के दर्शन मात्र से ही पापों से मुक्ति मिल जाती है और मृत्यु के पश्चात मोक्ष की प्राप्ति होती है। वैसे तो ये पूरा जगत शिवमय है। क्योंकि शिव ही इस जगत के आधार हैं। लेकिन काशी के कण–कण में देवत्व की बात कही जाती है। यहां बाबा विश्वनाथ के चमत्कार की ढेरों कहानियां भरी पड़ी हैं। प्रस्तुत है सीनियर रिपोर्टर सुरेश गांधी की विस्तृत रिपोर्ट मान्यता है कि जब पृथ्वी का निर्माण हुआ था तब प्रकाश की पहली किरण काशी की ही धरती पर पड़ी थी। तभी से काशी ज्ञान तथा आध्यात्म का केंद्र माना जाता है। धर्मग्रन्थों और पुराणों में भी काशी को मोक्ष की नगरी कहा गया है, जो अनंतकाल से बाबा विश्वनाथ के भक्तों के जयकारों से गूंजती आयी है। कहते है सावन में यहां आकर भोले भंडारी के दर्शन कर जिसने भी रूद्राभिषेक कर लिया, उसकी सभी मुरादें पूरी हो जाती हैं। जीवन धन्य हो जाता है। गंगा में स्नान करने मात्र से सभी पाप धुल जाते हैं। उसके लिए मोक्ष के द्वार खुल जाते हैं। यहां आने भर से ही भक्तों की पीड़ा दूर हो जाती है। तन–मन को असीम शांति मिलती है। क्योंकि यहां स्वयं भगवान शिव माता पार्वती संग विराजते हैं। तीनों लोकों में न्यारी, धर्म एवं आस्था से जुड़ा शिव की नगरी काशी पतित पावनी मां गंगा के तट पर देवादिदेव महादेव की त्रिशूल पर बसी है। यहां साक्षात बाबा भोलेनाथ मां पार्वती के साथ वास करते हैं, जिन्हें बाबा विश्वनाथ के नाम से जाना जाता है। इन्हें आनन्दवन, आनन्दकानन, अविमुक्त क्षेत्र तथा काशी आदि अनेक नामों से भी स्मरण किया जाता है। शास्त्रों की मानें तो पूरे दुनिया में काशी मात्र एक स्थल है जहां सावन में शिव के साथ मां पार्वती उदयमान रहते हैं और सबको दर्शन देते हैं। यही कारण है की द्वादश ज्योतिर्लिंगों में काशी के बाबा विश्वनाथ प्रधान माने गए हैं। देश भर के भक्त मां गंगा का जल लेकर बाबा विश्वनाथ का जलाभिषेक करते हैं। सावन के महीनों में तो एक लोटा जल चढ़ा देने मात्र से मिल जाता है मां पार्वती संग बाबा विश्वनाथ का भी आर्शीवाद। कहते है सावन में भोलेनाथ के यहां जो अपनी इच्छा लेकर आता है, वो खाली हाथ नहीं लौटता। **इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग 12 ज्योतिर्लिंगों में सातवां स्थान रखता है। द्वादश ज्योतिर्लिंगों में काशी विश्वेश्वर (विश्वनाथ) लिंग एक मात्र ऐसा ज्योतिर्लिंग है जिसके दर्शन मात्र**

से शेष 11 ज्योतिर्लिंगों के दर्शन का पुण्य भी प्राप्त होता है। इस ज्योर्तिलिंग की दर्शन व गंगा स्नान के साथ ही रोजाना सुबह 4 से 6 बजे के बीच दर्शन–पूजन एवं सायंकाल होने वाली गंगा आरती में शरीक होने मात्र से ही श्रद्धालुओं की हर मनोकामनाएं पूरी हो जाती है। यहां जीवन और मौत के चक्र को खत्म कर मोक्ष प्रदान होता है। पतित पावनी मां गंगा साक्षात बाबा विश्वनाथ से चंद कदम की दूरी पर बहती हैं। सोमवार का दिन बाबा को बहुत प्रिय है। काशी में मां गंगा के जल से भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक करने से जन्म–जन्मांतर के पापों से मुक्ति मिल जाती है। काशी शिव भक्तों की वो मंजिल है जो सदियों से यहां मोक्ष की तलाश में आते रहे हैं। **स्कंध पुराण में 15000 श्लोको में काशी विश्वनाथ का गुणगान मिलता है। इससे सिद्ध होता है कि यह मंदिर हजारो वर्ष पुराना है। जो प्रलयकाल में भी लोप नहीं हो सका। कहते है काशी पर जब कोई आपदा आनी होती है तो उस समय भगवान शंकर इसे अपने त्रिशूल पर धारण कर लेते हैं। सृष्टि काल आने पर इसे नीचे उतार देते हैं। इसी स्थान पर भगवान विष्णु ने सृष्टि उत्पन्न करने का कामना से तपस्या करके आशुतोष को प्रसन्न किया था और फिर उनके शयन करने पर उनके नाभि–कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए, जिन्होने सृष्टि की रचना की। अगस्त्य मुनि ने भी विश्वेश्वर की बड़ी आराधना की थी और इन्हीं की अर्चना से श्री वशिष्ठजी तीनों लोकों में पुजित हुए तथा राजर्षि विश्वामित्र ब्रह्मर्षि कहलाये।**

समाज की तरक्की के लिए सभी वर्ग आगे आएं–उपमुख्यमंत्री तारकेश्वर प्रसाद

सिलीगुड़ी। सिलीगुड़ी में कलचुरी वंश के कलवार, कलाल, कलार का अंतराष्ट्रीय एकता महाकुंभ का आयोजन जे.बी. सेवा ट्रस्ट द्वारा किया जो बेहद सफल रहा। कार्यक्रम के आयोजको को बधाई, आयोजन में संपूर्ण भारतवर्ष, नेपाल, भूटान से वरिष्ठ समाजजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा संपन्न हुई यह सम्मेलन जिन उद्देश्यों को लेकर आयोजित किया गया था उसमें काफी सफलता हासिल हुई। श्रीमती अर्चना जायसवाल राष्ट्रीय कलचुरी एकता महासंघ संयोजक ने बताया शिक्षा का एक कोष बनाया जाए, उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों को समाज आर्थिक रूप से मदद करे। समाज के बड़े उद्योगपति एवं उच्च पद पर आसीन समाजबंधु समाजजनों को रोजगार के अवसर में मदद करे। कार्यक्रम संयोजक विपिन बिहारी गुप्ता, सहसंयोजक राजेन्द्र प्रसाद भूटान, राजेन्द्र प्रसाद नेपाल, आयोजक भरत प्रसाद गुप्ता, राजेश गुप्ता, देवनाथ गुप्ता जे.बी. सेवा ट्रस्ट सिलीगुड़ी के सभी व्यक्तियों ने कलवार, कलाल, कलार महाकुंभ में तीन दिनों तक सफलतापूर्वक मेजबानी की। मुख्य अतिथि तारकिशोर प्रसाद उपमुख्यमंत्री बिहार, विशिष्ट अतिथि बसंतलाल साव, श्रीमती अर्चना जायसवाल इन्दौर म.प्र., लालचंद गुप्ता, प्रद्युम्नसिंह डीआईजी, मानव जायसवाल प्रवक्ता तृणमूल कांग्रेस, श्रीमती अंजू चौधरी उपाध्यक्ष उत्तरप्रदेश महिला आयोग, श्रीमती राजश्री गुप्ता दिल्ली, श्रीमती सुनिता सुवालका उदयपुर, रजनीश सुवालका भीलवाड़ा, श्रीमती इंदिरा पटना, राजेन्द्र प्रसाद भूटान, राजेन्द्र प्रसाद नेपाल, राकेश राय सिहोर, किशोर राय नरसिंहपुर एवं पंकज चौकसे मध्यप्रदेश इत्यादि अनेक अतिथि बाहर से पधारे। श्री राजराजेश्वर भगवान सहस्त्रबाहु, भगवान श्री बलभद्र के पूजन–अर्चन, दीप प्रज्जवलन कर संत श्री श्री 1008 स्वामी संतोषानंद देव महाराज महामण्डलेश्वर हरिद्वार, स्वामी प्रणवानंद कर्नाटक, स्वामी ओमप्रकाश दिल्ली के सान्निध्य में कार्यक्रम प्रारंभ हुआ एवं सभी ने आर्शीवचन कहे व मार्गदर्शन दिया। स्वागत भाषण विपिन बिहारी गुप्ता ने दिया व रूपरेखा रखी। श्रीमती अर्चना जायसवाल ने

अपने सारगर्भित उद्बोधन में कहा कि हम सभी कलचुरी वंश के व्यक्ति है व हमारी जाति कलवार, कलाल, कलार है जो कि संपूर्ण भारतवर्ष में फैली है। हम सभी को एक समाज, एक छव के नीचे आकर समाज की व देश की तरक्की में भागीदार होना पड़ेगा। जब भी जातिगत जनगणना हो तो हम प्रमुख रूप से कलवार, कलार, कलाल जाति को उसमें उल्लेख करें ताकि हमारे कलचुरी समाज को सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक फायदा मिल सके। कलचुरी समाज के योगी, हमारे संत, हमारी धरोहर व हमारे गौरवशाली पूर्वजों का इतिहास रहा है, तारकिशोर प्रसाद जी उपमुख्यमंत्री ने सिलीगुड़ी कार्यक्रम में दो दिन रहकर अपना बहुमूल्य समय समाज को दिया व कहा कि हमारा समाज एक सूत्र में बंधे, समाज को हमें ही आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक उन्नति में भागीदार बनाना होगा। हम सबको समाज के स्वजाति बंधुओं की मदद में आगे आना होगा। मुझे आप सबके बीच आकर गौरव महसूस हुआ। समाज बढ़े तो देश भी बढ़ेगा, हम जहां भी कलवार, कलाल, व कलार के रूप में पहचाने जाते है उस पर अलग करें व कलचुरी वंश का नाम रोशन करें, साथ ही कार्यक्रम आयोजकों को बधाई दी।

'गर्मियों के दिनों में डिहाइड्रेशन (Dehydration)' एक ऐसी समस्या है जो शरीर में पानी की कमी के कारण होती है। ऐसा तब होता है जब पानी कम पीने से और ज्यादा पसीना निकलने से शरीर में पानी और नमक का संतुलन बिगड़ जाता है।डिहाइड्रेशन की समस्या किसी भी उम्र के लोगों को हो सकती है।

'डिहाइड्रेशन के घरेलू उपाय (HOME REMEDIES FOR DEHYDRATION)*

1. दही या छाछ का सेवन करें।

2. इन फलों का सेवन करें जैसे तरबूज, खरबूज पपीता, संतरा, केला, खीरा, स्ट्रॉबेरी, अंगूर इत्यादि (कटे हुए फलों का सेवन न करें)।

3. गन्ने, गिलोय,तुलसी आदि का जूस पीए।

4. दिन में 3-4 बार ओआरएस का घोल पिएं या नींबू पानी, नारियल पानी, शिकंजी या अन्य पौष्टिक पेय पदार्थों का सेवन करें।

5. एक दिन में कम से कम 8-10 गिलास पानी जरुर पियें।

Your Health & Diet Coach
Nidhi Singh, 9818907359

डॉ. अशोक चौधरी
अध्यक्ष, जायसवाल जागृति

मेरा जन्म दौलतपुर, हाजीपुर जिला वैशाली (बिहार) में हुआ। मेरे पिताजी स्वतंत्रता सेनानी थे, माँ सामाजिक कार्यों में रूचि रखती थी उन्हीं की प्रेरणा से सामाजिक कार्यों में मेरी सक्रियता बढ़ी। 1971 में लोकनायक जयप्रकाश नारायण का सानिध्य मिला। राष्ट्र के प्रति उनके समर्पण और त्याग से प्रेरणा मिली। 1974 के छात्र आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। MBA, LLB की शिक्षा पूरी करने के बाद बिरला कम्पनी (दिल्ली) में नौकरी मिली। 1977 के लोकसभा चुनाव में स्व. श्री रामविलास पासवान जी से हाजीपुर संसदीय क्षेत्र में नजदिकियां बढ़ी जो आगे चल कर पारिवारिक सम्बन्ध में बदल गया। उनके हिन्दी मासिक पत्रिका "न्यायचक्र" का प्रधान सम्पादक बना। अपनी सामाजिक गतिविधियों का दायरा बढ़ाते हुए 1993 में "जन कल्याण मोर्चा" की स्थापना की । भारत नेपाल मैत्री को मजबूत करने के लिए 1998 में "इन्डो नेपाल जनकल्याण" का चेयरमैन चुना गया। 2007 में मजदूरों के हितों की लड़ाई के लिए आन्दोलन शुरू किया। 2011-12 में बोकारो स्टील वर्कर्स यूनियन एवं दुर्गापुर स्टील, स्टील वर्कर्स यूनियन का अध्यक्ष चुना गया। 2012 के हैदराबाद कन्वेन्शन (अधिवेशन) में देशभर के मजदूर यूनियनों ने मुझे राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक) का अध्यक्ष चुना। हमारी संस्था और मेरे द्वारा गरीब मजदूरों के हितों में किए गए कार्यों को देखते हुए 2015 में कर्नाटक के विश्वविद्यालय ने मुझे डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

सामाजिक मुद्दों को प्रमुखता से उठाने के लिए 2018 में "राजरंग टुडे" हिन्दी पाक्षिक की शुरूआत की।

पिछले 20 वर्षों से जायसवाल जागृति से जुड़ा हूँ। 2021 में आप सभी ने आशीर्वाद देकर मुझे जायसवाल जागृति का अध्यक्ष निर्वाचित किया।

धन्यवाद

आँचल में दूधवाली की आँखों में पानी रोकने का प्रयास करें

- **बांझ रहती तो ऐसी बदत्तर हालत न होती।**
- **कोख सूनी रहती तो अच्छा होता।**
- **जनमते ही तुझे नमक चटाके मार डालती तो आज रोने-भटकने की नौबत न आती।**
- **क्या इसी दिन को देखने के लिये तुझको पाला, पोसा, बड़ा किया था?**
- **अरे जोरु का गुलाम। मैं क्या इतनी ओछी, नीच हो गई?**
- **अरे नालायक! तू मुझको रुलाकर कभी भी सुखी नहीं रह पायेगा।**
- **आज मैं तेरे लिये फालतू हो गई और तेरी पत्नी खास?**
- **दो छींक ज्यादा छींकता था तो तुझको गोद में उठाकर डॉक्टर बाबू के पास दौड़ जाती थी और तू मेरा हाल तक पूछना नहीं चाहता।**

ऊपर के सारे दर्द-भरे बोल इस युग की माताओं के हैं जो आये दिन सुनने को मिलते रहते हैं और तो और कई रोंगटे खड़ी कर देनेवाली खबरें भी अखबारों में पढ़ने को मिल जाती हैं जैसे– जायदाद लिखके न देने पर बेटे ने माँ का खून कर डाला। बेटे-बहू ने मिलकर माँ का गला घोंट डाला। अंधी माँ को बेटे ने शहर के बाहर भीख मांगने के लिये छोड़ दिया। बेटे ने माँ को पागल करार देकर दो साल तक घर के कमरे में बंद रखा।

इन खबरों को पूरा पढ़के और माताओं के दर्द-भरे बोल सुनके जहाँ मन कराह उठता है वहीं आज की हालत को सोचकर बेहद अफसोस भी होता है। क्या जो कुछ भी हो रहा है वह सही है? अगर नहीं, तो समाज चुप क्यों? मानवता मौन क्यों? इन घिनौने अत्याचारों के प्रति सार्वजनिक स्तर पर विरोध क्यों नहीं? इस संदर्भ में समाज की ओर से पारिवारिक–सुधार के प्रयास क्यों नहीं?

उसके बाद जब चंद आधुनिक नारियों को माँ की भूमिका निभाते देखता हूँ तो ताज्जुब होता है जैसे कोई नौकरानी के भरोसे बच्चे को पालने-पोसने से हाथ खींच लेती है। कोई सास-ससुर के हाथों बच्चे की देखभाल की जिम्मेवारी सौंप देती है। कोई-कोई तो स्तनपान कराने से परहेज करती है क्योंकि सुडौलता और सुंदरता को खोने का डर रहता है। जो भी हो आज का युग आपाधापी का युग है, समय कम है और स्वार्थ अधिक, स्वार्थ सिद्धि के लिये बेटा माँ को दुत्कारने के लिये तैयार, वसीयत लिखाने के लिये तत्पर। इसमें माँ असहायावस्था में जीने के लिये विवश होने के साथ-साथ अपने विधवापन पर भी दहाड़ मार-मारकर रोती है। यह सब देख-सुनकर अपना कलेजा फटता है। वाकई में माँ बाप से बड़ा कोई भगवान नहीं, उनकी भक्ति से बढ़के कोई भक्ति नहीं और जो इस सच्चाई को नहीं मानता वो माँ बाप का लायक बेटा नहीं बन सकता।

जिसने माँ को खुश रखा, उसको लाख-लाख सलाम
जिसने माँ को नाखुश रखा उसका जीना हो सदा हराम

-मीनू गुप्ता जायसवाल

राष्ट्रीय महासचिव
मो. 9982660666

दिनांक 09.04.2022

आदरणीय श्री पन्नलाल जी भाई साहब, पत्र मिला

अभिवादन सहित,

स्वजातीय पत्रिका "जायसवाल जागृति" के सफलतापूर्वक 27 वर्ष पूर्ण कर लेने पर हार्दिक बधाई।

हमें प्रसन्नता है कि स्वजातीय समरसता, सहृदयता बढ़ाने और संगठनमूलक ज्ञानवर्धन में जायसवाल जागृति पत्रिका ने अपनी अहम भूमिका प्रमाणित की है।

पत्रिका के राज्य प्रतिनिधि संवाददाता के रूप में मनोनयन हेतु आपके आदेश की पालना में मैं अपनी सहमति प्रदान करता हूँ।

उम्र के इस पड़ाव में भी आपकी ऊर्जावान कार्यशैली से, मैं अत्यंत प्रभावित रहा हूँ, एतएव समाज हित में आप जैसे प्रेरक व्यक्तित्व के संरक्षण का लोभ संवरण नहीं कर पाने की स्थिति में, मैं आपके उत्तम स्वास्थ्य और आशीर्वाद स्वरूप सदैव स्वस्थ बने रहने की ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

सादर।

आपका
(पूरन चंद झरीवाल)

मोहनलाल गुप्त उर्फ भैयाजी हास्य रस को लोकप्रिय बनाने में बनारसी का योगदान

हिन्दी साहित्य के विकास में हास्य रस को लोकप्रिय बनाने में भैयाजी का महत्त्वपूर्ण योगदान है। हिन्दी साहित्य को भैयाजी के योगदान के विषय में डॉ. धीरेन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित 'हिन्दी साहित्य कोश' भाग-2, के पृष्ठ 429 में उल्लिखित है कि- 'भारतेन्दु द्वारा प्रवर्तित हास्य-व्यंग्य की धारा में वस्तु-विन्यास, भाव-भाषा शैली, शब्द चयन आदि सभी दृष्टियों से आधुनिकता का समावेश करने वाले लेखकों में आप का (भैयाजी का) विशिष्ट स्थान है। राजनीतिक, सामाजिक, चेतना से उद्वेलित होकर आप की हास्य कृतियाँ भी प्राय: व्यंग्य प्रधान हो जाती हैं। आप की हास्य कृतियों में भी कहीं नैतिक मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं दृष्टिगोचर होता है। आप द्वारा गद्य और पद्य काव्य रचना की दोनों ही विधाओं का समान रूप से सफल प्रयोग किया गया है।'

समाज में परिव्याप्त चतुर्दिक भ्रष्टाचार को अवलोकित कर भैयाजी का कवि हृदय आकुल हो उठता है वह अनायास ही कह उठता है- 'छल-प्रपंच से भरी हमारी जिन्दगी, साहित्य, राजनीति की धोखा-धड़ी, बेइमानी, बहुरुपिया नेता, आचारहीन समाज सेवक, साहित्यकार, पत्रकार, अध्यापक एवं सामान्य व्यक्ति। संस्था आन्दोलन का उद्देश्य शुद्ध स्वार्थ, जनता की सेवा का अर्थ स्वयं की सेवा, परिवारपालन, स्मारक का अर्थ अपना स्मारक, जयन्ती अभिनन्दन का अर्थ आत्म-विज्ञापन और सहायता-कोश का अर्थ स्वगृह निर्माण कोश। इस प्रकार स्वार्थसिद्ध की प्रतियोगिता में दौड़ते हुए आदमी नहीं घोड़े। आदमी नहीं घोड़े। आदमी का चमड़ा पेड़ की छाल की तरह कड़ा हो गया है। समाज अनुभूति शून्य, हृदयहीन, स्वार्थी व्यक्तियों का समूह हो गया है। ऐसे समाज का पोस्टमार्टम जरूरी हो गया है।'

भैयाजी ने अपने हृदय की उस आकुलता के अनुसार ही 'अरबी न फारसी' में उपर्युक्त समाज को अपने व्यंग्य-बाण से छलनी करने में कोई कमी नहीं की है। व्यंग्य-बाण से विद्ध करने के पश्चात् हास्य का मरहम लगाकर पीड़ा को कम करने का भी प्रयास किया है, क्योंकि कवि का उद्देश्य किसी को पीड़ा पहुँचाना नहीं, प्रत्युत् उसके अन्दर निहित स्वार्थभाव को दूर कर परमार्थ भाव को परिपल्लवित करना है।

'अरबी न फारसी' काव्य संग्रह में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पाये जाने वाले आडम्बरों एवं छाल-छद्म पूर्ण आचरणों पर कवि ने तीव्रतर प्रहार किया है। प्रस्तुत संग्रह चार भागों में विभक्त है। 1. रुबाइयाँ, 2. गजल, 3. बेतुके, 4. गीत। चार-चार पंक्तियों की रुबाइयों में समाज में परिव्याप्त भ्रष्टाचार, छल-प्रपंच, बाह्याडम्बर आदि विभिन्न विषयों पर व्यंग्य बाण बरसाये गये हैं। गजलों का विषय प्राय: प्रेम है। इसमें लम्बी कवितायें हैं। 'बेतुके' में छन्द मुक्त कविताओं का संग्रह है। गीतों में प्रणय याचना से लेकर हिन्दी भाषा के साथ किये जा रहे सौतेले व्यवहार तक को विषय-वस्तु के रूप में चयनित किया गया है। गीत प्राय: व्यक्ति-व्यंजक न होकर वस्तु-व्यंजक हैं। लेकिन गीतों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि भाषा सरस, लयात्मक और गीतों के सर्वथा उपयुक्त है।

वर्ण्य विषय की दृष्टि से प्रस्तुत काव्य संग्रह को निम्न वर्गों में बाँटा जा सकता है। 1. पत्नियों से सम्बन्धित व्यंग्य, 2. कवियों तथा नयी कविता से सम्बन्धित व्यंग्य, 3. भ्रष्टाचार से सम्बन्धित व्यंग्य, 4. सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों से सम्बन्धित व्यंग्य, 5. आधुनिक युवतियों तथा रोमांस से सम्बन्धित व्यंग्य, 6. प्रकीर्ण व्यंग्य।

सदियों से दबी हुई नारी आधुनिक युग में स्त्री शिक्षा के प्रचार-प्रसार के फलस्वरूप अबला से सबला बनने की ओर अग्रसर है। सदियों से पति को परमेश्वर मानकर उसके प्रत्येक सही-गलत बात को शिरोधार्य करने वाली नारी अब उसके किसी गलत आचरण को सहन करने के लिये तैयार नहीं है। इसके साथ ही साथ उसमें स्वच्छन्दता का भी आविर्भाव तीव्रगति से हो रहा है। इसके दुष्परिणामस्वरूप पति किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया है। एक ओर बढ़ती हुई महँगाई, दूसरी ओर उच्चस्तरीय जीवन जीने की आकांक्षा से उत्प्रेरित पत्नी का बढ़ता हुआ व्यय पूर्ण करने में पति स्वयं को असमर्थ पा रहा है। फलत: विवाह-विच्छेद तथा पत्नी के स्वच्छन्द आचरण से पुरुष समाज हीनभावना से ग्रस्त होता जा रहा है। वह पत्नी के समक्ष हाथ जोड़कर

सदियों से पुरुष समाज द्वारा नारी समाज के प्रति किये गये दुर्व्यवहारों के लिए क्षमा याचना करता हुआ दृष्टिगोचर होता है। व्यंग्यकारों ने पुरुष की इस दुर्दशा और विवशता पर व्यंग्यबाणों का तीव्र प्रहार किया। हमारे भैयाजी भी क्यों पीछे रहते। भैयाजी के कथानानुसार– 'आधुनिक पुरुष बुद्धिमान् बनकर नहीं प्रत्युत् बेवकूफ बनकर ही पत्नी का प्यार पा सकता है।'

अक्ल की बात जब मर्द करता है,
अक्ल औरत उधार देती है।
मर्द जब बेवकूफ बनता है,
औरत तब उसे प्यार देती है॥

पत्नी प्रत्येक बात का क्रोध पति पर उतारती है। एक दिन प्रातःकाल ही पत्नी की चाभी खो गयी। पति सोया हुआ था। स्पष्ट है कि चाभी खोने में पति का कोई दोष नहीं है, परन्तु पत्नी क्रोधित होकर पति को ही डाँट रही है। पति महोदय की नींद पलायित हो जाती है–

नींद खुली लगा झनझनायी है थाली,
सुबह-सुबह बिगड़ी है शायद घरवाली।
खुदा खैर करे रक्षा करे काली,
पता चला कि श्रीमती की खोई है ताली॥

सुबह ही क्यों शाम को भी पति महोदय की खैर नहीं। पत्नी सेकेण्ड शो का सिनेमा देखने चली गयी। सिनेमा देखकर घर आयी पत्नी भूखे बच्चे को रोता हुआ देखकर अंगार हो जाती है पति को खरी-खोटी सुनाने लगती है। इस पर भैयाजी कहते हैं–

सेकेण्ड शो जाना था पर मुझसे तो जाया न गया,
लौट कर आयी तो मैं होश में पाया न गया।
गुस्से को आना था आया वह बुलाया न गया,
रो रही बेबी को जरा दूध पिलाया न गया॥

इधर पत्नियाँ क्या करती हैं। पति दिन भर अर्थोपार्जन हेतु परिश्रम करता है और पत्नियाँ अपना समय गप-शप में व्यतीत करती हैं और वेतन हाथ में आन पर उसका हिसाब लेना नहीं भूलतीं। क्या मजाल है कि पति महोदय पत्नी महारानी के आदेश के बिना बीस पैसे का चाय भी अपनी इच्छा से पी लें। आज की पत्नियाँ पत्नी न होकर गिरहकट हो गयीं हैं। इसे देखकर भैयाजी कहते हैं–

हर घर में अदालत होती है, हर बीबी जिरह कर लेती है,
हर मियाँ मुवक्किल होता है हर बीबी एडवोकेट होती है।
हर घर को जेल समझ लें तो हर बीबी जेलर होती है,
जेबों की तलाशी लेती है हर बीबी गिरहकट होती है॥

पति भी कम चतुर नहीं है। वह घर पर रात में देर से आता है और पत्नी द्वारा देर से आने का कारण पूछने पर कोई न कोई बहाना प्रतिदिन बना देता है। एक दिन पत्नी के इसी प्रकार देर से आने का कारण पूछने पर उसने कह दिया कि 'मैं मर गया था'। पत्नी पति के इस अप्रिय वाक्य को सुनकर मौन हो जाती है। इस पर भैयाजी कहते हैं–

आज फिर वही प्रश्न, कहाँ गये थे, कैसे देर हुई?
बोला, 'आज मैं मर गया था।' हार्ट फेल कर गया था।
सच कहता हूँ बड़ी मुश्किल से लौटा हूँ,
श्रीमती जी मौन रहीं बात कुछ ऐसी थी॥

भैयाजी का मत है कि किसी को भी कवयित्री पत्नी न प्राप्त हो, क्योंकि आलोचक, समीक्षक, सम्पादक, प्रकाशक, कविता से अधिक कवयित्री पत्नी पर प्रेम-सुधा की वर्षा करते हैं। वे हठ करके उसका फोटो लेते हैं। अगर चाय का निमन्त्रण देते हैं तो यह कहना नहीं भूलते कि 'भाभी जी को भी साथ लाइयेगा।' इस पर कवि खीझकर कहता है–

प्रातः इन्टरव्यू देती है, दिन में कॉलेज में वह, मैं दफ्तर में,
सन्ध्या को साहित्यिक संगम, निशि में कविता, सूना बिस्तर।
है भूल मैंने भयंकर की जो कवयित्री से शादी की,
क्वारों को आज सुनाता हूँ निज करुण-कथा बरबादी की॥

आज सामाजिक बन्धन शिथिल हो रहे हैं। जब तक स्त्रियाँ रूप से दुर्बल थीं, तब तक वे पति के किसी भी अत्याचार को सहन कर लेती थीं, परन्तु आज वे आर्थिक और कानूनी रूप से सबल हो रही हैं। वे जहाँ स्वेच्छा से पति के कन्धे से कन्धा मिलाकर उसका सहयोग करने के

लिए तत्पर हैं, वहीं यदि वह किसी प्रकार का अत्याचार करता है तो उसका मुँहतोड़ जवाब देने के लिए भी तत्पर हैं। अब पति-पत्नी गृहस्थी रूपी रथ के ऐसे दो पहिए हैं जिनका रथ के सुव्यवस्थित संचालन में समान सहभागिता है। किसी एक के अव्यवस्थित होने पर गृहस्थी रूपी रथ का संचालन सम्भव नहीं हो सकता। आज एक ओर तो पुरुष वर्ग जो सदियों से स्वयं को परमेश्वर और स्त्री को दासी माने हुए है, वह इस सत्य को स्वीकार नहीं कर पा रहा है और दूसरी ओर आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक और विधिक रूप से स्वातन्त्र्य का स्वाद आस्वादित करने के पश्चात् नारी वर्ग किसी भी प्रकार से पुरुष से स्वयं को कम नहीं मान रहा है। दुष्परिणामस्वरूप आज समाज में निःसंकोच रूप से विवाह-विच्छेद हो रहा है। पहले पुरुष बहु विवाह करता था, आज की स्त्रियाँ भी इस बहु-विवाह प्रथा में अपना भरपूर सहयोग प्रदान कर रही हैं। वे एक पति से विवाह-विच्छेद करके किसी दूसरे पुरुष से विवाह करने में किसी भी प्रकार का संकोच नहीं कर रहीं हैं। यहाँ तक कि कुछ स्त्रियों ने तो पाँच-पाँच विवाह किये हुए हैं। कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी हैं जो स्थायी रूप से निमन्त्रण पत्र छपवाकर रख ली हैं जिसमें कि दिन, तारीख और नये पति का नाम लिखना मात्र शेष होता है। विवाह-विच्छेद की व्यवस्था पर भैयाजी ने मर्मस्पर्शी व्यंग्य किया है–

पाँचवीं शादी थी श्रीमती कबाड़ी की,
शादी एक स्वाद है, फैशन है, बस की सवारी है।

बस की सवारी से कवि का विशेष तात्पर्य यह है कि रेल अथवा वायुयान से यात्रा आरम्भ करने पर यह निश्चित है कि यदि कोई दैवी दुर्योग न हुआ तो आप अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँच जायेंगे। रेल और वायुयान से यात्रा करते हुए आप को यथेच्छ रूप से कहीं भी उतरने-चढ़ने की स्वतन्त्रता नहीं होती जब कि बस से यात्रा प्रारम्भ करने पर आप यथेच्छ रूप से कहीं भी किसी भी स्थान पर बस रूकवाकर उतर सकते हैं और पुनः दूसरी बस से यात्रा करने के लिए स्वतन्त्र होते हैं। ठीक यही स्थिति आज दाम्पत्य जीवन में घटित हो रही है। आज यथेच्छ रूप से विवाह-विच्छेद करके पति-पत्नी एक दूसरे से अलग हो जा रहे हैं। वर्तमान में पति-पत्नी के इसी प्रकार के सम्बन्धों के प्रति भैयाजी का एक व्यंग्य द्रष्टव्य है–

धर्मपत्नी जो थीं वाइफ बन गयी,
छुरी काँटा और नाइफ बन गयी।
चरणदासी के चरण अब दाबता,
जिन्दगी भैयाजी लाइफ बन गयी।

पत्नी की डाँट-फटकार से शायर अकबर इलाहाबादी भी खिन्नता का अनुभव करते हैं। वे यह कहे बिना नहीं रह पाते कि–

शेख को मिस ने जो डाँटा तो पुकारा वो गरीब।
देखिये तोप की लाठी ने दबा रक्खा है॥

भैयाजी नये कवि और नयी कविता के प्रति भी व्यंग्य किये बिना नहीं रह सके हैं। आज विभिन्न वादों एवं वर्गों में बँटे हुए नये कवियों की काव्य-रचना को वह कवि ही समझ सकता है, जिसने कविता लिखी है। आज की कविता में वह स्वरस कहाँ जो सूर, तुलसी, मीरा के काव्यों में उपलब्ध होता है। आज की कविता कविता न होकर तुकबन्दी मात्र रह गयी है। इस प्रकार की काव्य रचना को उसी वर्ग के आलोचक और समीक्षक समझते और उसकी प्रशंसा करते हैं, जिस वर्ग का वह कवि है। दूसरा सामान्य सहृदय न तो उसे समझता है और न तो उससे काव्य-श्रवण तथा काव्य पाठ का आनन्द ही प्राप्त कर पाता है। इस सम्बन्ध में भैयाजी करहते हैं–

इस कविता को कवि समझें या अल्ला ताला।
या कि समीक्षक लगता जो रिश्ते में साला॥

भैयाजी का मत है कि कवि तो कवि, समीक्षक की लिखी समीक्षा को भी उसके अतिरिक्त कोई अन्य सामान्य सहृदय पाठक नहीं समझ सकता। उक्त विषय में किसी समीक्षक का ही कथन है–

बात जो कह दूँ कोई क्या समझे,
एक खुद, दूसरा खुदा समझे।
बात लिख दूँ समझ के बाहर की,
डॉक्टर या कोई गधा समझे॥

निराला की क्रान्तिकारी रचना 'कुकुरमुत्ता' के विषय में भैयाजी की व्यंग्योक्ति द्रष्टव्य है–

प्रगटे जहाँ कुकुरमुत्ता से वाद।
भैयाजी वह नगर इलाहाबाद।

नये कवियों की नयी कविता के प्रति भैयाजी की खीझ कहीं-कहीं पर अत्यन्त कटु रूप में प्रकट हुई है। नयी

कविता के प्रति भैयाजी का एक व्यंग्य द्रष्टव्य है–

ये जिन्दगी के मेले
तुफाने बदतमीज, कविता नयी-नयी है।
लगता है कोई धुनिया, धुनता नयी रुई है।
लगता दुलत्तियों से, हैं गूँजते तबेले।
ये जिन्दगी के मेले.....
यह बेतुकी सी कविता, है बेतुकी के बावत।
यह बेसमझ की कविता, क्या समझ की जरूरत।
कुछ बेतुकों तुकों से हैं, मिल गये अकेले।
ये जिन्दगी के मेले.....

भैया जी का जैसा आक्रोश नयी कविता के प्रति दृष्टिगोचर होता है, उसी प्रकार का आक्रोश नवयुवकों एवं नयुवतियों के प्रति भी दृष्टिगोचर होता है। आज के नवयुवकों और नवयुवतियों की वेश-भूषा और आचरण को देखकर भैयाजी को भारतीय संस्कृति रसातल को जाती हुई आभासित होती है। वे इन नवयुवकों के आहार-व्यवहार, वेश-भूषा को देखकर कहते हैं–

फिल्मी धुन और बिखरे-बिखरे बाल हैं,
देश के मजनू बहुत बेहाल है,
ख्वाब में नरगिस, सुरैया झाँकतीं,
भारत के भावी जवाहर लाल हैं।

युवकों के साथ-साथ आज की युवतियाँ भी कुछ कम नहीं हैं। सम्यक् रूप से मेम बन गयी हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि भारतभूमि पर फिल्मी हीरो, हिरोइन ही जन्म ले रहे हैं। भैयाजी उन्हें देखकर कहते हैं–

लड़की हर नरगिस, युवक हर राज है।
तर्ज फिल्मी, रंग, ढंग, अन्दाज है,
कोई जाकर भैया नेहरू से कहो।
देश में अब नरगिसों का राज है॥

भारत अब मजनुओं का देश बन गया है। अब वे घर में नहीं विद्यालयों को भी अपने नाच-गाने का रंगमंच बनाने में तत्पर हैं। यह देखकर भैयाजी कहते हैं–

बन गया कॉलेज सिनेमा हाल है,
बन गया घर नाचघर क्लब बाल है,
रेडियो गाता सिलोन राष्ट्रगीत,
मजनुओं के राष्ट्र का यह हाल है।

पूरन चन्द्र झरीवाल (जायसवाल)

नव संवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा- प्रकृति के उल्लास का पर्व

आप सभी पाठकों को नव वर्ष की बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं यह वर्ष आपके लिए आरोग्य एवं समृद्धि लाए।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का महत्त्व

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत 2079 का आगमन हो चुका है, आइए प्रकृति के इस उल्लास पर्व को हम सब मिलकर मनाते हैं हमारी सनतान संस्कृति का यह पवित्र पर्व है, इस दिन ब्रह्मा जी ने सृष्टि का निर्माण किया था एवं भगवान विष्णु के दस अवतारों में से प्रथम अवतार इसी दिन हुआ था और इसलिए वैष्णव दर्शन में चैत्र मास नारायण का ही एक रूप है और आसपास लहलहाती फसलों को देख सरसों से भरे हुए पीले खेत एवं चारों तरफ सकारात्मकताओं के इस मास में चैत्र शुक्ल नवगी को ही प्रभु श्री राम का जन्म हुआ था। दयानंद सरस्वती जी द्वारा समाज कल्याण हेतु आर्य समाज की स्थापना भी इसी दिन की गई थी।

कालगणनाओं के लिए कल्प, सृष्टि, युगादि आदि समस्त ज्योतिषीय गणनाओ का भी प्रारंभ का दिन है। चैत्र मास का वेदिक नाम मधु मास है अर्थात आनंद से परिपूर्ण मास क्योंकि इसी मास में समस्त वनस्पति एवं सृष्टि प्रस्फुटित होती है चारों तरफ कोयल की स्वर लहरी होती है यह पवित्र दिन इसलिए भी पूजनीय है क्योंकि लंका विजय के पश्चात प्रभु श्री राम के अयोध्या वापस आने के बाद इसी दिन उनका राज्याभिषेक हुआ था सिखों के द्वितीय गुरु श्री आनंद देव जी का भी प्रकट उत्सव है। सिंध प्रांत झूलेलाल जी भी इसी दिन प्रकट हुए थे।

विक्रमादित्य की भांति उनके पुत्र शालिवाहन ने फूलों को परास्त करके दक्षिण भारत में श्रेष्ठ राज्य की स्थापना हेतु शालिवाहन संवत्सर शुरू किया। इसी दिन से हिंदू घरों में नवरात्रि, कलश स्थापना, पताका, ध्वज पूजन से मां की आराधना शुरू होती है। ऐसे ही अनेकानेक महत्त्व लिए यह दिन आता है जोकि हमारी संस्कृति का गौरव हमें दिखाता है अतः आइए हम सब मिलकर इस नववर्ष का भव्य स्वागत करें।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत 2079 का अभिनंदन है.....

नववर्ष आप सभी के लिये मंगलमय हो.....

Symbols in Hinduism

Symbols are easy-way to denote complex ideas. Hindu Dharma is symbolized more particularly by sign or mark of "Om", Swastik, Tilak, etc. Sacred Hindu symbols are considered very auspicious and displayed in homes, work places, temples etc. to invoke good fortunes.

Om(Aum)ॐ :

The significance of Om is as under:

1. This is sacred sound symbol that represents. Universe; the ultimate reality (ब्रह्मन्) (Brahman).
2. It is prefixed and sometimes suffixed to all Vedic mantras and prayers.
3. This syllable is constituted of three sounds i.e. a + u + m. (अ + उ + म्)
4. The pronunciation of Aum moves through all possible human linguistic vowel sounds and is different from the pronunciation of Om.
5. In verse 1, the (माण्डूक्य उपनिषद्) Mandukya Upanishad, the syllable representeall states of time i.e. the past, the present, the futur£and time that transcends time.
6. In verse 2, the Mandukya Upanishad, the syllable represents the four states of Self i.e. seeking the physical, seeking inner thought, seeking the causes and spiritual consciousness, and the fourth state is realizing oneness with the Self, the Eternal.
7. In verses 3 to 6, the Mandukya Upanishad enumerated four states of consciousness: wakeful, dream, deep sleep and the state of (एकात्म) ekatma (being one with self, the oneness of self). These four are A + U + M+ "without an element" respectively.
8. The (श्वेताश्वर) Shvetashvatara Upanishad suggests that Om is a tool of meditation empowering one to know the God within onese if, to realize one's Atman (Soul).
9. The Aum sound is claimed to be cosmic sound.

(स्वास्तिक) Swastika 卐

The significance of swastika which comes from Sanskrit is as under:

1. It denotes a "conducive to well-being or auspicious". The clockwise symbol is calle swastika symbolizing surya (sun) and prosperity, while the counter clockwise symbol is called sauvastika symbolizing night or tannic aspects of Kali.
2. It represents honesty, truth, purity and stability.
3. Its four angles or points also symbolize the four directions, or Vedas.

(तिलक) Tilak

The tilak's worn usually on the forehead on a daily basis or on religious occasions. The tilak is applied with ash (vibhuti), sandalwood paste, red kumkum etc. It has various shapes depending on deities or sects such as three horizontal lines across the forehead, a bindu, U Shape etc. The significance of tilak is as under:

1. As per chapter 2 of (कालाग्नि रुद्र) Kalagni Rudra Upanishad, a Shaiva tradition text, explains the three lines of a Tilaka as a reminder ofvarious triads: three sacred fires (kitchen fire, fire offering made to ancestors and fire of homa), three syllables in - Om (A U M), three gunas (सत्त्व) Sattva, (रजस) Rajas & (तम्स) Tamas), three worlds (earth,atmosphere & heaven), three types of (atman (external, inner and highest self), three powers in oneself (Kriya-action, will power & Brahman-ultimate reality), first three Vedas (Rigveda, Yajurveda & Samveda), three times of extraction of the Vedic drink Soma (morning, midday & dusk extraction of soma).
2. As per (वासुदेव) Vasudeva Upanishad, a (वैष्णव) Vaishnava tradition text, similarly explains the significance of three vertical lines in (ऊध्व पुण्ड्र) Urdhva Pundra Tilaka to be a reminder of Brahma, Vishnu, Shiva; the Vedic scriptures - Rigveda, Yajurveda and Samaveda; three worlds (भू) Bhu, (भुव) Bhuva, (स्वः) Sva r; the three syllables of Qm- A, U,M; three states of consciousness
   - awake, dream sleep, deep sleep; three realities
   - Maya, Brahman and Atman; the three bodies
   - (स्थूल) Sthula, (सूक्ष्म) Sukshma, and (कारण) Karana.
3. Worshippers of the Goddess (Devi) wear a large red dot of kumkum (vermillion or red turmeric) on the forehead.

(कलावा) Moli / Kalawa

This is sacred thread which binds one person to another symbolizing protection provided by one who binds it to another.

(कलश) Kalash

A vessel filled with water, five green mango leaves placed on it and a coconut put on the leaves. The

Kalash is believed to contain amrita, the elixir of life, and thus is viewed as a symbol of abundance, wisdom, and immortality. Metal pot or Kalasha represents material things: a container of fertility - the earth and the womb, which nurtures and nourishes life.The mango leaves associated with Rama, the god of love, symbolize the pleasure aspect of fertility, the coconut, a cash crop, represents prosperity and power. The water in the pot represents me life-giving ability of Nature.

(यंत्र) Yantra

The Sri Yantra or Sri Chakra consists of nine interlocking triangles that radiate from a central point. Of the nine, the four upright triangles represent the masculine side or Shiva; while the five inverted triangles represent the feminine, or the Shakti (Divine Mother). As a whole, the Sri Yanta is used to symbolize the bond or unity ofboth the masculine and the feminine divinity. It can also mean the unity and bond of everything in the cosmos.

(शंख) Shankh (Counchshell)

Shankh or sea shell is used as trumpet in Hindu rituals. Shankh is believed to be a giver of fame, longevity and prosperity, the cleanser of sin and the abode of Lakshmi, who is the goddess of wealth and consort of Vishnu.

Diya or lighting lamp

This symbolizes one of the (पंचभूत) panchbhoth (earth, fire, water, space and air) and treated as sacred.

Shri or Shree

Shri refer to goddess Lakshmi.

Saffron Flag

Dhvaja or flag is a symbol of victory, signal to all that "Sanatana Dharma shall prevail." Its color betokens the sun's life-giving glow.

Hands in prayer

It is a sign of respect for the sacred, that which is dear to the heart.

(पद्म) Lotus (padma)

It is a symbol of purity/transcendence. Growing out of the mud, it is beautiful, and though resting on water, it does not touch it.

(त्रिशूल) Trident (trishul)

It is the symbol of shiva carried by shaivites.

Cow

It is a symbol of purity, motherhood and ahimsa (non-violence).

Lotus feet (of garu or deity)

It is touching the feet of superiors' shows anattitude of submission and service.

विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम

विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 2022 के मौके पर जायसवाल जागृति के संरक्षक एवं दिशा फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष, राजस्थान अलवर निवासी इंजीनियर नवीन प्रकाश जायसवाल को जल एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में किए जा रहे अद्वितीय कार्यों के लिए दो अलग-अलग संस्थाओं के द्वारा सम्मानित किया गया। विवेकानंद नवयुवक मंडल एवं दी इंजिनयर्स एसोसिएशन, अलवर ने शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया। नवीन जी ने कार्यक्रमों में बोलते हुए पर्यावरण की महत्वता के बारे में लोगों को समझाया एवं उन्होंने बहुत सारे छोटे-छोटे तरीके बताएं जिनको प्रत्येक व्यक्ति अपनाकर पर्यावरण एवं जल संरक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है। उन्होंने बताया कि पर्यावरण संरक्षण का मतलब सिर्फ पेड़ लगाना ही नहीं है पेड़ लगाने के साथ-साथ पशु-पक्षी, जानवरों आदि को बचाना भी जरूरी है। पर्यावरण को बचाए रखने के लिए मिट्टी का कटाव, जंगलों की कटाई एवं पहाड़ों को भी बचाए रखना बहुत जरूरी है। दिशा फाउंडेशन के माध्यम से अब तक लाखों लोग विभिन्न क्षेत्रों जैसे की स्वास्थ्य, सड़क दुर्घटनाओं से बचाव, अंगदान, नशा मुक्ति, कैरियर गाइडेंस, प्लेसमेंट गाइडेंस जल एवं पर्यावरण संरक्षण मैं लाभान्वित हो चुके हैं। नवीन जी समाजसेवी, मोटिवेशनल स्पीकर होने के साथ-साथ एक लेखक भी हैं जो विभिन्न जरूरी मुद्दों पर अपने विचार समाज के लोगों के सामने रखते आ रहे हैं। कई सामाजिक एवं प्रशासनिक संस्थाएं उनको सम्मानित कर चुकी है।

नवीन जायसवाल

शुभकामनाएँ

जायसवाल जागृति संस्था तथा पत्रिका की ओर से सभी सुधि पाठकों, सरंक्षकगण, आजीवन सदस्यगणं तथा शुभ चिन्तकों को हरियाली तीज 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के अमृत महोत्सव वर्ष, तथा लीला पुरषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण एवं बलराम जी के अवतरणं दिवस की हार्दिक बधाई एवं बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनाएं

कलचुरि वंश की पौराणिक पृष्ठभूमि – अध्याय एक

भारत के प्राचीनतम राजवंशों में से एक प्रमुख राजवंश है– 'कलचुरि वंश' जिसका पौराणिक, पुरातात्विक व ऐतिहासिक आधार विद्यमान है। इतिहास जानने के पारम्परिक स्त्रोत साहित्य, ताम्रपत्र, शिलालेख, पुरातात्विक धरोहर, दस्तावेज, परम्परा व धार्मिक आस्था के साथ वैज्ञानिक तकनीक के सशक्त माध्यम अनुवांशिक कोड (डीएनए) के द्वारा अनुसंधान एवं अध्ययन से हैहय कलचुरि वंश की प्राचीनता एवं सांस्कृति पहचान स्पष्ट हो चुकी है। मानव सभ्यता के विकास क्रम में कलचुरि वंश की भूमिका व महत्ता को जानने के लिए इस वंश की पौराणिक पृष्ठभूमि का अवलोकन आवश्यक है।

विभिन्न ग्रन्थों में कलचुरियों को हैहय वंशी चक्रवर्ती सम्राट राजराजेश्वर सहस्त्रार्जुन का वंशज बताया गया है, जिनकी गौरवगाथा पुराणों में आख्यापित है। पौराणिक व अन्य ग्रन्थों में भी सहस्त्रार्जुन व उनके पुत्रों का जितना गुणगान मिलता है, उतना अन्य किसी सम्राट का नहीं मिलता है। श्री सहस्त्रार्जुन के वंशजों ने हजारों वर्ष तक भारत व पृथ्वी के अन्य भू–भागों पर राज्य किया है, इसलिए श्री सहस्त्रार्जुन को अपना आराध्य देव मानने वाले केवल भारत में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में कलचुरि व अन्य वंश के करोड़ों लोग हैं, जिनमें हिन्दू, सिख, ईसाई व जैन धर्म को मानने वाले भी हैं। कलचुरियों द्वारा श्री सहस्त्रार्जुन आदिदेव व कुलदेवता के रूप में श्रद्धापूर्वक पूजे जाते है।

वंश परिचय (पौराणिक)

विष्णुपरम्परानुसार श्री विष्णुजी की नाभि से उत्पन्न कमल नाल से ब्रम्हाजी अवतरित होते है, ब्रम्हाजी के नौ मानस पुत्रों में से एक मानस पुत्र महर्षि अत्रि हैं। महर्षि अत्रि व उनकी पत्नी महासती अनुसुईया से चन्द्र हुए, इनसे चन्द्रवंश चला जिसे सोमवंश भी कहते हैं। (चन्द्र द्वारा प्रथम बार सोमरस का पान करने के कारण उन्हें सोम कहा गया है) चन्द्र व तारा से बुध हुए। बुध व इला से महाप्रतापी पुरूरवा हुए जिनकी घोर तपस्या से स्वर्ग की पवित्र नदी नर्मदा का पृथ्वी पर अवतरण हुआ। पुरूरवा व उर्वशी से छः पुत्र आयु, श्रुतायु, सत्यायु, रय, विजय एवं जय हुए। आयु व प्रभा से पाँच पुत्र नहुष, क्षत्रवृद्ध, रम्भ, रजि व अनेना हुए। नहुष व वीर प्रसु (जिन्हें विराज भी कहा गया है) के सात पुत्र यति, ययाति, संयति, अयाति, वियति, कृति व पाश्वर्क का जन्म हुआ। इनमें से ययाति महाप्रतापी सम्राट थे जिनकी दो पत्नियाँ थी। जिनके पाँच पुत्र थे। महारानी शर्मिष्ठा (जो असुर राजा वृषपर्व की पुत्री व दक्ष क नातिन थी) से द्रुह्यु, अनु और पुरू एवं महारानी देवयानि (जो असुर गुरु शुक्राचार्य की पुत्री थी) के यदु और तुर्वसु हुए। ययाति द्वारा वृद्धावस्था में अपने पुत्रों से यौवन की याचना करने पर चार पुत्रों की अस्वीकृति के बाद सबसे छोटे पुत्र पुरू ने पिता का प्रस्ताव स्वीकार किया था, जिससे प्रसन्न होकर ययाति ने पुरू को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। पुरू ने अपने भाईयों को विभिन्न दिशाओं का अधिपति नियुक्त किया व स्वयं प्रतिष्ठानपुर पर राज्य किया। ययाति के पुत्रों में यदु का वंश पुराण प्रसिद्ध है। यदु एवं महारानी सुधात्री के पांच पुत्र सहस्त्रजीत, क्रोष्टु, अनल, अजित व लघु हुए। इनमें आगे चलकर सहस्त्रजीत से हैहयवंश एवं क्रोष्टु से यादव वंश चला। यहां आते–आते चन्द्रवंश (सोमवंश) चौदह शाखाओं में विभक्त हो गया। सहस्त्रजीत (सहस्त्राद) का पुत्र सतजीत था। सतजीत के तीन पुत्र हय, हैहय और वेनुहय हुए। इनमें से हैहय प्रतापी सम्राट था, जिससे 'हैहय वंश' चला, जिसकी यश गाथा पुराणों में पाई जाती है। वंशावली अनुसार हैहय का पुत्र धर्मनेत्र, धर्मनेत्र का पुत्र कुन्ती (कार्त), कुंती का पुत्र संमजिनेय (सहंजन) संमजिनेय का पुत्र महिष्मान (जिन्होंने माहिष्मती की स्थापना की), महिष्मान का पुत्र भद्रसेन (भद्रश्रेष्ण), भद्रसेन का पुत्र

दुर्दम, दुर्दम का पुत्र कनक हुआ। महाराजा कनक के चार पुत्र कृतवीर्य, कृताग्नि, कृतवर्मा और कृतौजा थे। कृतवीर्य के पुत्र अर्जुन हुए जो **कार्तवीर्यार्जुन, सहस्त्रार्जुन व सहस्त्रबाहु** आदि नामों से तीनों लोक में प्रसिद्ध हुए। वंशावली दृष्टव्य है–

पौराणिक वंशावली– (विष्णु परम्परानुसार)

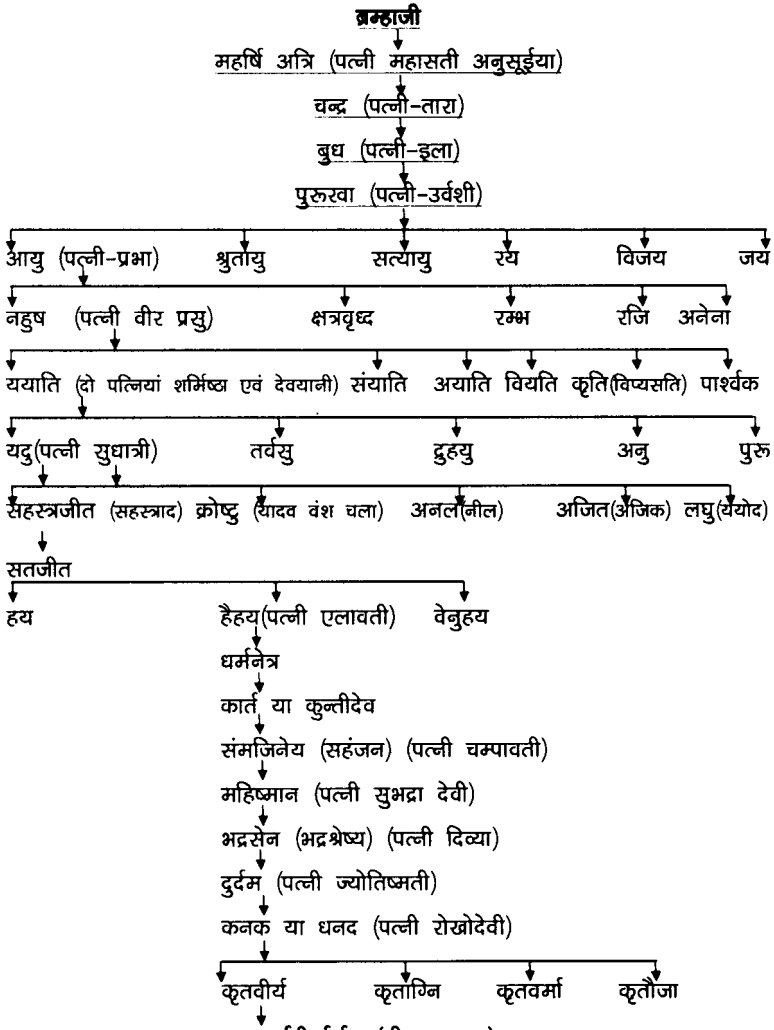

श्री कार्तवीर्यार्जुन (श्रीसहस्रबाहु) की परवर्ती वंशावली

श्रीकीर्तवीर्यार्जुन

- जयध्वज
- शूरसेन
- शूर
- वृषण
- मधु

जयध्वज → तालजंघ (जिसने अवंतिका (उज्जैन) में महाकाल की स्थापना की)

तालजंघ →
- वीतिहोत्र
- तुण्डिकेय (शौंडिक्य)
- स्वयंजात
- भोज
- अवंति (जिसने उज्जैन बसाया)

वीतिहोत्र →
- मधु
- अनंत

अनंत → दुर्जय → सुप्रतीक → (अनेक पीढ़ियों के बाद) → सिन्धु देव (विष्णु देव) → विष्णुदेव की कुछ पीढ़ियों के बाद सरीश्रृप → सुषेण → सुकर्मा → कीर्ति → कौपणसेन → सुद्युम्न (इन्दुनील)

सुद्युम्न (इन्दुनील)

- नील ध्वज
- हंस ध्वज
- मयूर ध्वज

नील ध्वज → प्रवीर → (पीढ़ियों के बाद) ईश्वर दास → महाराजा सुबन्धु (सन् 415-16 ई0) → काकवर्ण (सन् 509 ई0) → महाराजा कृष्णराज (सन् 550-575 ई0)

महाराजा कृष्ण राज को कलचुरिवंश का संस्थापक माना जाता है।

संत हरिदास वृंदावन

अध्यात्मक + का शिक्षा से नाता जोड़ा है
अध्यात्मक + का उपयोगिता से नाता जोड़ा है

ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों को भागवत के माध्यम से Oxford Cambridge University स्तर के उच्चारण की शिक्षा उच्चार पुष्पांजलि व विश्व स्तरीय आंग्ल उच्चारण की शिक्षा दी।

Multinational Companies व उच्च स्तर की सेवाओं हेतू इन्टरव्यु Interview के लिए इनका साहित्य बेहद लाभप्रद है। संस्कार व संस्कृति भी बहुत बड़ी सेवा की है।

इस Cut through competition Age युग में यदि College students भी इस उच्चारण पुष्पांजली को पढ़ेंगे तो उन्हें भी बहुत लाभ मिलेगा। उच्च पद प्राप्ति हेतु साक्षात्कार में यदि कोई प्रत्याशी 5 शब्द भी Oxford University Standard का उच्चारण करता है तो उसका बहुत बड़ा Impression इन्टरव्यू लेने वालों पर पड़ेगा। **IAS, IPS एवं Multinational Companies में पद प्राप्ति हेतु साक्षात्कार में यदि विश्व स्तर का उच्चारण किया जाए तो व्यक्तित्व में चार-चाँद लग जाते हैं।** यद्यपि ज्ञान (Knowledge) का महत्त्व सर्वोपरि है लेकिन उच्च स्तरीय उच्चारण का भी कुछ अंश में महत्त्व है। यह सर्वमान्य सत्य है कि इन्टरव्यू लेने वाले आंग्लभाषा के विद्वान होते हैं। 5-10 शब्दों का भी Oxford स्तर का उच्चारण करने से यह जाहिर हो जावेगा कि प्रत्याशी का Oxford स्तर का उच्चारण का ज्ञान है। प्रभाव Impression डालने के ऐसे ही लटके-झटके होते हैं। दुनियां में ऐसे ही लोग ही आगे बढ़ जाते हैं।

बहुत ही विनम्र भाव में यह स्वीकार करता हूँ कि व्यावहारिक जीवन में हमेशा ऑग्ल भाषा का उच्च स्तर का उच्चारण सम्भव नहीं भी हो तो भी इसका ज्ञान होने से विदेशियों का वार्तालाप समझने में बहुत सहायता मिलती है।

विशेष अवसरों पर यथा इन्टरव्यू आदि में यथा सम्भव उच्च स्तर का उच्चारण ही करने का प्रयास करना चाहिए। इन्टरव्यू चाहे नौकरी अथवा नये सम्बन्धो को जोड़ने के लिये जैसे सगाई (Betrothal) का हो।

उच्चारण के मामले में कालिदास The Shakespear of India का अपनी पत्नी विद्योत्मा के साथ तकरार की कहानी विश्व प्रसिद्ध है। उच्च स्तर का उच्चारण हमेशा प्रभावशाली होता है एवं व्यक्तित्व Personality में चार चाँद लगा देता है।

हिन्दी Dictionary में वर्णित उच्चारण में कई जगह भिन्नता मिलेगी लेकिन घबराने की कोई जरूरत नहीं है। किन्तु जमाना है Impression का। इस Cut throat competition के जमाने में जो जितना Impressive होगा उतना ही आगे बढ़ेगा। जब कबड्डी खेलेंगे तो कबड्डी के नियम काम आवेंगे किन्तु जब क्रिकेट खेलेंगे तो क्रिकेट के नियम काम लेंगे तो और भी शोभा बढ़ जावेगी।

संस्कृत भाषा शत-प्रतिशत नियमों पर आधारित है संस्कृत का उच्चारण भी शत-प्रतिशत संस्कृत की वर्तनी

पर आधारित है। जिसमें कोई फेर बदल संभव नहीं है। किन्तु आँग्ल भाषा में कदम-कदम पर वर्तनी कुछ है तथा उच्चारण कुछ और ही हो जाता है। आँग्ल भाषा पर व्यंग्यात्मक एक फिल्म का गाना सर्वविदित है– Put पुट और But तो मैं क्या करूँ Do डू और Go गो तो मैं क्या करूँ। आँग्ल भाषा के उच्चारण में केवल दो चार प्रतिशत ही नियम काम आते हैं जिनको मैं प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ।

जैसे Present Tense की क्रिया के शब्द के अन्त में P, K, CH, GH, S, SH आवे और उन्हें Past Tense बनाने के लिए D या ED जोड़ा जाता है तो D के स्थान पर T का उच्चारण हो जाता है।

शब्द		अशुद्ध	शुद्ध
Coocked	=	कुक्ड	कुक्ट्
Laughed	=	लाफ्ड	लाफ्ट्
Pushed	=	पुस्ड	पुश्ट्
Passed	=	पास्ड	पास्ट्
Thanked	=	थेन्क्ड	थॉङ्क्ट् थ में cat sound है।

इस पुस्तक में ॅ यह मात्रा का निशान Cat, Bat, Rat sound आवाज के लिये लगाया जावेगा क्योंकि cat को न तो काट, न तो कैट न केट कहा जा सकता है। अतः इस आवाज के लिए ॅ निशान प्रयोग किया गया है।

बहुवचन बनाते वक्त जिन शब्दों के अन्त में B, F, G, V, L या Vowel स्वर आवे तो S एवं ES जोड़ने पर उच्चारण की आवाज S नहीं होकर Z की आवाज हो जाती है। जैसे

शब्द		अशुद्ध	शुद्ध
Bulbs	–	बल्ब्स	बलब्ज़
Bads	–	बेग्स	बॉग्ज़
Loves	–	लवस	लव्ज़
Dogs	–	डॉग्स	डॉग्ज़
Saves	–	सेव्स	सेव्ज़
Lunds	–	लंग्स	लंग्ज़
Rings	–	रिंग्स	रिंग्ज़
Boys	–	बोइस	बोइज़
Names	–	नेम्स	नेम्ज़
Keys	–	कीस	कीज़
Plays	–	प्लेस	प्लेज़

ब में Cat Sound है। राधा लव्ज़ कृष्ण राधा लवस नहीं होगा।

ज के नीचे ़ नुक्ता लगने पर ज़ की साउण्ड उर्दू के नुक्ते ़ के साथ वाली होती है।

जिन शब्दों के अन्त में S, Z, Ch, Sh, । आवे और उनके अन्त में (Suffix) S या ES जोड़ा जावे तो S या ES का उच्चारण IZ हो जाता है।

For Example

Roses	–	रोज़िज़
Bushes	–	बुशिज़
Passes	–	पासिज़
Churches	–	चर्चिज़ या चचिज़

उच्चारण पुष्पांजलि For भावी भागवतकार & College Students

श्रीमद्भागवतपुराण (Discourse I-I)

The eulogy of Sri mad Bhagavata Mahapurana extracted from Padam Puran.

A dialogue between Narad and Bhakti

सच्चिदानन्दरूपाय विश्वोत्पत्यादिहेतवे।

तापत्रयविनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नुमः।। मा.-1-1

कृपया प्रथम पंक्ति में ही 8 English Words के उच्चारण पर ध्यान देने की कृपा करें।

प्रायः नवीन भागवतकार नुमः की मूल धातु नम् (नमस्कार) बताते है। यदि नम् धातु होती तो वयं के साथ नमामः होना चाहिए था जो नहीं है।

नुमः की मूल धातु नु है।

नु का अर्थ है– To praise, To Extol, to Commend, to Make Eulogy, एवं to Gloryfy अतः प्रथम लाइन के अर्थ में कहा जायेगा We make the eulogy or we sing the glory of the Lord who is all truth, all consciousness and all bliss; who is responsible for the creation, sustenance and the destruction of the universe. He avoids the three fold agonies :-

(i) Physical and mental

(ii) Inflicted by other creatures

(iii) Natural Calamities

इस प्रथम श्लोक में ही आँग्लभाषा के कम से कम आठ शब्द ऐसे आये है जिनके उच्चारण में मैने स्वयं आंग्लभाषायां भागवत कथा करते हुए गलतियां की थी। मेरा अभिप्राय यह बिल्कुल नहीं है कि अन्य कथावाचक

ऐसी गलती करते हैं। ये गलतियाँ किसी अन्य वाचक की नहीं है। उम्मीद है नवीन भावी भागवतकार Oxford & Cambridge एवं विश्व स्तर के विश्वविद्यालयों के स्तर का उच्चारण करेंगे।

अंग्रेजी शब्द	निम्न स्तर का उच्चारण	Oxford & Cambridge विश्व स्तर की Universities के स्तर का उच्चारण
Truth	ट्रुथ	ट्रूथ
Ture	ट्रयू	ट्रू
Conscious	कॉनसियस	कॉनशस
Responsible	रेस्पोन्सिबल	रिस्पोन्सिबल
Sustenance	सस्टेनेन्स (स्थिररखना)	सस्टिनन्स
Destruction	डेस्ट्रक्शन	डिस्ट्रक्शन
Agony	अगोनी (तीव्र वेदना)	आगनि (अ में Cat sound है)
Creatures	क्रियेचरस	क्रीचर्स क्रीच (र)स
Creation	क्रीशन (उत्पत्ति)	क्रिएशन
Calamities	केलेमिटीज	कलेमटिज़ (आपदा)
Eulogy	यूलॉजी	यूलजी

नुमः का अर्थ = to Praise या Sing Glory

सूत उवाच

कालव्यालमुखग्रासत्रासनिर्णाशहेतवे।
श्रीमद्भागवतं शास्त्रं कलौ कीरेण भाषितम्॥ मा. -1-11

The sage Sukh expounded the Scripture Srimad Bhagavata with the object of destroying completely the fear of being caught in the jaw of the serpent of time

अंग्रेजी शब्द	निम्न स्तर का उच्चारण	Oxford & Cambridge विश्व स्तर की Universities के स्तर का उच्चारण
Jaw	जा	जॉ जबड़ा
Destroying	डेसट्रोइंग	डिस्ट्रॉइंग
Serpent	सरपेन्ट	(सपन्ट) सरपन्ट
Snake		स्नेक्
Object	ओब्जेक्ट	अब्जेक्ट उद्देश्य

एका तु तरुणी तत्र निषण्णा खिन्नमानसा। मा.-1-38

A young woman was found sitting there distressed at heart.

Woman	वोमेन	वुमन
Women	उमेन	विमिन्

Distressed, upset, unhappy.

भो भोः साधो क्षणं तिष्ठ मच्चिन्तामपि नाशय।
दर्शनं तव लोकस्य सर्वथाघहरं परम्॥ मा.-1-42

Hello! O pious soul stay a while and remove my worry too, your sight is the best means of removing the sins of the world.

अंग्रेजी शब्द	निम्न स्तर का उच्चारण	Oxford & Cambridge विश्व स्तर की Universities के स्तर का उच्चारण
Hallo	हेलो	हलो
Pious	पायस	पाइअस
Sight		साइट दर्शन
Vision	विजिन	विशन
Soul	साउल	सोल

वृन्दावनं पुनः प्राप्य नवीनेव सुरूपिणी। मा.-1-50

Reaching वृन्दावनं have become fresh and beautiful again.

धन्यं वृन्दावनं तेन भक्तिर्नृत्यति यत्र च। मा. -1-61

वृन्दावनं is praise worthy because Bhakti Dances there

Devotion डिवोश्न (veneration) भक्ति

यत्फलं नास्ति तपसा न योगेन समाधिना।
तत्फलं लभते सम्यक्कलै केशवकीर्तनात्॥ मा.-1-68

The fruit which cannot be gained or attained

through askesis, concentration of mind or deep meditation, can be secured or gained by mere or sheer chanting the names and the glory of Shri Krishan.

Chant चेन्ट चान्ट बार-बार उच्चारण (धार्मिक मंत्रों का)

Glory		ग्लोरी	
Penance	पीनान्स	पेनन्स	तपसा
Austerity	ओस्टेरिटी	ऑस्टरटि	
Mortification	मोर्टिफिकेशन	मोटिफिकेशन	

Ascetic, a recluse (असेटिक) (रिक्लूस) (एकान्तप्रिय) तपस्वी

a friar, a hermit हमिट सन्यासी

Asectic असेटिक not allowing yourself to pleasures

Hermitage हरमिटेज हमिटिज ह(र्)मिटिज सन्यासी की कुटिया

सुरर्षे त्वं हि धन्योऽसि मद्भाग्येन समागतः।
साधूनां दर्शनं लोके सर्वसिद्धिकरं परम्स॥ मा. -1-79

You are indeed blessed (ब्लेसिड) O celestial (सलेस्टिअल) दिव्य, स्वर्गीय sage! (सेज) ज्ञानी You have come through may good luck The vision or sight of pious souls is the best means of accomplishing everything in the world.

Pious	पायस	पाइअस्	पावन/पवित्र
Celestial	सेलेस्टियल	सलेस्टिअल	दिव्य

Imprecation then redemption (यही भागवत जी का थीम है)

Blessed	ब्लेसेड	ब्लेसिड	
Imprecation		इम्प्रिकेशन	शाप

श्रीकृष्णचरणाम्भोजं स्मर दुःखं गमिष्यति। मा.-2-1

Remember the lotus feet of sri Krishna and your misery will be gone.

Evil	ईविल	ईव्ल्	दुष्टता, बुराई
Misery	मिसरि	मिज़रि	पीड़ा

न तपोभिर्न वेदैश्च न ज्ञानेनापि कर्मणा।
हरिर्हिसाध्यते भक्तया प्रमाणं तत्र गोपिकाः। मा. -2-18

Sri Hari can be attained neither by austerities nor through (the study) of Vedas nor through spiritual enlightenment nor through even righteous action. He can be attained by devotion only. The cowherdesses of Vrij bear testimony to this fact

अंग्रेजी शब्द	निम्न स्तर का उच्चारण	Oxford & Cambridge विश्व स्तर की Universities के स्तर का उच्चारण
Attain		अटेन्
Testimony	टेस्टीमोनी	टेस्टिमनि (प्रमाण)
Austerity	आस्टेरिटि	ऑस्ट्रेटि है (रिटी) नहीं है कठोरता संयम
Spiritual	स्प्रिच्युल	स्पिरिचुअल, च्युल नहीं होकर चुअल है।

प्रलयं हि गमिष्यन्ति श्रीमद्भागवतध्वनेः।
कलेर्दोषा इमे सर्वे सिंहशब्दाद् वृका इव॥ मा. -2-62

All the evils of Kali will definitely or surely disappear or vanish at the chaning of Srimad Bhagavata as wolves run away or rush at the roar of a lion.

Wolves	वोल्वज	वुल्वज़	भेड़िये
Wulf	वुल्फ	वुल्फ	भेड़िया
Womb	वोम्ब	वूम	
Women	वुमन	विमिन	
Lion-hearted	लोइन हार्टेड	लायन हर्टिड	शेरे दिल

T के बाद ed का id हो जाता है।

Wanted	वान्टेड	वॉन्टिड
Definitely	डेफिनिटली	डेफ़िनट्लि

वेदोपनिषदां साराज्जाता भागवती कथा। मा. -2-67

The story of Srimad Bhagavata has been emanated from the essence of the Vedas and the Upnishads.

Emanated	इमानेटेड	एमनेटिड
Essence	ईसेन्स	एसन्स

इक्षूणामपि मध्यान्तं शर्करा वाप्य तिष्ठति।
पृथग्भूता च सा मिष्टा तथा भागवती कथा। मा. -2-70

Sugar also or too permeates the sugarcane from

the middle to both the ends, but becomes sweeter when separated. The same thing is about the story of Bhagavataa

अंग्रेजी शब्द	निम्न स्तर का उच्चारण	Oxford & Cambridge विश्व स्तर की Universities के स्तर का उच्चारण
Too	टु	टू
Permeate	परमिएट	पमिएट
Middle	मिडिल	मिडल
Separately	सेपेरेटली	सेपर्रट्ली
Separated	सेपेरेटेड	सपरेटिड्

यस्य श्रवणमात्रेण मुक्तिः करतले स्थिता। मा. -3-24

Liaberation is secured within one's plam by mere listening or hearing Srimadbhagwata

Secure सिक्योर सिक्युअर

ग्रन्थोऽष्टादशसाहस्रो द्वादशस्कन्धसम्मितः।
परीक्षिच्छुकसंवादः शृणु भागवतं च तत्॥ मा. -3-26

This scripture consists of 18 thousand slokas and is divided into 12 books and it is in the from of dialogue between Shri Sukh and Parikshit.

Dialogue	डायलोग	डाइओग्	वार्तालाप
Between	बिटविन	बिटवीन	

Dividation नामक अंग्रेजी में कोई शब्द नहीं है। कई लोग ऐसे बोलते हैं कि वेदव्यास जी ने वेद का चार भागों में डिवाइडेशन किया है डिवाइडेशन नाम का कोई शब्द नहीं है, किन्तु डिवाइडेशन की जगह Division शब्द प्रयोग करना सही है।

Thousand थाउजेन्ड थाउजन्ड,

त्वं तु यास्यसि गोविन्द भक्तकार्यं विधाय च।
मच्चित्ते महती चिन्ता तां श्रुत्वा सुखमावह॥ मा. -3-55

After accomplishing the object of your devotees, O the protector of cows! you are going. My mind is full of great anxiety. Kindly listen to me and make me happy.

Accomplish एकोम्पलिश अकम्पलिश, अकोम नहीं बोलना है।

Devotee डिवोटी ड्वोटी, डवोटी (लेकिन डिवोशन में इ की मात्रा लगेगी) जैसे

Devotion	डेवोशन	डिवोशन
Anxiety	एन्गजायटी	ऐङ्जाइअटि
Listen	लिसिन	लिसन है।

आगतोऽयं कलिर्घोरो भविष्यन्ति पुनः खलाः।
तत्सङ्गेनैव सन्तोऽपि गमिष्यन्त्युग्रतां यदा॥ मा. -3-56

As terrible Kaliyuga is imminent so the wicked people will appear again and due to their mere or sheer company even the saints will develop ferocity.

Wiked	विकेड	विकिड	
Imminent	इमीनेन्ट	इमिनन्ट	सन्निकट
Ferocity =	फेरोसिटि	फरॉसटि	भयंकरता क्रूरता
Ferocious	फेरोसियस	फरोशस	क्रूर

भक्तावलम्बनार्थाय किं विधेयं मयेति च। मा. -3-60

What should be done by me for sustaining my devotees ? (Sri Hari thought within himself)

स्वकीयं यद्भवेत्तेजस्तच्च भागवतेऽदधात्।
तिरोधाय प्रविष्टोऽयं श्रीमद्भागवतार्णवम्॥ मा. -3-61

Sri Hari infused all his glory and power within Bhagavata and disappeared in the ocean of Srimad Bhagavata.

Infuse-		इन्फ़्यूज
Ocean-	ओसन	ओशन
Disappear-	डिसऐपियर	डिसअपिअर्

तेनेयं वाङ्मयी मूर्तिः प्रत्यक्षा पर्तते हरेः।
सेवनाच्छ्रवणात्पाठाद्दर्शनात्पापनाशिनी॥ मा.-3-62

Therefore this is obviously visible verbal manifestation of Sri Hari himself. It vanishes all sins by being waited upon, heard, read of seen.

अंग्रेजी शब्द	निम्न स्तर का उच्चारण	Oxford & Cambridge विश्व स्तर की Universities के स्तर का उच्चारण

जायसवाल जागृति की नव निर्वाचित कार्यकारिणी

जायसवाल जागृति की आमसभा की बैठक 28 नवंबर, 2021 को पंडित मदन मोहन मालवीय सभागार, नई दिल्ली में संपन्न हुई। बैठक में सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारियों व कार्यकारिणी के सदस्यों का चुनाव किया गया:

मार्गदर्शक

श्री पन्ना लाल जायसवाल संरक्षक 8882828808
श्री अशोक कुमार जायसवाल 9818581776
श्री कृष्ण दास चौधरी 9868801751
श्री कैलाशनाथ गुप्ता 8882019312
श्री ओमप्रकाश आर्या 9911155285

1.	डॉ. अशोक कुमार चौधरी, अध्यक्ष	9810056923
2.	श्री बृजमोहन जायसवाल, महासचिव	9868241044
3.	श्री पंकज जायसवाल, कोषाध्यक्ष	9818426123
4.	श्री शिवकिशोर जायसवाल, उपाध्यक्ष	9818890990
5.	श्री छोटे लाल गुप्ता, उपाध्यक्ष	9818334111
6.	श्री माखन चौधरी, उपाध्यक्ष (वित्त व्यवस्था व ऑडिट)	9650998902
7.	श्री सुधीर कुमार मनहर, उपाध्यक्ष	9810007360
8.	श्री कृष्णा कुमार भगत, उपाध्यक्ष (वैवाहिकी)	9650615682
9.	श्री बृजेश कुमार, उपाध्यक्ष (विधि व्यवस्था)	9810528057
10.	श्री अवधेश शाह, संगठन सचिव एवं विस्तार	9868338671
11.	श्री अनिल कुमार जायसवाल, राष्ट्रीय सचिव (विज्ञापन संयोजक)	9868338671
12.	श्री मनोज शाह, राष्ट्रीय सचिव (संगठन विस्तार)	9891237738
13.	श्री शंकर चौधरी, राष्ट्रीय सचिव (संगठन विस्तार)	9910987056/9868039033
14.	श्री आदित्य वर्धनम, राष्ट्रीय सचिव (संगठन विस्तार)	9818389050
15.	श्री गोपालजी जायसवाल, सचिव (वैवाहिकी)	9350150583
16.	श्री नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल, प्रधान सम्पादक, जायसवाल जागृति	9582793033
17.	श्रीमति मीनू जायसवाल, कार्यकारिणी संपादक, पत्रिका व महिला प्रकोष्ठ	9891232016
18.	श्री अजय जायसवाल, सचिव युवा संगठन एवं सोशल मीडिया	9990372173
19.	श्रीमति वीना जायसवाल, सदस्य राष्ट्रीय कार्यकारिणी (विज्ञापन सहयोग)	9818435757
20.	श्री किशोर जायसवाल, सदस्यराष्ट्रीय कार्यकारिणी (विज्ञापन सहयोग)	9650307120
21.	श्री जुगल किशोर गुप्ता, सदस्य, राष्ट्रीय कार्यकारिणी (सांस्कृतिक आयोजक)	9891148185
22.	श्री हरिशंकर जायसवाल, सदस्य, राष्ट्रीय कार्यकारिणी	9811131914
23.	श्री नवीन प्रकाश जायसवाल, सचिव युवा संगठन	8802372297
24.	श्री नरेंद्र जायसवाल, सदस्य राष्ट्रीय कार्यकारिणी (विज्ञापन सहयोग)	

सस्था के लिए नए सदस्य बनाना एवं जागृति का विकास करना पदाधिकारियों का दायित्व होगा।

जायसवाल जागृति

आजीवन सदस्यता आवेदन पत्र

1. पूरा नाम .....

2. शैक्षिक योग्यता .....

3. आवासीय पता .....

.....

.....

पिन कोड :.....

फोन : .....

4. व्यवसाय / कार्यालय .....

.....

.....

पिन कोड :..... फोन/मो. : .....

5. विशेष सामाजिक कार्य

प्रस्तावक :

आवेदक के हस्ताक्षर

अनुमोदक (महासचिव)-M. 9868241044

आजीवन सदस्यता शुल्क : रू : 1500/-

भुगतान विधि : चेक, ड्राफ्ट, ऑनलाइन

जायसवाल जागृति खाता विवरण :-

Axis Bank खाता संख्या 015010100247337, IFSC UTIB 0000015

ONLINE भुगतान के तुरंत बाद

कुर्यात् सदा मंगलम्

नए पोस्टल नियमों के अनुसार पते पर पिनकोड लिखना अनिवार्य हैं। बेहतर होगा यदि आप या तो दो मोबाइल नं. दें अथवा एक मोबाइल और एक लैंडलाइन टेलीफोन नम्बर भी अवश्य दें।

वैवाहिकी

नोटः सदस्यों/पाठकों की सुविधा हेतु 'वैवाहिकी' को अंग्रेजी अल्फाबेट्स के क्रम में अर्थात अभिभावकों के नामों के अनुसार (वर्णक्रमानुसार) संकलित/वर्गीकृत किया गया है। मांगलिक एवं सामान्य वर्ग को अलग-अलग शीर्षक के अंतर्गत दर्शाया गया है।

''वैवाहिकी' शुल्क

प्रत्येक अभिभावक / विज्ञापनदाता से अंतिम पृष्ठ पर ग्राहक / सदस्यता के लिए दर्शाए गए 1500/ रु. के शुल्क में वैवाहिक विज्ञापन के प्रकाशन का शुल्क शामिल है। पत्रिका की एक प्रति उन्हें भेजी जाएगी। सुधी एवं सम्मानित विज्ञापनदाताओं से यह भी आग्रह है कि वे पत्रिका में विज्ञापन के जरिए विवाह तय होने पर मंगल-निधि के रूप में अपनी सामर्थ्य के अनुसार यथेष्ट सहयोग राशि भेजने की कृपा अवश्य करें, क्योंकि इस स्तर की पत्रिका के प्रकाशन पर संस्था को आर्थिक व्यय का भार भी वहन करना पड़ता है।

विवाह सम्बन्ध तय हो जाने पर प्रधान/कार्यकारी संपादक महोदय को सम्बन्धित क्रम संख्या का हवाला देते हुए टेलीफोन अथवा कोरियर द्वारा पत्र भेजकर तुरंत सूचित करें। सदस्यता शुल्क अथवा विज्ञापन की राशि नीचे दिए गए पते पर भेजें। हमारे **AXIS Bank** के **A/C No. 0150101-00247337 IFSC-UTIB-0000015** में सीधे जमा कराके हमें तदनुसार सूचित करें। स्मरण रहे, **Net-Banking** द्वारा जमा की गई राशि की रसीद या उसकी प्रतिलिपि सलंग्न करना नितान्त अनिवार्य है।

'विशेष सूचना'

''वैवाहिकी स्तम्भ'' के अंतर्गत 'मांगलिक वर्ग' एवं 'सामान्य वर्ग' के अतिरिक्त एक तीसरा वर्ग *''तलाकशुदा (Divorcee) विधुर, विधवा आदि अन्य वर्ग''* भी आरम्भ किया गया है। हालांकि हमारी दृढ़ मान्यता है कि परिवारों में यह नौबत किसी भी स्थिति में आनी ही नहीं चाहिए। हर स्थिति में विवाह की पवित्र संस्था का प्रत्येक पक्ष को सम्मान देते हुए उसे बरकरार रखना चाहिए। किंतु देखा गया है कि कहीं मिथ्या दंभ व **Ego** के कारण तो कहीं अन्य अपरिहार्य कारणों से अलगाव प्रत्येक पक्ष के लिए अवश्यम्भावी हो जाता है। अतः जीवन के बिखरे सूत्रों को नए सिरे से पिरोना भी अनिवार्य हो जाता है। इसलिए इस विशेष वर्ग की आवश्यकता की पूर्ति के लिए यह वर्ग आरंभ किया गया है। यदि कोई सज्जन अपना या लड़के-लड़की का नाम गोपनीय रखना चाहते हैं तो इसकी भी व्यवस्था की जा सकती है। ऐसे बंधुगण या तो हमसे या फिर संबंधित क्रमांक विशेष के टेलीफोन नम्बर से सम्पर्क कर सकते हैं। ''सर्वे भवन्तु सुखिनः''। अस्तु।

आजकल समाज का एक बड़ा वर्ग प्रोफेशनल कारणों से विदेशों में स्थायी या अस्थायी रूप से बस गया है। इनकी ओर से भी अपने संतानों के वैवाहिक सम्बन्ध के लिए हमारे पास पूछताछ हो रही है। अतः इस वर्ग विशेष की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अनिवासी भारतीय **(NRI)** वर्ग स्तंम्भ आरंभ किया गया है।

विशेष सूचनाः जिन वैवाहिक विज्ञापनदाताओं का विज्ञापन पिछले तीन वर्षों से लगातार प्रकाशित किया जा रहा था, उनके वैवाहिक विज्ञापन अब प्रकाशित नहीं किए जा रहे हैं। अतः ऐसे जो भी विज्ञापन-दाता पुनः आगे भी अपने वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित कराने के इच्छुक हैं, वे कृपया हमारे कोषाध्यक्ष श्री माखन चौधरी से तुरंत सम्पर्क करके **M-9911213033/9650998902** *एवं 1500/-रु. का शुल्क अदा करके विज्ञापन पुनः प्रकाशित करवाने का कष्ट करें।*

*राशि रेखांकित चेक, रेखांकित बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा ''जायसवाल जागृति'' के नाम से देय होना चाहिए। शुल्क भेजते समय अपना पूरा पता, पिन कोड आदि स्पष्ट लिखें ताकि पत्रिका आपको नियमित रूप से मिलती रहे। विशेषः- जिन सज्जनों को डाक से पत्रिका प्राप्त करने में असुविधा हो रही हो, वे कृपया 200 रु. (दो सौ रुपये) वार्षिक शुल्क अलग से प्रेषित कर कोरियर अथवा **Regd. Post** द्वारा पत्रिका मंगवा सकते हैः-*

-संपादक

(कृपया वैवाहिकी सहयोग के लिए अन्तिम पृष्ठ देखें)

अनिवासी भारतीय (NRI) वर्ग

1. **अभिभावक**-Anil Kumar Jaiswal (Engineer), Prop. Shubham Builders, H.No. 2708, DLF City, Phase-IV, Gurugram, (Near Galaria Market Shopping Complex), M.9811663284, (0124) 2386815

   पुत्र-Abhimanyu Jaiswal, DOB, 27 January 1994, 5'9", MBA Finance (New York USA) Noridian Healthcare Solution, LIC Compensation Consultant, House: West FARGO, North Dakoota, U.S. Phone: (940) 3909979

2. **अभिभावक-डा. देवेन्द्र कुमार जायसवाल (बहरीन के अस्पताल में डॉक्टर) माताजी: प्रीति जायसवाल (बहरीन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की लेक्चरर) फोन न.-91. 9871971380, (+973) 5393228 बहरीन) कोठी C-565 NRI City, Sector Omega-II, Greater Noida, U.P.**

प्रतिष्ठित परिवार, अधिकांश दिल्ली में
पुत्री–नेहा जायसवाल, जन्मतिथि–23-8-1994, 5'2'', साफ रंग गेहुँआ, Doing Master in Computer System in Australia (Final Semester).

3. **अभिभावक :** श्री मनोज कुमार गुप्ता, (Sr. Sec. Officer Afcs) 1240/C-5 प्रीत विहार, चाणक्य अपार्टमेंन्ट के सामने आदर्श नगर, नमोदा रोड, जबलपुर-482001 (मध्यप्रदेश), Ph : 09752418123, 8349231125 **पत्र व्यवहार का पता:** श्री श्रीराम जायसवाल Retd SP/CBI, 10 शांति निकेतन, 89, नर्मदा रोड, जबलपुर (म.प्र.)-482001
पुत्र : सोमेश कुमार, 22-4-1991, (5:10 AM, जबलपुर) 5'6", सुन्दर स्मार्ट, B.Tech. MS(CS), मोर्गन स्टेनली में Technical Associate, न्यूयार्क (अमेरिका) पैकेज 1 लाख डॉलर +बोनस।

मांगलिक वर्ग

A1. **अभिभावक :** श्री अनिल कुमार जायसवाल (Retd Judge) गोरखपुर, 215-एन-19, विकास नगर आवासीय कालोनी, खेतान अस्पताल के पीछे तथा झूलेलाल मंदिर के निकट पो. एवं जिला गोरखपुर-273007 (उ.प्र.)M: 8009243232, 08174987887
पुत्र : आदित्य, 9-1-1986, (गौरखपुर-उ.प्र.) मांगलिक 5'11" गोरा, LLB (दिल्ली), उ.प्र. सिविल जज (न्यायधीश) हेतु सुंदर सुशील गोरी शालीन बधू अपेक्षित।
पुत्री : संजना जायसवाल, 10-5-1988, (गोरखपुर-11.16 दिन में) 5'3" गोरी, MBA (HR) बैंक ऑफ बड़ोदा में आफिसर हेतु सरकारी बैंक प्रतिष्ठित मल्टीनेशनल कं. में अधिकारी पद पर कार्यरत सुयोग्य वर अपेक्षित।

2. **अभिभावक :** श्री बलजीत कुमार जायसवाल 5/सी, एवन कालोनी, नवीन नगर, सहारनपुर (उ.प्र.)-247001 M : 9412453810
पुत्र : डॉ. कमल जायसवाल (आंशिक मांगलिक), 5'8", 15-9-87, गेहुंआ, B.P.T, MPT (Neuro physiothe rapist नोएडा स्थित Health Care Comp. Pvt में कार्यरत, पैकेज 5 लाख रुपये वार्षिक।

3. **अभिभावक :** मदन लाल जायसवाल, पीठ बाजार, ज्वालापुर हरिद्वार (उत्तराखण्ड)-249407, (M) 9012654987
पुत्री : ज्योति जायसवाल (मंगली), 14-8-1989 5'4", एम कॉम, बेसिक कम्प्यूटर, दिल्ली।

4 **अभिभावक: राजकिशोर जायसवाल,** A-106/1, Fourth Floor, Joshi Colony, I.P. Extension, Delhi-110092, Mob-9717546924, 9810950426
पुत्री (1)- रीतू जायसवाल (मांगलिक) 11-8-1990, 4'9", colour Normal, B.com (Hons) CA (Inter)
पुत्री (2)- अल्का जायसवाल (आंशिक मांगलिक) 2-10-1992, 4'9", colour wheatish, B.Com (Hons), CA (Foundation)

5. **अभिभावक- श्रीमती अन्नपूर्णा गुप्ता पत्नी स्व. श्री संतोष कुमार गुप्ता,** म. नं. 1306, गली नं. 23, शहीद भगत सिंह कॉलोनी, वैस्ट करावल नगर, दिल्ली-110094, M.-9818289471, 011-22933951
पुत्री- सृष्टि (मांगलिक), जन्म 30-9-1989, जन्म समय शाम 6:00 बजे दिल्ली में, 4'10" गोरी, बी.ए., मास्टर डिग्री मॉंश कमनिकेश्न, रेडियो, टी.वी. जनर्लिज्म डिप्लौमा, सर्विस Asst. Managar Marketing, Salary 20,000 P.M.

6. **अभिभावकः विजयकुमार जायसवाल**-टिम्बर मर्चेन्ट, सी-94/1, चन्द्रपुरी, चांदबाग, भजनपुरा रेडलाइट के पास, दिल्ली-110094 फोन नं. 09999285302
पुत्री-मेघा, (मांगलिक) जन्मतिथि-04 अगस्त 1989, 7 बजे सायं (दिल्ली), साफ रंग, 5 फिट 2 इंच, शिक्षा-**सी.ए., एम. बी.ए.** प्राइवेट कम्पनी ओखला, दिल्ली में कार्यरत, पैकेज 10-12 लाख वार्षिक। स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

7. **अभिभावक :** अनिल कुमार जायसवाल, 41/1-A/1 गली.14, ईस्ट आजाद नगर, कृष्णा नगर, दिल्ली-110054, M : 9210705572
पुत्र (1) : हिमांशु जायसवाल **(मांगलिक),** B.A. 5'8" जन्म 17-2-1993 (9.30 AM, Delhi) गोरा, प्रो. मयंक एंटरप्राइस (Ladies garments & Accessories) तथा Lace के होलसेल व्यवसायी। **आय-2 लाख रुपये मासिक।**
पुत्री (2) : आकांक्षा **(मांगलिक),** 5'3" जन्म 17-2-1993 (9.05 AM Delhi) गोरी, MBA (final) from DU.

8. **अभिभावक :** श्री जुगल किशोर जायसवाल (व्यवसायी) मण्डी चौक, विकासनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
पुत्री : स्वप्निल जायसवाल, (आंशिक मांगलिक) M.Tech (Comp. Sc), 5'4", 26-10-1989, (8.35AM, देहरादून) MNC नोएडा में कार्यरत, पैकेज 2.50 लाख रुपये।

9. **अभिभावक**–श्री मेधाव्रत जायसवाल (Gift shop business) जायसवाल होम अप्लायेसेस, 171, ठठेरी बाजार, सुल्तानपुर **फोन न.**–8090242532, 8765770123 (whtsapp) 8896404464, 9208747409
पुत्र–अनुदीप जायसवाल **(मांगलिक)**
जन्मतिथि–12-9-1980, (खंडवा, म.प्र.) 5'8', M.C.A. Sr. Software Engr. in Nokia solutions and Network Noida, He wishes to settle in Delhi, पैकेज 18 लाख

10. **अभिभावक**–श्री शिव प्रसाद जायसवाल (दिल्ली सरकार में Class-I अधिकारी) पता–391 F, पॉकेट-2, फेज-I, मयूर विहार, दिल्ली-110091(011)-22753484, **फोन न.**–9599959013
पुत्र–अप्रतिम जायसवाल (मांगलिक) जन्मतिथि–4-8-1992, (8.03 PM इलाहाबाद) 6'1', गेहुआ B.Tech, fidelity International, नोएडा में कार्यरत, पैकेज 10 लाख।

11. **अभिभावक**–श्री तेज नारायण जायसवाल (प्रतिष्ठित व्यवसायी) 104A/360, रामबाग, कानपुर-208012(उ.प्र.) M.-9839027212, 9657129022 Email : aalekhjaiwswal@yahoo.com
पुत्र–आलेख (आंशिक मागलिक) एकलौता पुत्र, 23-06-1990, 5'8" गेहुआ आकर्षक एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व प्रशिक्षित

B.Tech, Business हेतु प्रोफेशनली क्वालिफाइड या टीचर कन्या को वरीयता।

12. **अभिभावक–**श्री विनोद गुप्ता, F-111-A, Sector-11 प्रताप विहार, विजय नगर, गाजियाबाद–201009, 9910922437, 8744817069
पुत्री–सुजाता (**आंशिक मांगलिक** की छाया 28 वर्ष की आयु में समाप्त हो गई) जन्म–15-7-1990, (12.02 AM नूरपुर बलिया) 5'3', गेहुआ BBA, Pursuing MBA, नोएडा एक्सपोर्ट कं. में Accountant (पैकेज 2.50 लाख), साफ रंग।

13. **Father-** Prabhat Govt. Servant, Address 35A, Pocket B, DDA Flats MIG, Dilshad Garden, Delhi Phone 9213494606
Daughter : Dr. Pooja Jaiswal, DOB 01/08/1994, Time 12.05 PM (Place Vivek Vihar, Delhi) Hight-167 cm 5'5" Qualification MBBS Selected as Assistant Commandant Medical Officer in Paramilitary Forces. Currently Junior Resident in Rajeev Gandhi Super Speciality Hospital, New Delhi, Salary 1 Lakh (Approx), **Manglik Very Less**

14. **अभिभावक–**श्री राजेन्द्र जायसवाल, 3098 व्यंकटेश विहार, एयरपोर्ट रोड, इंदौर फोन न.–9617010844, 8982899771
पुत्री–साक्षी जायसवाल (मांगलिक) जन्म–4-2-1993, (4.25 PM, इंदौर) 5'2', B.E (Mechanical), L and T, बडोदरा (गुजरात) में कार्यरत पैकेज 7.5 लाख, स्मार्ट आकर्षक व्यक्तित्व।

15. **अभिभावक :** श्रीमती तनु जायसवाल (व्यवसाय), 276 ग्राउंड फ्लोर–HIG Flat No. 3, Plot No. 276, ज्ञानदर्शन सोसायटी ज्ञानखंड-I, इंदिरापुरम गाजियाबाद–201014, (M) 9971445325, 9989109200, Email : rhljaiswal 26@gmail.com.
पुत्र : राहुल जायसवाल (मांगलिक), 26-12-1993, (Delhi, 9AM), 6', बी.कॉम, Manager, Just Dial, पैकेज 5 लाख रुपये।

16. **अभिभावक–**अखिलेश जायसवाल, जायसवाल फार्मा 171ए, ठेठरी बाजार चौक, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश, फोन न.–9532252230, 9911515253
पुत्री–सुष्मिता जायसवाल, **(मांगलिक),** जन्मतिथि–11-11-1992, (सुल्तानपुर) 5'3', fair, M.Tech (E.C.) Gold Medalist, Ph.D Ist Year M.N.N.IT. Allahabad U.P.

सामान्य वर्ग

1. **अभिभावकः श्री अरुण कुमार गुप्ता,** H.No. 893 वृंदावन कालोनी वार्ड नं. 12, चंधासी P.O. Chandhasi, मुगल सराय, जि. चंदौली (उ.प्र.)–232101 M : 9450181498
पुत्री– मीनाक्षी, 5'1" सुन्दर, आकर्षक डिप्लोमा (CS), B.Tech. (CS from Meerut), 20-04-1993, (09.12(AM) Patna, colour fair

2. **अभिभावक :** श्री अरुण कुमार चौधरी, कोशी एक्सरे क्लिनिक, एम.जी.मार्ग., खगड़िया विहार–851204 M : 9431417963
पुत्री : श्वेता कुमारी, 5'5" जन्म 9-9-1988, (समस्तीपुर) B.C.A, गोरी स्लिम, PNB रायपुर में Probationary Officer.

3. **अभिभावक-** अशोक कुमार साई, **पताः** साईसवाल (बैंक कर्मचारी) RZ-6 मानसकुंज, उत्तम नगर नई दिल्ली, M.-8860281021, 9268075028
पुत्री- अभिलाषा, 5'7" 4-12-1986 (गुरगाँव) रंग साफ, B.Com. from Delhi, MBA from Rohtak, service in Banking.
पुत्री- नुपूर (मांगलिक), 5'4" 11-10-1991 (5:00 PM Delhi) compexion very fiar, M.A. in Art and craft accupation : Teacher

4. **अभिभावक :** श्री अनिल कुमार जायसवाल, नन्दगंज मार्कट, नंदगंज, जिला–गाजीपुर (उ.प्र.) पिन–233302 M : 9453484040, 8303517704
पुत्र : शरद कुमार जायसवाल, B.A, MA (Economics), M.Ed, Net, UPTET, CTET, CCC, 6'2" जन्म 27-11-1988 (8:40 PM), Revenue sub inspector (उ. प्र. सरकार)
पुत्री : जया जायसवाल, 28 वर्ष, 5'2" साफ रंग. सुंदर, MA, MEd, Net, TET, CTET, बस्ती (उ.प्र.) में Village Development Officer.

5. **अभिभावक :** श्री अनिल कु. जायसवाल 160, अनूप नगर रोठा रोड, मेरठ–250001 (उ.प्र.) M : 9219613863
पुत्र : अंकित जायसवाल, 4-11-1993 (9.25 PM मेरठ, 5'6", गेहुँआ, B. Com., ट्रांसपोर्ट व्यवसाय, वार्षिक आय 4 लाख स्मार्ट व्यक्तित्व।

6. **अभिभावक :** श्री ओमप्रकाश जायसवाल (चावल के थोक व्यवसायी) D-II, 397-398, पहली मंजिल, Sector-7 रोहिणी, दिल्ली–110085 M : 9899424368, 8178845541
पुत्र : सुधीर कुमार जायसवाल, 22-2-1988 (7.42 AM सिलीगुड़ी, प. बंगाल), 5'7", IDI MIA, नोएडा में Sr. Software Enginner, B.Tech, साफ, स्मार्ट व्यक्तित्व, Email : Sudhirjustme@gmail.com.

7. **अभिभावक–**श्री अनिल कुमार जायसवाल, (Retd. Supdt. Archeological Survey of India)–74/22, Shipra Path, Mansarovar, Jaipur फोन न.–0759792110, 09929660874
पुत्र–आकाश जायसवाल, जन्मतिथि–5-11-1988, (4.35 AM देहरादून) 5'10', M.Com, MBA (IBS) Credit manager, Barclays Bank) पैकेज 17.5 लाख, शिक्षित परिवार, स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

9. **अभिभावक–**अनिल कुमार जायसवाल, E-108, VDA कालोनी, वाराणसी (उप्र.), फोन न.–9450536625, 8318298828
पुत्री–मोनिका जायसवाल, जन्मतिथि–27-8-1992, 5'4', गेहुआ, B.Tech, नोएडा में Account कार्यरत।

10. **अभिभावकः श्री बिंदु चौधरी, म.न.** 276, सोनिया गांधी कैंप, समलका रंगपुरी नई दिल्ली–110037, M : 7838462147
पुत्री- पूजा, 5'3" 7-12-1996 (सीतामढ़ी) 12वीं पास, खजान इंस्ट्रीट्यूट से BC उत्तीर्ण की साफ गेहुआ रंग, स्मार्ट आकर्षक।

11. **अभिभावक :** स्व. श्री बिहारी लाल जायसवाल दिल्ली दरवाजे बाहर,दारू गोदाम के पास, कोठिया पावी मोहल्ला, अलवर (राजस्थान) M : 7014453944, 9667152823, 9309232213 **पुत्र (1) :** टिंकू, 10-12-1994, 12th, ITI, self Business. **पुत्र (2) :** पिंकू 6-6-1996, Diploma in mechanical, self business.

12. **अभिभावकः** भोलानाथ जायसवाल-सरकारी नौकरी, गोत्र- कश्यप, पताः एफ-83,कुंवर सिंह नगर, नागलोई, दिल्ली-110041, फोन नं. 09968936545
पुत्री- सुमन, जन्मतिथि-01-06-1993, साफ रंग, 5 फिट 4 इंच, शिक्षा-बी.काम., जे.बी.टी.(टीचर ट्रेनिंग कोर्स), कार्यरत कम्प्युटर आपरेटर, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली, प्रतिमाह वेतन-15000/ रू0

13. **अभिभावक-** बबन प्रसाद, हनुमान नगर, पटना (बिहार)-20 M.-9835871038, 9334827500
पुत्र- विकास कुमार,5'8" 32 वर्ष Compaxion, prefrance Govt. Officer deployed in UP

14. **अभिभावक-** भगवान सिंह जायसवाल (बिजनेस मेन) M.-9810103658, 8826371371
पुत्र- निशान्त जायसवाल,5'7" 28-1-1990 (00:4am Delhi) wheatish brown, Qualification B.Tech E and C from BBDIT Ghaziabad, Sr. Accountant (Ministry of Agriculture, Govt of India)

16. **अभिभावक :** श्री सी.पी. गुप्ता (Sr. Advocate), 193, कल्पना नगर, सिविल लाइन्स, इटावा-20600। प्रतिष्ठित परिवार (M) 9410485758, 7417715565
पुत्री : डॉ. निधि गुप्ता, जन्म-24-01-1980, (16.20 P.M. इटावा उ.प्र.), MBBS, DOMS, (GRMC ग्वालियर), Pursing MD in Microbiology (BHU), 5 फुट 1 इंच, स्लिम, सुन्दर, गौरवर्ण, आकर्षक, स्मार्ट व्यक्तित्व। पेंटिंग पठन-पाठन, पाक-कला एवं गृह-सज्जा का शौक। चार वर्ष तक Rural PGI, सैफई इटावा के नेत्र विभाग में Sr. Resident, परिवार में अन्य सदस्य सिविल जज अथवा मेडिकल व्यवसाय में संलग्न।

17. **अभिभावकः श्रीमती चंद्रकांता,** 5 जॉली कॉम्प्लेक्स अभियन्ता नगर, नाशिक (महाराष्ट्र)-422008 M. 9871262622, 8983574660
पुत्र- गौरव, 29-04-1982 (04: 16P.M. दिल्ली), 5'8", B.C.A. Deals in Finance and Share Market, Rs 30,000/-P.M. शिक्षक, बड़ी बहिन कनाडा निवासी।

18. **अभिभावक-**श्री देवेन्द्र जायसवाल, पता-D-219 आनंद विहार, दिल्ली-110092, फोन न.-9212725140, 9555541050
भतीजी-मेघा जायसवाल, जन्मतिथि-16-12-1984, 5'2", MA (ECO), B.Ed, Pursuing Ph.D. स्मार्ट fair, Hobbies : Reading, teaching.

19. **अभिभावक-**श्री फुलेन्द्र चौधरी, सम्पर्क डॉ. सत्यदेव गुप्ता जायसवाल L-1/56, श्री कृष्ण पुरी, बोरिंग रोड, पटना-800001 (बिहार) M-9308741023
पुत्री-प्रियंका चौधरी, B.A., 5'6" 4-9-1988 अति सुन्दर गोरी, स्लिम, दिल्ली पब्लिक स्कूल में टीचर, पति की अल्प बीमारी के कारण मृत्यु दो पुत्र क्रमशः 9-10 वर्ष बच्चों को नाना-नानी रखने को तैयार, योग्य संस्कारी वर अपेक्षित विधुर भी मान्य।

20. **Father's-** Shri G.L. Chouksey, Retd. From Forest dept., M.P. Govt., Bhopal, 43 Prakash Nagar, Ayodhya Bypass road, Piplani, Bhopal-462022 Ph. 7987142364, 9981770414.
Daughter : MEENAL CHOUKSEY, 09-06-1985 (Time 00.10), Prakash Nagar, Bhopal, M.P., Height-5'.3", Fair, B.Sc., MBA (Finance), PGDCA, Manager, F.C.I. (Govt. of India), West Zone, M.P. Region, 10 Lakhs P.A.

21. **अभिभावक-** गंगा राम जायसवाल, **पताः** Station Road, Purani Basti, Near purani Thana Basti, District Basti (UP)-272002 M.-9044015597, 8604262492
पुत्र- विशाल जायसवाल,5'7" 15-1-1987 Qualification B.A. profession; SBI Life Insurance Advisior + SBI ATM Guard, Income 2.5 Lac.

22. **Father-** Late Gopal ji Jaiswal, Mother Kamla Jaiswal, 334, Salikganj Ki Mandi, Muthiganj, M. 8957292339, 8851658998
Daughter : Ritika Jaiswal, DOB 18/11/1991, Hight-5'3" Post Graduation (M.A.)

23. **Fathers:** Girvar Singh Rai- (Railway Contractor) In front of Jamuna bai Temple, 70 Colonypura, Ghasmandi, Gwalior (M.P.) 474003; Mob. 9329092587
Daughter: Neha Rai, DOB: 27.01.1995 (5:00 AM) Place of Birth: Ashok Nagar, Madhya Pradesh, Complexion: Fair Height: 5'7"
Qualification: LL.B, B.A. Programme 12 th Standard (M.P. Board) Faculty of Law (University of Delhi) Lady Shri Ram College for Women (University of Delhi)

24. **अभिभावक :** श्री हरि प्रकाश जायसवाल म.न. 1292/28 फ्रेन्डस कॉलोनी, सिद्धेश्वर मंदिर के पास, झांसी (उ.प्र.) -282001 M : 07460000268, 09839419372
पुत्र : विकास जायसवाल, 29 वर्ष, कद 5'8" . B.Arch. Master in Architecture (N.I.T. Bhopal) राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत **आय 1 लाख- रु. प्रतिमाह।**

25. **अभिभावक-** श्री हरीलाल गुप्ता (व्यवसायी) A-416, शास्त्री नगर, दिल्ली-110052 M.-9810129465, Email : spacocable@yahoo.co.in
पुत्री- ज्योति, 5'3" 3-08-1990 (06.35 PM Delhi) सुन्दर C.A., B.Com (Hons.) D.U. Asstt. Manager (A/CS), Jubliant Consumer

26. **अभिभावक :** श्री इंदकुमार जायसवाल (B.Tech, MBA)] Asian Paints Ltd, Mumbai में वरिष्ठ पद पर कार्यरत 402 धनशिला अहिंसा मार्ग, खार (पश्चिम) मुंबई-400-052 M. 09820215011/09820194569 (मूल निवास-इलाहाबाद)
पुत्री : स्मृति, 8-9-1985 B.M.S. (Bachelor of Management Science), M.Com, CFA (Leve l I & II), MBA (from Mumbai), 5'2", स्लिम सुंदर आकर्षक मुंबई स्थित बैंक ऑफ अमेरिका में कार्यरत, अच्छा वेतन।

27. **अभिभावक :** श्री जवाहर लाल जायसवाल IP/B, Ist floor, हुमायूंपुर, S.J. Enclave, New Delhi-110029, M : 09650508397

पुत्र : राहुल कुमार, MBA, Advertising & Travel Co. में कार्यरत 26 वर्ष, स्वस्थ, गोरा, आकर्षक, स्वयं का फ्लैट, अच्छी आय।

28. अभिभावक– श्री कृष्णा प्रसाद एवं सविता चौधरी, F124, पॉडव नगर गली न० 6, दिल्ली– 110092, मो० 919560444808 (सुलतानगंज (बिहार) के रहने वाले हैं।)

पुत्री (1) निक्की, उम्र 31 वर्ष, उजली गोरी 5'10" कम्प्यूटर ग्राफिक्स में कैरियर, बी.ए (अर्थशास्त्र) प्राइवेट कंपनी दिल्ली में नौकरी, पाक कला में प्रवीण।

(2) सोनी, उम्र 28 वर्ष, सुन्दर, गोरी 5'5" कम्प्यूटर ग्राफिक्स की जानकारी। बी.ए. (अर्थशास्त्र) दिल्ली में प्राइवेट नौकरी।

29. अभिभावक– काशी प्रसाद जायसवाल, **पता:** D35/334, जगाम्बरी, वाराणसी–221001 M.-9415369550, 0542-2451627

पुत्री– शिखा जायसवाल, 5'2" 12–2–1988, fair, PHD (Pursing) Textile Design B.H.U. Varanasi.

30. अभिभावक : लक्ष्मण सिंह बेनीवाल, शिक्षा विभाग में कार्यरत, 6/231, NEB Exension, Preet Vihar Transport nagar, Alwar (Rajasthan)-301001, M : 8766022928, 9351653004. 8890593175

पुत्री : निशा रानी, MA (Political science and English and B.Ed) 5'3" जन्म 5–7–1990 (11:15 AM) अलवर, गोरा, प्राइवेट स्कूल में कार्यरत।

31. अभिभावक : श्री मनोज कुमार जायसवाल, B-33, विमला टावर, न्यू पुनाई चाक (नजदीक राजवंशी नगर SBI, बेली रोड, पटना–800023 Ph : 09472021184, 9570365020, 9868721763

भांजी : Simpee Jaiswal, DOB 4th September, 1991 (11:55 A.M. Forbesganj, Bihar) Height : 5'.4'' Complexion : Wheatish, ICMAI (CMA), Profession Banker (Credit Officer in Bank of Baroda)

32. अभिभावक : श्रीमती माला जायसवाल 214/184-A, नई बस्ती, बाराखम्बा, कीडगंज, इलाहाबाद (उ.प्र.), (M) 8174867157

पुत्री : सौम्या जायसवाल, M.Sc. (Biochemistry) M.Ed, 12-7-1990 इलाहाबाद (3.20A.M.), 5'3", प्रतापगढ़ (उ.प्र. सरकार), अपर प्राइमरी स्कूल में शिक्षिका, पैकेज 5 लाख रुपये सुंदर, आकर्षक, स्मार्ट।

33. अभिभावक– मुकेश कुमार जायसवाल, स्टेट बैंक वाली गली, मकान नं. 1597, कच्ची मंडी कोसी कलामथुरा–281403 M.-8533800619, 7906018745

पुत्र– रोहित जायसवाल, 6'1" 27–5–1988 (8:25 PM Kosikalan) B.A. Rajasthan University Exam by D.G.C.A. (all cleared) CPL and PPL, Licence Business Lazy Mozo Back Peeker Foreigners Guest House at Civil Line Jaipur (Rajasthan)

34. अभिभावक : श्रीमती मीना देवी जायसवाल, D. 14/88, टेढ़ी नीम, दशाश्वमेघ, वाराणसी (उ.प्र.) M 9935470506

पुत्र– सूरज कुमार जायसवाल 15–07–1989 (6.20 P.M. वाराणसी) 5' 5", स्मार्ट, आकर्षक ग्रेज्युएट, B.H.U में Music Teacher तथा सितार और तबला आदि वाद्य उपकरणों के व्यापारी, स्वयं का मकान।

35. अभिभावक–श्री मोहनीश जायसवाल, (व्यवसायी), फोन न. –9654778803

भाई–श्री प्रशान्त जायसवाल, 26–6–1990, (10.33 AM) 5'7', B.Com, spectacle frames wholeseller, स्मार्ट, पैकेज 1 लाख प्रति माह।

36. अभिभावक : श्री नारायण सोमवंशी, सरकारी विभाग में कार्यरत, जयपुर रोड, उमरैण, जिला अलवर राजस्थान–301001, M : 9887607300, 9694178713, 7734936915

पुत्र : राहुल सोमवंशी, BBA and MBA 5'6" 27 वर्ष Samsung में samsung express consuitant के पद पर कार्यरत है। पैकेज 3.5 LPA.

37. अभिभावक–नीरव जायसवाल (एडवोकेट) गुडगांव हरियाणा फोन न.–9810891524

पुत्री–तृप्ति जायसवाल, जन्मतिथि–22–10–1991, 8:10 रात्रि दिल्ली 5', fair, PHD (psychology) from punjab university Chandigarh, UGC NET qualified.

38. अभिभावक : डॉ. ओंकार नाथ जायसवाल, दिलदार नगर बाजार, गाजीपुर, उ.प्र.–232326, M- 9506793062

पुत्री : प्रिया जायसवाल, 25-6-1988, (M.A. & ITI computer application), 5', गोरी

39. अभिभावक : श्री ओम प्रकाश चौकसे (किसान) एवं श्रीमती आभा चौकसे, करेली, नरसिंहपुर (म.प्र.) M : 9826611582

पुत्री : वसुन्धरा चौकसे, 17.8.1988ए (करेली म.प्र. 6.03 AM) 5'7", B.E. (IT) from LNCT Bhopal. Rank Asstt. इंडियन कोस्ट गार्ड में Commandant, Air station चेन्नई में Logistics office के पद पर तैनात 3–5 वर्ष की service seriority.

40. अभिभावक : श्री ओम प्रकाश जायसवाल Prop. Navjoyti Enterprises, ब्लॉक UP, प्लाट नं. 55 प्रथम मंजिल पीतमपुरा, दिल्ली–110034, M : 9810562034 Email : rahul.regard@gmail.com.

पुत्र (1) : राहुल, 02-01-1989, (5.35,pm कोलकाता), 5'7" गौरवर्ण, स्मार्ट, MBA, स्वयं का व्यवसाय (Electrical Accessories)

पुत्र (2) : विनय, 26-05-1990, (4.17,pm दिल्ली) MCA, 5'8", MNC में Software Engineer, अच्छा पैकेज, गौरवर्ण, स्मार्ट, आकर्षक।

पुत्री (1) : नमिता, 24-08-1992, (8.15,am कोलकात), 5'2", B.Tech (MDU University), MNC में Software Engineer, अच्छा पैकेज गौरवर्ण, स्मार्ट, आकर्षक।

41. अभिभावक : श्री प्रदीप कुमार जायसवाल (AAO, U.P. Govt), 4 निर्माण निगम कालोनी, तिकोना पार्क, जामिया नगर, नई दिल्ली–110025, M : 9971143601

पुत्र : सिद्धार्थ जायसवाल, 5'10", जन्म 8–4–89, B.Tech (Electronics & Communication), नेटवर्क इंजीनियर HCL, ग्रेटर नोएडा, पैकेज 6 लाख रु., शुद्ध शाकाहारी, साफ, आकर्षक, स्मार्ट व्यक्तित्व।

42. अभिभावक : प्रदीप कुमार जायसवाल (Business man),

मकान नं. 1076, Ward No. 3 कैनाल रोड, हर्वटपुर (देहरादून)-248142, M : 91-7017792611, 91-9412150835
पुत्री : कनिका जायसवाल, 5'2" जन्म 16-7-1990, M.Com, वर्तमान में Del. Ed. कर रही है तथा विद्यालय में पढ़ा भी रही है। तथा बैंक की तैयारी भी कर रही है। गोरी, इकहरा वदन, सुन्दर।

43. अभिभावकः प्रमोद कुमार (सुपुत्र डॉ. सत्यदेव गुप्ता) C/o L-1/56 श्री कृष्णपुरी बोरिग रोड, पटना-800001 (बिहार) फोन 9430060645, 9308741023, 0612-2541587
पुत्री-मुदिता 15-3-89, 5'4" B.A. (Hons. Eng.) PGDM, सुंदर, गोरी, आत्मनिर्भर संस्कारी वर अपेक्षित।

44. अभिभावक : श्री प्यारे लाल जायसवाल, (व्यवसायी), 176, मूनगली, गार्डन, साहुकार लाइन, हलद्वानी (नैनीताल) उत्तर प्रदेश
पौत्र : आकाश कुमार, पारिवारिक कारोबार में सलग्न सुंदर, स्वस्थ, स्मार्ट, आकर्षक, 25 वर्ष, B.Tech, जन्म 15-8-1991, (02:42 pm हलद्वानी)।

45. अभिभावक : श्री पी.सी. जायसवाल, 23/47/111 महादेवी भवन, किदवई नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश-211006 Mob. : 0532-2500624, 09415702805, Email: abhishekjaiswal128@gamil.com
पुत्र : अन्शुल जायसवाल 10-04-1987, 5'10" Fair, Slim, Handsome, कॉनवेन्ट एजुकेटेड, B.Tech (Electronics Communication) राष्ट्रीयकृत बैंक में असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत, Civil Services के लिए प्रयासरत।

46. अभिभावकः प्रदीप कुमार जायसवाल, नियर सागर आर्ट, P.O. Kharmanchak, Bhagalpur (Bihar) Pin-812001 फोन-8709162766, 8252924240
Email = rimajaiswal64@gmail.com
पुत्री- रीमा जायसवाल : 30-3-1991, 5'1", रंग- साफ, M.Com, (ACCT) Diploma in Computer Application. Banking. संगीत व पाकशास्त्र की रूचि।

47. अभिभावक : श्री रामलखन जायसवाल (Redt. HAL) क्वा. नं. -13/8 एच.ए.एल. कॉलोनी, रामादेवी, कानपुर-208007 फोन : 09452525520
पुत्री : ऊषा, जन्म 31.5.1982, कद 5'2" गोरी, आकर्षक, स्मार्ट, गृह कार्य में निपुण, शिक्षा-बी.एस.सी., एम.सी.ए., सॉफ्टवेयर इंजीनियर (नोएडा में) पैकेज 5.89 लाख वार्षिक।

48. अभिभावक : श्री रमेश बाबू जायसवाल (Ex-Air India), गौत्र-सौगारा, सी-7/207, यमुना विहार, दिल्ली-110053 (M) 9818970975
पुत्री : शिल्पा जायसवाल 26-11-1995, (7.00 A.M. Delhi) 5'3", B.A. (History Hon.), Doing D.I.E.T. from Gwalior in 2nd year, सुंदर, आकर्षक, स्मार्ट।

49. अभिभावक : श्री राकेश जायसवाल (Own two renowned Hotels at Moga, Real Estate Business, and Rental Income), M : 9316273798, 9888043798
पुत्र : शुभम जायसवाल, B.A, LL.B, Preparing for Judicial, 5'8", 26-1-1991, (3.11PM, मोगा) गोरा, आकर्षक।

50. अभिभावकः श्री राजकुमार जायसवाल (व्यवसायी) 230 Scheme No.-4 राजेन्द्र नगर अवलर-301001 फोन-9950006152, 7240705562
पुत्री- नेहा जायसवाल M.com and pursing B.Ed, 5'4", 14.2.1996, गोरवर्ण, DPS school, Alwar में शिक्षिका

51. अभिभावक : श्री राजेश कुमार, 56/L-I, कृष्णपुरी, साउथ बोरिंग रोड, पटना-800001, M-9234757531, 8521342371.
पुत्रीः मुदिता जायसवाल 15-3-89 5'4", Fair, B.A, PDGM, Comp. Sc., सम्पन्न परिवार अपेक्षित वर, बिहार पटना के समीप और सर्विस या व्यवसाय हो।

52. अभिभावक : श्री राजेन्द्र भरसकले PSU में कार्यरत 29/ III ENG Enclave, GMS रोड, देहरादून-248001 Email : tvarita91@yahoo.co.in M-9410391647, 06000675049, 9410397116.
पुत्री (1) : Tvarita Bharsakle, Dob. 14-9-91 Time 12.15 pm, (Dehradun) 5'3", Fair M.S. (ENT) from Govt. Medical College, Kota MBBS (Bhubaneswar); MS/MD/Medico/IAS/IPS/IFS/ IRS लड़के को वरीयता।

53. अभिभावक : श्री सुरेन्द्र कुमार जायसवाल (Engineer), D-3, Rachna Vihar, Borkute Layout, Narendra Nagar, Nagpur-440015 (M) 09595483195, 09372718546,
Email : skjaiswal5@rediffmail.com
पुत्र : अनुराग जायसवाल, जन्म 28.2.1980, (5'9')] रंग-गेहुँआ, B.Com (Computer Application), Nagpur University, Working as Accountant with M/s GAMON India Ltd., Posted at Mumbai.

54. **अभिभावक :** श्री संतोष कुमार जायसवाल (प्रसिद्ध व्यवसायी) जायसवाल निवास, सोना बाबू का गैरेज, हाजींगंज, पटना सिटी पटना (बिहार) M : 8252518584, (0612)-2616236, Whatsapp : 9835298796
पुत्र : हितेष जायसवाल, 5'8", जन्म 19-9-1989 (पटना), LL.B., B.Com., NSSL लिमिटेड, नागपुर में Asstt. G.M. पैकेज 12 लाख रुपये; वर्तमान पता : 101F, Block 5, रिंग रोड त्रिमूर्ति नगर, नागपुर (महाराष्ट्र), सुंदर, अत्यंत स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व।

55. अभिभावकः सुनील जायसवाल, 221 नूनिया मोहल्ला (चाणक्यपुरी) सदर, मेरठ छावनी-250001(यू.पी.) फोन-7830988678
पुत्र- सौरभ जायसवाल 20-4-1983, (स्थान मेरठ) 5'1", रंग- गेहुंआ, शिक्षा-10वीं पास, व्यवसाय-पान मसाला, आय लगभग 20 हजार मासिक। अपना मकान।

56. अभिभावकः श्री सुरेशचंद जायसवाल, प्रो. रामचंद्र शिव रेवडभ अलवर, मकान नं. 710, आबकारी गोदाम के सामने, ईव्ज चौराहा, मेरठ शहर M. 9837426871, 9808114635
पुत्र- अनुज कुमार जा., (ऐडवोकेट) आयु 32 वर्ष, 5'8", B.Com., LL.B. मेरठ कोर्ट में वकालत कर रहे हैं।

57. अभिभावक : श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल (Iron & Steel Traders), 121/4V/1-B, MM Road. Kolkata-700 054. Mob. : 8013838215, 9903391132, Email : prashantjaiswal@107gmail.com

पुत्री : प्रियंका, 20-8-1991 (कोलकत्ता 8.45 AM) 5'4", गोरी, B.Com., CS।

पुत्र : विवेक, 5-12-1987 (कोलकत्ता 12.50 PM) 5'8", गोरा, B.Com., CA।

58. अभिभावक- राजकुमार वालिया, (Rd. JE) H.No. 473 Dalima Vihar, Rajpura, Dist. Patiala (Pb.)-140401 M.-9888027110

पुत्र- अमित कुमार वालिया, 5'7", 12-8-1975 (05:45am S Nabha Pb) Australia Citizen, Fiar Taxi operator, 40 lac package

59. अभिभावक- राज सिंह, Dilidar wazar Bahar Meenapadi, Tasigh house ke pass, Alwar (Raj.)-301001, M.-9667770001

पुत्र- हर्षराज, 5'7", 5-11-1993 (12:50pm Alwar), Income Rs. 18,000 per month.

60. अभिभावक : Late Sh. Rajeev Jaiswal, Businessman 257, K.k. Street, Chandani Chowk, Delhi–110006, (011)-23928089, 9990315956, 901519997

पुत्रीः Ankita Jaiswal, DOB 16th July, 1993 (Delhi At 5:20 A.m.) Height : 5'.4'' Complexion : Fair Personality : Smart With Pleasing Aim : Lecturer In DU

1. Pursuing B.Ed. (Final Year). 2. M.phil In Sanskrit 3. B.A. (Hons.) And M.A. Sanskrit (Hons.) From Daulat Ram College (DU).

61. अभि०– डा. एस.डी. घनेटवाल (जायसवाल), B-1/8 गांधी पथ चित्रकूट योजना वैशाली नगर जयपुर (राज.) -302021, M 09413900991, 0141-4020789

पुत्र– सिद्धार्थ घनेटवाल (जायसवाल) (15-2-1992 जयपुर, राजस्थान), B.Tech. com. Science Software Engineer in HPE Bangalore 6', अच्छा पैकेज बी.टेक. तथा कार्यरत कन्या अपेक्षित।

62. अभिभावक–श्री सुरेश कुमार जायसवाल (सरकारी सेवा) वार्ड नं. 4, लक्ष्मीबाई मार्ग, खाटी कुंडी चौक, खिलचीपुर जिला-रायगढ़ (म.प्र.) फोन न.–7879161099, 9669401914

पुत्री–आस्था जायसवाल, जन्म–6-12-1992, 26 वर्ष (19.55 खिलचीपुर) 5'6', M.Tech (IT), T.C.S. इंदौर में सेवारत पैकेज 5.6 लाख

63. अभिभावक–श्रीमती शोभा जायसवाल (धर्मपत्नी स्व. हरधन चन्द्र, काकोरोड बस स्टैंड के सामने, जहानाबाद (बिहार)-804408 फोन न.–8083241132, 7050318497

पुत्र–विकास राज, जन्मतिथि–4-4-1996, 5'2", ग्रेज्युएट।

64. अभिभावक– प्रोफेसर डा० टी० एन० चौधरी (रिटायर्ड प्रोफेसर ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट) जवाहर लाल रोड (चैम्बर ऑफ कामर्स के पास) सरैयांगंज, मुजफ्फरपुर (बिहार) 842001 मोबाइल नं०. 9835229883, (0621)-2246105

पुत्र– यशस्वी आलोक 38 वर्ष गोरा 5'7", MBA, MCA एवं M.Tech निदेशक कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एंड टेकनोलाजी। आय 15 लाख प्रतिवर्ष गोरी टेक ग्रेजुएट कन्या अपेक्षित।

पुत्री– डा० रजनी जायसवाल BHMS, MBA गोरी 5'2" HR Manager in MNC नई दिल्ली, 36 वर्ष, पैकेज 10 लाख।

नातिन– मुदिता जायसवाल (पटना निवासी) अत्यंत गोरी सुन्दर 5'5" बी.ए. (इंगलिश) एम.बी.ए. की छात्रा पिता रि० शिक्षक श्री प्रमोद कुमार निवासी L1/56 श्रीकृष्णापुरी, पटना-8001

65. अभिभावकः श्री उमेश जायसवाल 1872 हाउसिंग बोर्ड कालोनी सेक्टर-7 बहादुरगढ़, जिला झज्झर (हरियाणा)-1245707 Ph: 9034826911 मूल निवास गोरखपुर

पुत्री : रुचि जायसवाल, 12-7-1992, (07.17 AM) नांगलोई, दिल्ली 5'2", B.Tech (C.S), MNC में कार्यरत, गेहुंआ, स्मार्ट।

66. अभिभावकः डा. विजय कुमार जायसवाल, D-16/272, रोहिणी, सेक्टर-7, दिल्ली 110086 (**स्थानीय सम्पर्कः** श्री जीतेन्द्र चौधरी (व्यवसाय) 1711-C, मुल्तानी मोहल्ला रानीबाग, दिल्ली-110034. M- 9811231162, 7428970007)

पुत्रीः प्रियंका जायसवाल, जन्म 20-9-1989, (रात्रि 10 बजे) 5'2½", XII वीं पास, कम्पयूटर कोर्स, गृह कार्य दक्ष।

67. अभिभावकः वीरेन्द्र कुमार जायसवाल (बिजनेसमैन), Sumrit Mandal Campus, Jail Road, Tikamanhji, Bhagalpur M.: 943121533, 8969255995

पुत्र- आदित्य जायसवाल, 27-5-1988, (5.15 pm) 5'2", milky white, MBA, Asst. Manager, Canara Bank.

68. अभिभावक–श्रीमती विभा देवी (पत्नी स्व. ध्रुव नारायण प्रसाद गुप्ता) फोन न.–7488196750, 9560290732, 9911515253 (श्री सुनील, मामाजी)

पुत्री–राधा, जन्मतिथि–17-2-1989, (वेतिया पश्चिम चम्पारण) 5'4', fair, B.Sc. (Hons) in Zology.

69. अभिभावक–श्री किशन लाल राय, फोन न.–925056773, 9990252526 Redt. from DDA, Sultan puri, Delhi

पुत्र–संदीप राय, जन्मतिथि–12-7-1990, (दिल्ली) 5'8", B.A. दिल्ली सिविल डिफेंस में जाब, 25,000/- मासिक स्मार्ट, साफ रंग।

70. अभिभावक : Om Praksah Jaiswal, A cropolis flat no. 206, J-block Gothapatna, Odisha. Pincode-751003; Mob : 7750982025; E-mail : ajoytce@gmail.com, ssuniti1286@gmail.com

पुत्रीः Omrita Jaiswal : DOB : 26/10/1990, Time : 7:30 pm, place : Pallahara (Odisha) Height : 5'5", complexion : fair, Education : MSc agriculture (Agronomy) BSc agriculture, Professional details : Working in Odisha govt. in Horticulture department as a Gazetted rank officer posted near Bhubaneshwar.

71. अभिभावक : Chanderkanta 5, Jooly Complex Abhiyanta Nagar, Nashik (Maharastra)-422008, Mob : 9871262622, 8983574660

पुत्रः Gaurav, DOB : 29/4/1982, Time 4:16 PM Delhi, Height : 5'8", Qualification : BCA, professtion ; Deals in finance and share market, Income : Rs 30,000/-pm, Mother Teacher, Elder sister settled in Canada.

72. अभिभावक : Rakesh Prasad Jaiswal () (Retired from Air Force, Maternal Grand Parent - Rajendra Nagar, Patna, Bihar, Mobile No. 9818780624, 9910174532; Email ID - rakesh@basawatech.com

पुत्री: Sakshi Jaiswal: DOB - 18th Sep 1993, Qualification - MA in English, B. Ed, CTET (Part I & II) Cleared. Advanced Diploma in Italian Language. schooling from Air Force Bal Bharati School, Lodhi Road, New Delhi. BA English (Hons) from Delhi University, B. Ed from IP University, Advanced Diploma in Italian Language from Daulat Ram College, DU, MA in English.

73. **Father:** Santosh Jaiswal (Dy. Director, ECS), (Home Town Gorakhpur, U.P.) D-2/10, Phase-I DRDO Township, CV Raman Nagar, Banglore, Karnataka Mob- 9958014369, 9873341668

Son: Rishabh Jaiswal, DOB 16-10-1997, B. Tech. from (BHU) Varanasi, Software Development Salary Package - 12 Lacs /p.a

74. **Father:** Ramesh Chandra Jaiswal,Ganiyari Road, Waidhan, Distc-Singrauli (Mp) - 486886 Phone:- 9425389974 Mob- 9990372173, 7000086095

Daughter: Mansi Jaiswal, DOB 1-1-1994, 5ft 4-Inch, Complexion Fair, B. Tech. from IIT Allahabad, Working as Software Engineer in Microsoft. Salary Package - 18 Lacs /p.a

75. **अभिभावक–**श्री दुर्गाप्रसाद जायसवाल गाजियन कामता प्रसाद जायसवाल दिल्ली फोन न.–8595087547

पुत्री–स्वाति (कमला), जन्मतिथि–29–12–1994, 5'3", सायं 3.25 बजे B.Com Percuing C.A. साफ रंग।

76. **अभिभावक–**श्री शैलेश राज मेवाड़ा, ACB, Office Street, आदिनाथ नगर, टैगोर नगर पाली, राजस्थान मो. न.– 9462998760

पुत्र–मुकेश मेवाडा, जन्मतिथि–28–4–1989, 5'8", सायं 4. 15 बजे, पावी, B.. LLB. साफ रंग।

77. **अभिभावक :** श्री शान्ति लाल डोंगल (मालवीय कलाल) inrcstornd consultent real estate, M : 9826720044, 9826022044 **पुत्र (1) :** शिवम डोंगल, 12-2-1992, 6'1" बुरतानपुर, 8.40 AM, BE and MBA (KJ SINIAR Mumbai) working with ZEE as Manager Mumbai वार्षिक आय 21 लाख। **पुत्र (2) :** शुभम डोंगल seniar software engineer, infoses Pune

78. **अभिभावक :** श्री के.के. जायसवाल व्यवसायी म.न. 2838, सै–15, सोनीपत, हरियाणा M : 9354824454

पुत्र : सिद्धार्थ जायसवाल, 10-9-1990 New Delhi, 6", 10 to 15 वार्षिक आय sale, purchases and aMC's of industries Genset, सुन्दर, पढ़ी लिखी, गृहकार्य में दक्ष कन्या चाहिए।

79. **अभिभावक:** श्री दिनेश कुमार जयसवाल Geology Dept. University of Allahabad, **Mob.** 9452695293, Address- 21 A/1 केसरिया रोड़ चकिया इलाहाबाद,

पूत्री: आयुशी जायसवाल, DOB-24-02-1997, 7:45AM इलाहाबाद, 5'1", B.Com, MBA GB bykgkckn Working as a Enquiry officer, cahspor Microcredit Ltd, Varanasi, Package 5 Lakh/P.A.

80. **अभिभावक:** श्री राधेश्याम जायसवाल, सोती चौराहा, बड़हलगंज, जिला गोरखपुर पिन 273402, **मो.** 9935572972, 8527394426

पुत्र: अतुल कुमार जायसवाल, रंग साफ़, 5'7", जन्म वर्ष 1990, B.Com, M.Com, CA Final, M P में फाइनेंस मैनेजर.

81. **अभिभावक:** Sunil Kumar Gupta-ASC/RPSF; 204/148, Allen Ganj Prayagraj (U.P.) 211002; **Mob.** 7376484177, 8887842502, 9450181498

पुत्र: Siddharth Gupta, B. Tech. C.S., Age: 26 years; Hight:5'4"; Working in NMC, Required Graduate Virgo. Working/ Nonworking.

82. **अभिभावक:** Awadhendra Kumar (Retired from GAIL India Ltd as Dy. Gen. Manager.) Mob. 8826700440, 7081907573 Email ID: anujjaisal.101455@gmail.com Address: A-40, GAIL apartment, sector-62, NOIDA Distt: Gautam Budh Nagar, Uttar Pradesh- 201309

पुत्र: Anuj Jaiswal 29 Years, DOB:15 July 1992, Time:07:30 AM, Place: Allahabad, Uttar Pradesh, Gotra: Kashyap, Height: 5'5" Complexion: Medium, Body Structure: Normal, Educations B. Tech Chemical Engineering. Professions Manager (E3) Brahmaputra cracker and polymer Ltd. Income: INR 1700000 / Year

83. **अभिभावक :** श्री आनन्द कुमार जायसवाल, 28/A, 40 फीट रोड, पटेल नगर, मुगलसराय, चन्दौली, पिन 232101.

मोबाइल न.–7376552127, 7007097405

पुत्र : कौशल जायसवाल 5'10", 29 वर्ष, सुन्दर, स्मार्ट, आकर्षक, ग्रेजुएट, एम.बी.ए. नरसीमुंजी से पत्राचार माध्यम, पैकेज 6 रु. लाख

84. **अभिभावक–**सुरेश शाह Businessman (Proprietor at Shah Electronics, Lajpat Rai Market, Delhi)

मोबाइल न.–9818625007

पुत्र–सिद्धार्थ शाह

जन्मतिथि–04–April–1992, 5'7', Pursuing CFA (Chartered Fianancial Analyst) Graduation : B.Com(Hons.) from B.R. Ambedkar College,University of Delhi, Occupation : Propriator at Fans Manufacturing Business in Moti Nagar, Delhi (Also works in family owned business)

85. **अभिभावक :** C.P. Antal (रिटार्यड Escutive Engg. (PWD) President Esstt. New Delhi, B-3/728 एकता गार्डन, पटपड गंज, दिल्ली

मोबाइल न.–9760666029

भतीजे : लव कर्णवाल, कुश कर्णवाल जन्मतिथि 10/12/93 AM, 5'7", B.Com.+Diploma in Engineering, Working Service Engineering ICU Ventilater

86. **अभिभावक–रंजित रतन, व्यवसाय, नई दिल्ली**
पुत्री: प्रियंका जायसवाल, उम्र 31 वर्ष, लम्बाई- 5.3, जन्म स्थान- दिल्ली, रंग- गोरा, अति सुन्दर, शिक्षा-बी.सी.ए, प्राईवेट कम्पनी में कार्यरत। मोबाइल 8920753012, 8010202030

87. **अभिभावकः** Anil Kumar Jaiswal- Electronic Engineer, 122A/11, Gautam Nagar, New Delhi-110049, Mob. 98106 01579;E-Mail:jkanil@hotmail.com
पुत्रीः Mayuri Jaiswal, B. Tech. Bio-Technology, DOB. 13-06-1993, Time: 01:47 AM; Place: Bareilly; Height: 5' 6"; Deputy Manager in reputed company of Noida.

दिल्ली स्थित प्रसिद्ध NIFT (National Institute of Fashion Technology) से 4 वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के माध्यम से Leather Fashion Technology में दक्षता प्राप्त 24 वर्षीय (13-2-1997) ग्रेज्युएट सुन्दर गौरवर्ण, सुशील सुयोग्य स्मार्ट कन्या के लिये प्रतिष्ठित परिवार के सुशिक्षित, सुस्थापित योग्य वर की आवश्यकता है। कृपया सम्पर्क करें: दिल्ली M-9013262811

Looking for a bride from reputed family for my son MBBS Doctor, DOB 25-09-94, Fair complexion, Height 5'11", attractive personality Employed with Delhi Govt., Jail Hospital in Delhi Contact No. 8527470610, 8447959639 Dr. Nikank Jaiswal (Brother) Rohini, Delhi

तलाक शुदा (Divorces'sr), विधवा (Widow)

1. **अभिभावक-** श्री आनन्द स्वरूप जायसवाल, 10/26, सेक्टर-3, राजेन्द्र नगर साहिबाबाद 201005 (गाजियाबाद) उ.प्र., M.- 9871262622
पुत्र- उत्तम कुमार, 35 वर्ष, **तलाकशुदा,** कोई संतान नहीं है, जन्म 23-07-1977 (मथुरा, 10.10 P.M)
2. **अभिभावक :** श्री श्यामसुंदर जायसवाल, ठाकुर विलेज, कांदिवली (East) Ph 400101
पुत्र : Divorcee 38 वर्ष, 5'8" सुन्दर, स्लिम, स्मार्ट, आकर्षक, प्रतिभाशाली, कांवेंट प्रशिक्षित, B.Com, LL.B. व्यवसाय में सुस्थापित, **विवाह के बहुत थोड़े समय पश्चात ठोस कारणों से अलगाव हो गया।** सुन्दर, शिक्षित अच्छे परिवार की कन्या अपेक्षित। विवरण प्रेषित करें E-mail : vivah6@hotmail.com
3. **अभिभावक :** श्री राजकुमार वालिया (Retd. Enger), C/o अनुज कर्णवाल, लेन नं. 3, म. न. 45(3/45), सहस्रधारा रोड, एकांत विहार, देहरादून (उत्तराखंड)-248001 M-9888027110, 7055866901
पुत्र : अमित कुमार, (NRI Divorce), 12-8-1975, (40 वर्ष), (नाभा- पंजाब 04:45AM) 5'7", आस्टेलियाई नागरिक, Fair टैक्सी आपरेटर का स्वयं का व्यवसाय। 40 लाख रुपये पकेज।
4. **अभिभावक-** सुरेश चन्द्र जायसवसाल, Jaiswal Insitutute of Classes RK गार्डन, रामपुर रोड़, जहांरमल पेट्रोल पम्प के पीछे, हलद्वानी (नैनीताल) उतराखण्ड।
पुत्र- नीरज कुमार (तलाकशुदा) 39 वर्ष, सुंदर, स्मार्ट, आकर्षक, शाकाहारी, व धार्मिक स्वभाव, निजी आवास, B.Com, M.Com, CA, CS, ICWA की कोचिंग क्लासेस, लगभग 10 वर्ष का पुत्र साथ में रहता है, M.- 9719738295
5. **अभिभावक :** स्व0 रमेश सिंह वर्मा, H.No. 12, आनंद गार्डन, राजेन्द्र पार्क पुलिस स्टेशन के पास, रेलवे स्टेशन के पास गुड़गांव-122001, M : 9136760393
पुत्र : राकेश सिंह **(तलाकशुदा)**, 34 वर्ष, मैट्रिक पास, 5'5", स्वस्थ, गेहुआ रंग, अपना मकान, अपनी किराने की दुकान।
6. **अभिभावक-**श्री शिव चरण कुमार c/o जयभारत पाइप्स स्टोर, हनुमान रोड, शामली-247776 (उ.प्र.) मो. 09412867590
पुत्री (तलाकशुदा)-गरिमा कर्णवाल, 12-9-82, (शामली, 4:10 pm) 5'5", B.SC, MCA, MNC, गुडगांव में कार्यरत।
8. **अभिभावक :** श्री अजय कुमार जायसवाल H.No. 485 मेसर्स आयुष फ्लोर मिल्स पोस्ट घोड़ासहन जिला पूर्वी चम्पारण (बिहार)-845303
पुत्री : अर्पिता जायसवाल (तलाकशुदा), 32, वर्ष 5'5", रंग गोरा सुंदर सुशील ग्रेजुएट मानसिक तनाव के कारण संबंध विच्छेद सुंदर शिक्षित परिवार, संतान रहित वर अपेक्षित। Email: Subu4u87@gmail.com, Mob. No. 9560356897
9. **अभिभावक :** श्री रामचन्द्र चौधरी, (Acctt, Hotel Midway), A-1/231, सेक्टर-4, रोहिणी, दिल्ली-110085, M-9211098672, Email : dchoudhary90@gmail.com
पुत्री : ज्योति चौधरी **(तलाकशुदा)**, PGDFT, M.Com (Du), Adriel High School, Delhi में शिक्षिका, जन्म 12-1-1988, 5'4" वेतन 15000/- प्रतिमाह, अन्य शिक्षेतर गतिविधियों में सक्रिय भाग।
10. **अभिभावकः श्रीमती मीना जायसवाल,** (W/o स्व. राजेन्द्र जायसवाल) संस्कृति अपार्टमेंट Upper Ground Floor, 4, Plot No. 225, Niti Khand-I, Indirapuram संस्कृति रेंजीडेंसी गाजियाबाद-201010 (यू.पी.) फोन-8448219160, 9415132661
पुत्री- सुमन (तलाकशुदा) 27-08-1988 (वाराणसी, 3 AM), 29 वर्ष, 5'3", साफ रंग, एम.ए. (इग्लिश)।
11. **अभिभावकः** Sh. Y.P. Ahluwalia, 109 Nimri Colony Ashok Vihar Phase-IV Delhi-110052, M : 9868704809
पुत्र- Aman Walia, (7th Ocober 1974,) Govt Service in M.C.D. as Astt Sanitary Inspector (Pure Vegitarian) **तलाकशुदा,** Height 5'8", fair, salary 50,000 + स्मार्ट।
12. **अभिभावकः श्रीमती सम्पूरन जायसवाल,** (W/o स्व. सुरेश कुमार जायसवाल) G-194-195, जहांगीर पुरी, दिल्ली-33 फोन-9873809288, 9684750486
पुत्री- अंजू जा. (तलाकशुदा कोई बच्चा नहीं) 28-07-1979 (दिल्ली, 7 AM), 5'3", M.B.A., गेहूंआ रंग, प्राइवेट सर्विस 15,000/- मासिक।
13. **अभिभावकः रिटायर्ड इंजीनियर वेस्टर्न रेलवे, Pelican-15, Aakriti Eco city, Bhopal-462039 7666933311; sjaiswal69@yahoo.co.in**
सुनील जायसवाल (तलाकशुदा), 23-7-1969, 6'1", complexion very fair, MBA (Finance) from Institute for Technology and Management, Mumbai, BE(CS) from Nagpur University. Annual Income 25 lacs to Rs. 30 lacks per annum.
14. **अभिभावकः डा. शीतल पी. जायसवाल,** (Chief Excutive & President Mehta Group of Campanies, 2/92, Liberty Grandionagar, Ghatkopar (E) Mumbai-400077, M.- 7758970403, 9869461650, Email: krs3ram@gmail.com
पुत्र- संदीप जायसवाल (तलाकशुदा) 2-08-1972 (वाराणसी, युपी, 5'11", B.E. (Production), MS(USA) Fair & Handsome, AS (Applied Science, USA) presently working at US Multinational in Mumbai, package 48 Lac p/a.

जायसवाल जागृति के पदाधिकारी (2021-2023)

डॉ अशोक चौधरी (अध्यक्ष): 9810056923

श्री बृजमोहन जायसवाल (महासचिव) : (M) 9868241044

श्री पंकज जायसवाल (कोषाध्यक्ष) : (M) 9818426123

जायसवाल जागृति संस्था नीति निर्धारण/प्रबन्ध समिति

श्री पन्नालाल जायसवाल : 8882828808

श्री कृष्णदास चौधरी : 9868801751

श्री कैलाशनाथ गुप्त : (M) 8882019312

श्री अशोक कुमार जायसवाल : (M) 9818581776

श्री नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल (M) 9582793033

व्यवस्था एवं सहयोग

श्री बृजमोहन जायसवाल (प्रत्रिका प्रेषण प्रभारी) 9868241044

श्री हरिशंकर जायसवाल (छायाकार) : (M) 9811131914

श्री शीतल प्रसाद जायसवाल (आम व्यवस्था): (M) 7827621475

श्री अजय जायसवाल (Website + संयोजक युवा मंच): (M) 9990372173 (M) 9818389050

महत्त्वपूर्ण सूचना (1)
'जायसवाल जागृति' सदस्यता-शुल्क

सदस्यता शुल्क की संशोधित दरें इस प्रकार हैं:

संरक्षक सदस्य	: 11,000/- रु. (परिचय रंगीन फोटो सहित)
अधिष्ठाता सदस्य	: 5,100/- रु. (विस्तृत परिचय फोटो सहित)
सम्मानित सदस्य	: 2,500/-रु. (संक्षिप्त परिचय फोटो सहित)
आजीवन सदस्य	: 1500/- रु. (7 वर्ष के लिए)

विज्ञापन-दरें

आवरण (कवर) चौथा पृष्ठ	: 5,100/- रु.
आवरण (कवर) द्वितीय पृष्ठ (संरक्षक)	: 11,000/- रु.
आवरण (कवर) तृतीय पृष्ठ	: 3,000/- रु.
विशेष रंगीन पृष्ठ	: 2,500/- रु.
साधारण पृष्ठ	: 1,500/- रु.
साधारण आधा पृष्ठ	: 750/- रु.
साधारण चौथाई पृष्ठ	: 400/- रु.

ध्यानाकर्षण : वार्षिक सदस्यता पूर्णतः समाप्त हो गई है। सदस्यगण कृपया 1500/- रु. का शुल्क पत्र प्रेषित करके आजीवन सदस्य बन जाएं, अन्यथा उनकी सदस्यता स्वयमेव समाप्त हो गई है। नए पोस्टल नियमों के अनुसार पते पर पिनकोड लिखना अनिवार्य कर दिया गया हैं। ध्यान रखें। जिन सदस्यों को हमारे प्रामाणिक प्रयासों के बावजूद डाक से पत्रिका नहीं मिल पाती है, वे कृपया एक वर्ष का 200 रुपये का अग्रिम कोरियर-शुल्क प्रेषित करके कोरियर से पत्रिका मंगा सकते है। राशि हमारे कोषाध्यक्ष के निम्नलिखित पते पर प्रेषित की जा सकती है।

महत्वपूर्ण सूचना (2)
जायसवाल जागृति वेबसाइट

Jaiswal Jagriti Has Launched It's Own Website

कम्प्यूटर क्रान्ति एवं सूचना-विस्फोट Computer Revolution & Information Explosion के इस युग के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना किसी भी जीवन्त संस्था के लिए अवश्यम्भावी हो गया है। फलतः स्वजाति बंधुओं के लाभार्थ www.jaiswaljagriti.com नामक वेबसाइट का शुभारंभ किया गया है। हमारा Email; jaiswaljagrity@gmail.com है। आप इससे सम्बन्धित किसी भी जानकारी के लिए हमारे युवा मंच के सचिव, तथा वेबसाइट प्रबंधक श्री अजय कुमार जायसवाल *(Sr. Software Engineer)* से उनके Email:ajayjaiswal.india@gmail.com तथा मो. न. 9990372173 पर भी सम्पर्क कर सकते हैं।

बन्धुवर, समाज के हर तबके के लोगों को अपने लड़के-लड़कियों के लिए योग्य सम्बन्धों के चयन में कुछ न कुछ कठिनाइयाँ तो अवश्य पेश आती हैं, चाहे उसका सामाजिक अथवा आर्थिक स्तर कुछ भी हो। अतः अब आपकी सुविधा के लिए आप हमारे वेबसाइट में आपके विवाह योग्य लड़के-लड़कियों का फोटो सहित विवरण प्रकाशित करा सकते हैं। इसके लिए फिलहाल मात्र 500 रु (पांच सौ रुपये) का शुल्क रखा गया है। आप शुल्क की यह राशि निम्नलिखित दो में से किसी भी एक पते पर डिमांड ड्राफ्ट / चेक या मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते है।

आप अपनी राशि हमारे **AXIS Bank** के **A/C no. 015010100247337, IFSC-UTIB-0000015** में भी सीधे जमा करा सकते हैं। किंतु इसकी रसीद अथवा इसकी फोटोप्रति हमारे पास निम्नलिखित में से किसी एक पते पर अवश्य भेंजें, अन्यथा यह पता लगाना मुश्किल होगा कि यह राशि किसने प्रेषित की है।

टाइपसेटिंग : शुभम् ग्राफिक्स : 9811021617
Email : shubhamprabhas@gmail.com

सम्पादकीय पत्र व्यवहार
नर्बदेश्वर प्रसाद जायसवाल
विश्वनाथ भवन, बी-36, सैक्टर 23, नौएडा-201301
मोबाइल नं. 9582793033

कोषाध्यक्ष, जायसवाल जागृति
पंकज जायसवाल
17-डी, एम आई जी, डी.डी.ए. फ्लैटस्,
गुलाबी बाग, नई दिल्ली-110007
दूरभाष: 011-41687467 मोबाइल : 9818426123